बीकानेर की साहित्यिक सस्थाएं
और
उनकी हिन्दी को देन

- लेखक -
गोपाल नारायण व्यास

मूल्य
रु १२.५०

- प्रकाशक -
श्री गणेश शक्ति प्रकाशन, बीकानेर

मुद्रक
सन्दीप प्रिंटिग प्रेस कोट गेट बीकानेर

BIKANER KI SAHITYIK SANSTHAEN AUR
UNKI HINDI KO DEN

Gopal Narayan Vyas Price Rs 12.50

परमपूज्य स्व० नानाजी प० हरदास जी पुरोहित पुण्य स्मृति ग्रन्थमाला



स्व० प० हरदास जी पुरोहित

भूमिका

किसी नगर मे साहित्यिक सस्थाओ का उद्गम आकस्मिक घटनाए नही हुआ करती है। उनके उदय के मूल मे कुछ प्रभावशाली कारण होते है। कोई प्राणवान् साहित्यकार या साहित्य प्रेमी, वहाँ की जनता का साहित्य प्रेम, साहित्य के प्रचार प्रसार-सरक्षण की आवश्यकता, परम्परा आदि उनके जनक बन कर आते हैं।

यदि बीकानेर की साहित्यिक सस्थाओ पर कालक्रम से दृष्टिपात करें तो ज्ञात होता है कि उनमे से आधी से अधिक सस्थाओ का उदय बीकानेर राज्य के बृहद् राजस्थान मे विलय से पूर्व हुआ है और शेप सस्थाए साठोत्तर काल मे जमी है। विलय से पूर्व निर्मित सस्थाओ को इस उस रूप मे राज्याश्रय प्राप्त हुआ है। यहाँ के नरेशो का साहित्य प्रेम इसका हेतु रहा है। राव बीका के बाद के नरेश प्राय स्वय साहित्य रचना किया करते थे और विद्वानो का समादर करते थे। पृथ्वीराज, रायसिंह, कर्णसिंह, अनूपसिंह, जोरावरसिंह, शार्दूलसिंह आदि ने साहित्य सजना मे और साहित्य-सरक्षण म प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से योगदान दिया है। 'यथा राजा तथा प्रजा' के अनुसार यहाँ की जनता म भी साहित्यानुराग व विद्याप्रेम होना स्वाभाविक है। अत राजा व प्रजा के सयुक्त प्रयास का परिणाम ही राज्य विलय से पूर्व साहित्य-सस्था का जन्म है। अभय जन ग्रन्थालय का उदय इसी काल म हुआ, पर संभवत वह राज्याश्रय प्राप्त नही कर पाया। इस पर भी उसका वैविध्यपूर्ण विशाल सग्रह सचालक की कमठता और धर्मदृष्टि का परिचायक है, जो उनके द्वारा प्रकाशित व सपादित ग्रथो मे मिलती है।

भारत के राजनीतिक इतिहास मे गत दो दशक दलगत राजनीति के दाँवपेच के रहे है। इससे देश म गुटबदी बढी है और उसने समस्त भारतीय जन जीवन को प्रभावित किया है। साहित्य-क्षेत्र मे भी उसके पदार्पण से अनेक खेमे स्थापित हुए हैं और उन्होने प्रचार-प्रसार के लिए अनेक पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित की हैं तथा सस्थाए बनायी है। इससे साहित्य का उपकार व अपकार दोनो हुए हैं। बीकानेर मे साठोत्तर काल मे निर्मित सस्थाएँ भी ऊपरी दृष्टि से देखने पर इसी प्रवाह से निर्मित

हुई प्रतीत होती है पर निकट से देखने पर — इनके पारस्परिक कार्यक्रमों आदि पर दृष्टिपात करने पर अनेक प्रकार के मतभेद भी दिखाई देती है। [illegible] साहित्य-सर्जना [illegible], [illegible] सम्पादन की ओर [illegible] दिखाई देता है।

कुछ संस्थापक [illegible] अपनी [illegible] [illegible] संस्थाओं का ह्रास और [illegible] भी [illegible] है। [illegible] भिन्नता [illegible] साम्प्रदायिक [illegible] [illegible] प्रकाशित होता है [illegible] और [illegible] [illegible] साहित्यकारों की साहित्य [illegible] का परिचायक है। इस सम्बन्ध [illegible] कुछ [illegible] प्रतिष्ठित [illegible] की [illegible] ही [illegible] संस्थाओं का [illegible] है और [illegible] में [illegible] रही है।

श्री [illegible] नाहटा [illegible] का [illegible] अध्ययन [illegible] विरहित रहा है। [illegible] विभिन्न साहित्य-सम्पदाएं प्राचीन [illegible] के संरक्षण में सचेष्ट हैं तो प्रस्तुत लेखक इन संस्थाओं का [illegible] श्रद्धा से देखकर उन्हीं के संरक्षण में तत्पर दिखाई देता है। इसके लिए उसे न जाने किन किन व्यक्तियों से मिलना पड़ा होगा और कितनी यात्राएं करके सामग्री संकलित करनी पड़ी होगी। यह भी तभी सम्भव है जब उसके तन और मन की साधना के साथ उसकी आत्मा में कोई रचनी प्रेरणा रही होगी।

सन् १६०१ (प्रथम संस्था का संस्थापन काल) से चलकर सन् १६५ (अंतिम संस्था का संस्थापन काल) में होते हुए आज तक के काल भ्रमण से उक्त संस्थाओं का इतिहास मिला है और बीकानेर नगर के देश भ्रमण से उनका परिचय और कार्य ज्ञात हुए हैं। इस देश काल भ्रमण ने उन इन संस्थाओं द्वारा प्रकाशित अनेक शोध व साहित्य ग्रंथों का परिचय कराया है। वह चाहता था कि इनके द्वारा प्रकाशित सामग्री का विस्तार से समालोचनात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत करता पर लघु प्रबन्ध के कारण विस्तार भय ने उसका हाथ थाम लिया है।

अतएव प्रस्तुत पुस्तक परिचयात्मक एव आलोचनात्मक है। पुस्तक के आरम्भिक तीन अध्याया मे परिचय है–बीकानेर साहित्य परिवेश का परिचय, सस्थाओ का परिचय और उनके कार्यक्षेत्र का परिचय। यह परिचय ऊपरी ऊपरी नही है, अपितु गहराई मे प्रवेश करके दिया गया है। उसमे महत्त्वपूर्ण तथ्य प्रकाश मे आए हैं–बीकानेर मे हस्त-लिखित ग्रन्थो की सख्या ढाई लाख है, अभय जैन ग्रन्थालय का सग्रह साहित्यिक सामग्री का ही सग्रह नहीं है अपितु इतिहास व कला सामग्री भी प्रचुर परिमाण मे विद्यमान है, ये साहित्य सस्थाए नगर के सांस्कृतिक विकास मे अन्य प्रयत्ना द्वारा भी सचेष्ट हैं, इनके प्रकाशनो मे प्राचीन और वतमान दोनो को समान महत्व प्राप्त है आदि। इन परिचयो मे ६ सस्थाओ के उद्देश्य व कार्यक्षेत्र की झलक मिलती है,जिनमे प्रकट होता है कि उनके सस्थापको मे साहित्यानुराग कितना प्रबल रहा है। जब एसी सस्थाओ का उदय और विकास शुद्ध साहित्यानुराग से होता है तो वे समाज मे मानवतावादी दृष्टि की प्रतिष्ठा करती हैं और अह की प्राचीरा को भग्न करती है। इसलिए यह परिचय उपादेय एव प्रकाशस्तम्भ स्वरूप है।

'बीकानेर की साहित्यिक सस्थाओ के प्रमुख साहित्य का मूल्याकन' शीषक से पुस्तक का सबसे बडा चतुर्थ अध्याय ३० पुस्तको और पत्रिका विशेषाको का मूल्याकन प्रस्तुत करता है, जिसमे श्री अभय जैन ग्रन्थालय द्वारा प्रकाशित पुस्तक सम्मिलित नही की गई हं, क्योकि न वे सृजनात्मक है और न समालोचनात्मक, वे तो सपादित है। मूल्याकन सक्षिप्त है, पर निष्पक्ष मूल्यवान है। अपने विस्तृत अध्ययन से पुष्ट आलोचनाओ मे कृति के अन्त और बाह्य की सूक्ष्मता से समीक्षा की गई है। प्रबन्ध के अन्तिम अध्याय मे लेखक ने अपनी पूव स्थापनाओ और मूल्याकनो पर "देन" दृष्टि से सिंहावलोकन किया है। इसमे लेखक ने प्रत्यक्ष देन पर विचार किया है। ऐसी सस्थाओ की परोक्ष देन भी होती है, जो अधिक व्यापक और गहरी होती है। इनके द्वारा न जाने कितने व्यक्तियो मे प्रसुप्त काव्य-प्रतिभा जागृत की गई होगी, न जाने कितनो मे मानवता के अकुर जगाये गये होगे, न जाने कितनो को रसोत्सुक्यमय बनाया

गया होगा और न जाने कितनों को काव्यमय जीवन जीने के लिए फुसलाया गया होगा। ये सब प्रबंध की विचार सीमा से बाहर के विषय रहे हैं।

विद्वान लेखक ने इस प्रबंध लेखन के लिए सामग्री संचित करने में जो परिश्रम किया है वह उसके साहस और धैर्य का परिचायक है और मूल्यांकन में विश्लेषण-संश्लेषण, वर्गीकरण प्रतिपादन आदि की प्रक्रिया में इसे पूर्णता व परिपक्वता दी है वह उसके गहन चिन्तन व कुशाग्र बुद्धि के परिचायक हैं। ऐसे प्रबंध के प्रकाशन से इन साधना रत साहित्य-सेवी संस्थाओं का ज्ञान जब साहित्य व शोध जगत् को होगा तो अनेक विद्वान बीकानेर के साहित्य तीर्थ की यात्रा करेंगे, अनेक व्यक्तियों में संस्था-भक्ति उत्पन्न होगी, जिससे अनेक संस्थाओं का उदय होगा।

अतः मैं अपने शिष्य श्री व्यास की इस कृति का हृदय से स्वागत करता हूँ।

डा० कन्हैया लाल शर्मा
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
डूंगर महाविद्यालय
बीकानेर।

प्राक्कथन

बीकानेर नगर की प्रबुद्ध साहित्यिक चेतना और विपुल परिमाण मे रचित साहित्य सामग्री को देखकर यहा के साहित्यिक वातावरण की निर्मात्री साहित्यिक सस्थाओ की ओर ध्यान आकृष्ट होना स्वाभाविक ही है। बीकानेर मे इस समय छोटी-बड़ी बाईस साहित्यिक सस्थाए हैं, जो भाषा, साहित्य और कला से सबधित विभिन्न प्रकार की सृजनात्मक गतिविधिया का सयोजन एव सचालन करती हैं। इन सस्थाओ का कार्य-क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है। साहित्यिक-अनुसधान, सृजन, समीक्षा, पत्रकारिता, सगोष्ठी समायोजन और ग्रथ प्रकाशन बीकानेर की साहित्यिक सस्थाओ के प्रमुख कार्यक्षेत्र हैं। अनेक सस्थाए गत अर्द्धशताब्दी से साहित्य-साधना मे सलग्न हैं तो भी अद्यावधि इनके समुचित मूल्याकन का कोई प्रयास नही हुआ है। अस्तु इन सस्थाओ की साहित्यिक उपलब्धिया के मूल्याकन एव कार्य प्रणाली के व्यवस्थित अध्ययन की महती अपेक्षा थी। बीकानेर का मूल निवासी एव साहित्य का विद्यार्थी होने के नाते यह अभाव मेरे समक्ष बहुत स्पष्ट रूप मे विद्यमान था। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबध इसी अभाव की पूर्ति की दिशा मे एक विनम्र प्रयास है।

इस शोध-प्रबध मे नगर की नौ प्रमुख साहित्यिक सस्थाओ का अध्ययन पाच अध्याया मे प्रस्तुत किया गया है।

'बीकानेर का प्रागैतिहासिक स्वरूप और साहित्यिक परिवेश' शीर्षक प्रथम अध्याय मे बीकानेर नगर के प्रागैतिहासिक स्वरूप का विवरण प्रस्तुत करते हुए इस नगर की स्थापना, भौगोलिक विस्तार एव तद्गत परिवेश का विवरण प्रस्तुत किया गया है। साथ ही बीकानेर जिले की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक एव साहित्यिक परिस्थितियो का भी विवेचन किया गया है क्योकि साहित्यिक चेतना और उसे विकसित करने वाली साहित्यिक सस्थाओ पर इन परिस्थितियो का प्रमुख प्रभाव पड़ा है।

द्वितीय अध्याय म बीकानेर नगर की प्रमुख साहित्यिक

सस्थाओ का परिचय एव इतिहास प्रस्तुत किया गया है। इन सस्थाओ की स्थापना, उद्देश्य, प्रबध-व्यवस्था, विभिन्न विभागो आदि का अपेक्षित विवरण भी इसी अध्याय मे दिया गया है।

तृतीय अध्याय का शीषक 'बीकानर की साहित्यिक सस्थाओ का कायक्षेत्र' है। साहित्यिक सस्थाओ के कायक्षेत्र को छह शीषको के अन्तगत विभाजित किया गया है। ये शीषक है-शोध-काय, साहित्यिकग्रथ - प्रकाशन, पत्रिका - प्रकाशन, सगोष्ठी-समायोजन आसनपीठ, व्याख्यान मालाए तथा अन्य गतिविधियाँ। प्रत्येक सस्था की गतिविधियो का विवरण उल्लिखित शीषको के अन्तगत इस अध्याय मे प्रस्तुत किया गया है।

चतुथ अध्याय मे साहित्यिक सस्थाओ के द्वारा प्रकाशित प्रमुख साहित्य का समालोचनात्मक मूल्याकन किया गया है। यो तो सस्थाओ द्वारा साहित्य के अतिरिक्त इतिहास समाजशास्त्र, सस्कृति धम, दशन, ज्योतिष एव कला सबधी विषयो पर भी विपुल परिमाण मे ग्रथ प्रकाशित हुए है किन्तु मूल्याकन उन्ही रचनाओ का किया गया है जिनका सृजनात्मक, समालोचनात्मक, लोक-साहित्य एव भाषा वज्ञानिक दृष्टि से विशेष महत्त्व है। 'राजस्थान-भारती' (शोध-पत्रिका) और 'वातायन' नामक पत्रिकाओ के कतिपय महत्त्वपूण एव बहुचर्चित विशेषाको का भी साहित्यिक मूल्याकन किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा लघु शोध—प्रबध की पष्ठ सख्या १५० निर्धारित होने के कारण मूल्याकन की अपनी सीमाए रही है। विधा वैविध्य के कारण रचनाओ का मूल्याकन स्वतत्र रूप से किया गया है।

पचम अध्याय का शीषक 'बीकानर की साहित्यिक सस्थाओ की हिन्दी की देन' है। इस अध्याय मे साहित्यिक सस्थाओ की देन का अध्ययन छह शीषको के अन्तगत विभाजित करके किया गया है। ये हैं— साहित्यिक शोध, साहित्यिक सजन, साहित्यिक समालोचना लोक-साहित्य, भाषा-विकास और पत्रकारिता। वस्तुत साहित्यिक सस्थाओ द्वारा हिन्दी के उल्लिखित क्षेत्रो मे किए गए अनुदान से यह स्पष्ट हो गया है कि इन सस्थाओ का कायक्षेत्र केवल नगर या

प्रदेशस्तर तक ही परिसीमित नही है अपितु देशव्यापी है। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के द्वारा नगर की साहित्यिक सस्थाओ के परिचय, इतिहास, कार्यक्षेत्र एव उनके द्वारा प्रकाशित साहित्य का मूल्याकन प्रस्तुत किया गया है। जहाँ तक इस प्रबध के विषय एव कार्य की मौलिकता का प्रश्न है, मैं यह विनम्र निवेदन करता हूँ कि यह अपने ढग का प्रथम एव मौलिक प्रयास है। इस पूर्व बीकानेर नगर या प्रादेशिक स्तर पर साहित्यिक सस्थाओ से सबधित कोई भी अनुसधान कार्य नही हुआ है।

प्रस्तुत विषय आरम्भ मे जितना सरल एव बोधगम्य प्रतीत होता था, बाद मे उतना ही जटिल और गम्भीर सिद्ध हुआ। अनेक सस्थाओ के इतिहास और उनकी आरभिक गतिविधियो की जानकारी प्राप्त करने मे कुछ कठिनाइयाँ उपस्थित हुई। सस्थाओ के पुराने साहित्य, प्रकाशित साहित्य की अलभ्य प्रतियो एव कार्य विधि सबधी पुराने विवरण तथा प्रतिवेदनो को भी प्राप्त करना एक समस्या थी। इन सब समस्याओ के समाधान और प्रबध लेखन के लिए अपेक्षित सामग्री उपलब्ध कराने मे नगर के वयोवृद्ध साहित्यकारो और विभिन्न सस्थाओ के पदाधिकारियो ने जो सहायता की, इसके लिए मैं इस अवसर पर उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना अपना पुनीत कर्तव्य समझता हूँ। विशेष रूप से सर्व श्री विद्याधर जी शास्त्री, अगरचन्द जी नाहटा, शभूदयाल सक्सेना, नरोत्तमदास जी स्वामी, ठाकुरराम सिंह जी, जुगल सिंह जी खीची, सत्यनारायण जी पारीक, मुरलीधर जी व्यास प्रभृति वयोवृद्ध साहित्यकारो ने विभिन्न सस्थाओ से सबधित प्राचीन विवरण की जानकारी देकर और सर्व श्री प्रकाश परिमल, रमेश जन, हरीश भादानी, मूलचन्द 'प्राणेश' डॉ० पुष्करदत्त जी शर्मा, भवानी शकर व्यास, डॉ० प्रभाकर जी शास्त्री, मथुरादास पुरोहित आदि सस्थाधिकारियो ने सस्थागत साहित्य, प्रतिवेदन एव पुराने रिकार्ड उपलब्ध कराकर मेरी प्रबध लेखन मे जो अपार सहायता की है, इसके लिए मैं उनका कृतज्ञ हूँ।

परमपूज्य स्वर्गीय नानाजी श्री हरदासजी, श्रद्धास्पद मामाजी सर्व श्री लक्ष्मीनारायणजी, हरनारायणजी, युगलनारायण जी व

ब्रजनारायण जी, प्रातस्मरणीया 'माताराम, 'श्रोत्रिय गंगाराम जी तपोनिष्ठ गिरधर लाल जी व श्री नारायण भार्गव साहब का आशीर्वाद ही प्रस्तुत प्रबंध के रूप मे प्रतिफलित है। अत इन सभी के प्रति मैं श्रद्धावनत हूँ। अनुज रामकृष्ण, भगवानदास व शिवशंकर तथा मित्र शिवधन व दुर्गादास ने भी इस कार्य की पूर्ति मे मेरी सहायता की है, अत सभी धन्यवाद के पात्र हैं। सब श्री गौरीशंकर जी शर्मा, ब्रजनाथ दुबे, वेद प्रकाश शर्मा तथा भगिनी पुष्पा, ये सभी तो अपने हैं। अत इनके प्रति आभार प्रदर्शन करना मात्र औपचारिकता होगी, जिसे प्रकट करने का दुस्साहस मैं नहीं कर सकता। प्रबंध को समय पर मुद्रण व्यवस्था करने मे मरुदीप प्रेस के व्यवस्थापक मक्खन भाई साहब व जुगल किशोर ने विशेष तत्परता दिखाई है। अत इनके प्रति मैं आभारी हूँ।

प्रस्तुत-शोध प्रबंध का निर्देशन परमादरणीय गुरुवर डॉ॰ देवी-प्रसाद जी गुप्त ने किया है, उनके प्रति शब्दो मे आभार प्रदर्शन करना मेरे लिए असम्भव है।

मेरे शोध निर्देशक, परम श्रद्धेय, आदरणीय गुरुवर डॉ॰ कन्हैयालालजी शर्मा ने समयाभाव मे भी सस्नेह भूमिका लिखकर मुझे आशीर्वाद देने की अनुकम्पा की है। इसके लिए गुरुवर को कोटिश प्रणाम करने के अतिरिक्त मैं कर ही क्या सकता हूँ।

मैं अपने इस प्रयास मे कहाँ तक सफल हुआ हूँ इसका मूल्यांकन तो अधिकारी विद्वान वर्ग, किन्तु मुझे इतना संतोष अवश्य है कि प्रस्तुत प्रबंध के माध्यम से बीकानेर नगर की गत अर्द्ध शताब्दी की साहित्यिक चेतना का क्रमिक इतिहास संस्थाओ के माध्यम से निरूपित हुआ है। साथ ही हिन्दी अनुसंधान की एक नयी दिशा का सूत्रपात भी हुआ है।

अन्त मे 'करकृतमपराद्ध क्षन्तुमर्हन्ति संत ' – इस अभ्यर्थना के साथ अपनी त्रुटियो के प्रति क्षमा याचना करते हुए अपनी वर्ष भर की श्रम-साधना का यह पुष्प माँ भारती को समर्पित करता हूँ।

शास्त्री – सदन
राजरगो की गली, बीकानेर। गोपाल नारायण व्यास
विजयदशमी, स० २०२८



हिन्दी साहित्य के लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान
श्रद्धेय गुरवर डॉ० सरनामसिंह जी शर्मा 'अरुण'
को
सादर समर्पित

विषयानुक्रमणिका

प्रथम अध्याय

बीकानेर का प्रागैतिहासिक स्वरूप और साहित्यिक परिवेश

द्वितीय अध्याय

बीकानेर की साहित्यिक संस्थाओं का परिचय और इतिहास

मण्डल । हिन्दी विश्व भारती अनुसंधान परिषद – स्थापना, उद्देश्य, विभिन्न विभाग शोध विभाग, शिक्षण विभाग, ज्योतिष विभाग, राजस्थानी और हिन्दी साहित्य विभाग प्रकाशन विभाग व्यवस्थापिका समिति । श्री जुबली नागरी भण्डार – स्थापना उद्देश्य, विभिन्न विभाग प्रचार विभाग, सम्पादन विभाग संग्रह विभाग, हिन्दी विभाग राजस्थानी विभाग परीक्षा विभाग । महिला – स्थापना, उद्देश्य, एवं प्रबंध समिति । श्री गुण प्रकाशक सज्जनालय स्थापना उद्देश्य एवं व्यवस्था ।

तृतीय अध्याय

बीकानेर की साहित्यिक संस्थाओं का कार्यक्षेत्र

४५ ७।

साहित्यिक संस्थाओं का कार्यक्षेत्र नाट्यकाय साहित्यिक ग्रन्थ प्रकाशन पत्रिका प्रकाशन संगोष्ठियाँ आसनपीठ एवं व्याख्यान मालाएँ अन्य गतिविधियाँ । शोध-कार्य विभिन्न संस्थाओं द्वारा सम्पादित उपाधि सापेक्ष्य शोध कार्य का विवरण उपाधि निरपेक्ष के अन्तर्गत संस्थाओं द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ परिचय श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट के शोध ग्रन्थ अचलदास खीची री वचनिका पवार वंश दर्पण विनयचन्द्र कृति कुसुमांजलि धमवद्धन ग्रन्थावली, जिनराज सूरि कृति कुसुमांजलि समय सुन्दर रास पंचक भारतीय संस्कृति की रूपरेखा जिनहर्ष ग्रन्थावली, दंपति विनोद सीताराम चौपई, पीरदान ग्रंथावली । भारतीय विद्यामंदिर शोध प्रतिष्ठान के शोध ग्रन्थ रासो साहित्य और पृथ्वीराज रासो प्राचीन काव्यों की रूप-परम्परा संस्थागत शोध कार्य - संत साहित्य, लोक साहित्य के अन्तर्गत राजस्थानी लोक महाभारत बाबा रामदेव जी व्यक्तित्व और कृतित्व । हिन्दी विश्वभारती अनुसंधान परिषद् के शोध ग्रंथ राजस्थान के लोकोत्सव और लेख संतवाणी भाग १ । श्री अभय जैन ग्रन्थालय के शोध ग्रन्थ

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह समय सुंदर कृति कुसुमांजलि, ज्ञान सागर ग्रन्थावली बीकानेर जैन लेख संग्रह। साहित्यिक ग्रन्थ प्रकाशन श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट द्वारा प्रकाशित ग्रंथ राजस्थान रा दूहा, पद्मिनी चरित्र चौपाई हम्मीरायण दलपत विलास, वीर रस रा दूहा, राजस्थानी नीति दूहा डिंगल-गीत हरि रस राजस्थानी प्रेम कथाएँ, राजस्थानी व्रत-कथाएँ, महादेव पार्वती री वेलि सदयवत्स वीर प्रबंध वरसगांठ राजस्थानी व्याकरण चन्दायन राजस्थानी गद्य साहित्य उद्भव और विकास। राजस्थानी भाषा प्रचार प्रकाशन संस्थान द्वारा प्रकाशित ग्रंथ परदेशी री गारडी, दस दोष हिय सणां उपाय सूरज कुंडालो, एक्स मिडन्याल री बात, राजस्थानी रा प्रतिनिधि कवि, राजस्थानी रा प्रतिनिधि कथाकार। वातायन संस्थान द्वारा प्रकाशित ग्रंथ एक उजली नजर की सुई शीतायन सुलगते पिण्ड व कथाएँ एक टुकड़ा धूप प्रस्तुति हिन्दी साहित्य का सिद्धान्त दर्शन। श्री अभय जैन ग्रन्थालय द्वारा प्रकाशित ग्रंथ सीताराम चौपाई जीव दया प्रकरण काव्यत्रयी राजा श्रीपाल और मैना सुन्दरी सती मृगावती। हिन्दी विश्व भारती अनुसंधान परिषद् द्वारा प्रकाशित ग्रंथ साखी नाथी रा सूबाय। श्री जुबली नागरी भंडार द्वारा प्रकाशित ग्रंथ कवित्तोपहार, गोस्वामी तुलसीदास के काव्य का महत्व। पत्रिका प्रकाशन राजस्थान भारती विश्वम्भरा वातायन जलमभोम। साहित्यिक संगोष्ठियां समीक्षात्मक कवि गोष्ठियां विचार गोष्ठियां, पुस्तक समीक्षा गोष्ठियां, । भाषण मालाएँ तथा आसनपीठ व्याख्यान मालाएं महाराजा पृथ्वीराज आसनपीठ महामुनि व्यास आसनपीठ। अन्य गतिविधियां।

चतुर्थ अध्याय

बीकानेर की साहित्यिक संस्थाओं के प्रमुख साहित्य का मूल्यांकन

मूल्यांकन के लिए गृहीत साहित्य का महत्त्व और मूल्यांकन के मानदण्ड।

बीकानेर की साहित्यिक संस्थाएँ
और
उनकी हिन्दी को देन

गोपाल नारायण व्यास

अध्याय / १

बीकानेर का प्रागैतिहासिक स्वरूप और साहित्यिक परिवेश

प्रागैतिहासिक स्वरूप

भारत के प्रान्तों में वीरता के लिए स्वनामधन्य राजस्थान प्रान्त का अपना विशिष्ट स्थान है। राजस्थान का पुरातन नाम राजपूताना था। बीकानेर (विक्रम पुर) इसी प्रान्त के पश्चिम-उत्तर में स्थित इसी का एक भाग है जो स्वर्णिम सिकता के बड़े-बड़े टीलों में आवृत्त है। पौराणिक विवरणों से स्पष्ट होता है कि बीकानेर का प्राचीन नाम "जांगल" देश था।[1] इसकी पुष्टि अनेक ग्रन्थों के आधार पर होती है। संस्कृत के "रूप

१—(क) गौरीशंकर हीराचन्द ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास (पहला भाग पृष्ठ १)

(ख) स्कन्द पुराण के प्रभास महात्म्य (अध्याय ८८ के श्लोक २७) में तीर्थाष्टक की गणना है, जिसमें पुष्कर के साथ 'कुरु जांगल' का भी पाठ है।

(ग) द्रष्टव्य महाभारत—

(१) कच्छा गोपाल कक्षाश्च जांगला कुरुवर्णका। (भीष्म पर्व ६/५५)

(२) पैत्र्यं राज्यं महाराज ! कुरवस्ते स जांगला। (उद्योग पर्व ५४/७)

(३) तत्रामे कुरु पांचाला शाल्वामाद्रेय जांगला। (वन पर्व १०/११)

कल्पद्रुम म 'जांगल देश की जो व्याख्या प्रस्तुत की गई है यह भी इस नाम की पुष्टि करती है क्योंकि आज भी बीकानेर की भौगोलिक परिस्थितियाँ परिभाषानुकूल ही है ।[1] बीकानेर नरेशों का अद्यावधि जंगलधर बादशाह अभिधान से अभिहित किया जाना भी इसका पुष्ट प्रमाण है ।[2] परन्तु भूगर्भ शास्त्रियों का अनुमान है कि यह प्रदेश प्रारम्भ में मरुस्थल नहीं था अपितु जूरसिक, क्रीटेशियम और इग्रासिन के युगों म समुद्र मग्न था । यह समुद्र टैथिस के नाम से विख्यात था । ज्यालाजीआफ इण्डिया' के लेखक मि० वादिया ने भी इसी तथ्य की ओर संकेत किया है । टरिनरी युग में इस प्रदेश की भौगोलिक स्थिति में परिवर्तन हुआ और पृथ्वी की आन्तरिक शक्तियों के संक्रमण से यह भाग ऊपर उठने लगा । शनैः शनैः समुद्र समाप्त होता गया तथा रेतीला भाग निकल आया ।

वेदों की ऋचाओं से भी उक्त भू-विद्या अन्वेषण की पुष्टि होती है । ऋग्वेद के उल्लेख के अनुसार सतलुज व्यास और सरस्वती नदियाँ रथियों की तरह समुद्र में आकर गिरती थी ।[3] श्रुति प्रमाण के अतिरिक्त वाल्मीकि रामायण में भी समुद्र से मरुस्थल की उत्पत्ति विषयक एक रोचक

१— स्वल्पोदक तृणोयस्तु प्रवात प्रचुरातप
स ज्ञेयो जागलो देश बहुधान्यादि संयुत ॥ (शब्द कल्पद्रुम पृष्ठ ५२६)

२— गौरीशंकर हीराचन्द ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास
(पहला भाग पृष्ठ ३)

३— एका चेतत्सरस्वती नदीना शुचिर्यती गिरिभ्य आ समुद्रात ।
रायश्चेतन्ती भुवनस्य भूरेर्घृत पयो दुदुहे नाहुषाय ॥
(ऋग्वेद ७ म / ९५ सू /२ मंत्र)

इन्द्रेषिते प्रसव भिक्षमाणे अच्छा समुद्र रथ्येव याथ ।
समाराणे ऊर्मिभि पिन्वमाने अन्यावामन्यामप्येति शुभ्रे ॥
(ऋग्वेद ३ म /३३ सू /२ मंत्र)

गाथा प्रस्तुत की गई है ।[१]

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि समुद्र के पीछे हट जाने या सूख जाने पर ही मरु प्रदेश उद्‌भूत हुआ । बीकानेर प्रदेश में कहीं कहीं आज भी समुद्र के अवशेष के रूप में शंख, सीपी, कौडी, गोल पत्थर आदि मिलते हैं जो बीकानेर का किसी काल विशेष में समुद्राप्लावित होने की ही सूचना देते हैं ।

बीकानेर के वर्तमान रेतीले भाग पर यद्यपि आज हमें किसी भी नदी के दर्शन नहीं होते तथापि पुरातत्वान्वेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि इसकी पश्चिमी सीमा पर कभी सरस्वती नदी बहा करती थी, जो पूर्ण रूपेण सूख गई है ।[२] इसके अतिरिक्त सिंधु नदी की सहायक नदी घग्गर भी जो पहले हाकड़े के नाम से प्रसिद्ध थी, इसके उत्तरी भाग में बहती हुई सिंधु में आकर मिलती थी । सरस्वती का लुप्त होना ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी में भी पहले मानना उचित है क्योंकि कालिदास ने सरस्वती का जहाँ कहीं अपने ग्रंथों में वर्णन किया है वह 'अन्तःसलीला' कह कर ही किया है । कालिदास का समय ई० पू० प्र० शताब्दी ही विद्वानों को मान्य है ।[३] महाभारत में भी सरस्वती के लुप्त होने का विवरण प्राप्त होता है ।[४]

१— तस्मात् स द्रुमकान्तारस्तेन पवनमध्युषितश्चोपमरुः ।
विख्यातः त्रिषु लोकेषु मरुकान्तारमेव तत् ॥

(युद्धकाण्ड सर्ग २२/ श्लोक ३६-३७)

२— गौरीशंकर आचार्य बीकानेर का परिचय पृष्ठ ७

३— बलदेव उपाध्याय संस्कृत साहित्य का इतिहास पृष्ठ १२१

४— द्रष्टव्य महाभारत दृश्यादृश्या च भवति तत्र तत्र सरस्वती ।
एता दिव्या सप्तगंगा त्रिषु लोकेषु विश्रुता ॥

(भीष्म पर्व ६/५०)

न दृश्यते छन्निकृष्टा यस्मान्हि सरस्वती ।

(शल्य पर्व ३८/११-१२)

घग्गर के विशिष्ट होने का समय ईसा की छठी शताब्दी माना जाता है। स्वीडिश आर्कोलॉजिकल एक्सपीडिशन पार्टी के नेता डॉ० हन्नारिद ने भी अपने अनुसंधान के आधार पर इसी समय की मान्यता दी है।[1] ओल्डम [Odham] ने भी घग्गर के लुप्त होने का कारण सतलुज के मार्ग बदलना माना है।[2] कुछ भी हो इनके सूखने का मार्ग तो आज भी दृष्टिगत होता है। वर्षा ऋतु में पानी इसी मार्ग से हनुमानगढ़ व सूरतगढ़ होता हुआ अनूपगढ़ पहुंच जाता है जिसे आजकल नाली कहते हैं। इसके अतिरिक्त एक तीसरी धारा की उत्पत्ति कच्छू (कोलायत) के निकट से दीख पड़ती है जो बरसात में कभी कभी पांच दस मील बह कर किसी विलुप्त नदी या नदियों का स्मरण कराती है।

बीकानेर की स्थापना

वीरप्रसू मरुभूमि पर सदैव ही ऐसे वीर अवतरित हुए हैं जो शस्त्र विद्या में तो पटु होते ही थे, साथ में अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण करने में भी दृढ़ संकल्प होते थे। बीकानेर की स्थापना के मूल में भी यही मनोवृत्ति क्रियमाण रही है। पाउलेट तथा ओझाजी ने एक घटना का उल्लेख किया है कि जोधपुर के राव जोधा अपने दरबार में अपनी सभा लगाए बैठे थे उसी समय जोधा के पुत्र राव बीकाजी दरबार में कुछ देर से पधारे और आते ही अपने चाचा कांधलजी के कान में धीरे धीरे कुछ कहने लगे। उनकी इस गुप्त मंत्रणा को देख कर जोधा जी ने पुत्र की हंसी उड़ाते हुए कहा कि आज तो चाचा भतीजे में गहरी सलाह हो रही है

1 Both the archaeological finds and certain climatological features however indicate that the Ghagger in the area under discussion [Shri Ganganagar district Rajasthan] did not carry water as a river after the middle of the sixth century A D

2 As regards the Sutleja there is evidence of changes quite sufficient to explain the disappearance of the Saraswati in the sands the drying up of the Hokara and the transformation of a fertile region into desert

गया किसी नये राज्य की स्थापना की तयारी हो रही है ? बस फिर गया था उसी दिन पिता के ताने स ममाहत होकर राव बीका और उनके चाचा कांधलजी ने नये राज्य की स्थापना का दृढ निश्चय कर लिया। दोनो ही वीरो ने सौ घोडे और पाँच सौ राजपूतो की एक सेना का सगठन किया एव ३० सितम्बर १४६५ ई० (विक्रम सवत १५२२) को जोधपुर स रवाना हुए। रास्ते म प्रथम पडाव मडोर म डाला। वहाँ स व देशनोक पहुचे जहाँ उन्हे मा करणी के दशन हुए। उनका आशीर्वाद प्राप्त कर उनके आदेश के अनुसार दोनो ही वीर ससैन्य चण्डसर म निवास करने लग। कुछ दिनो बाद राव बीका कोडमदेसर पहुचे एव अपन आपको राजा घोषित किया एव अपन राज्य का विस्तार करने का विचार किया। बीकाजी से पूर्व यद्यपि इस प्रदेश पर अनेक जातियो का शासन रहा था किन्तु उनका उल्लख मात्र यत्र-तत्र मिलता है कोई अविछिन्न ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नही है। प्रदेश म प्रचलित किवदन्तियो एव अन्य साक्ष्यो के आधार पर इतना अवश्य स्पष्ट हो जाता है कि जाटो का अधिक बोल बाला था। कांधलजी की वीरता दूरदर्शिता जाटो की आपसी फूट तथा बीकाजी की सच्ची लगन ने उन्हे नवीन राज्य स्थापना म सफल बनाया। कोडमदेसर स राव बीका जांगलू पहुचे और सांखला के ८४ गावो पर कब्जा किया। ऐसी प्रसिद्धी है कि मा करणी के आशीर्वाद स आपका विवाह भाटी राव शेखा की पुत्री रगकवरी स हुआ।[1] इस विवाह न उनकी शक्ति को द्विगुणित कर दिया।

सन १४७८ म राव बीकाजी ने कोडमदेसर म एक गढ बनवाना प्रारम्भ किया किन्तु उनका यह काम भाटियो को रुचिकर नही लगा। फलत इन्हे भाटियों स युद्ध करना पडा। बीकाजी विजित अवश्य हुए किन्तु भाटियो की छेड छाड बन्द नही हुई। कांधलजी की सलाह स बीकाजी एव सुरक्षित गढ के निर्माण की योजना म थ जिसके फल स्वरूप आपन नापा साखला म

1 Captain P W Powlate Gazetteer of the Bikaner State Page 2 3

2 Captain P W Powlate Gazetteer of the Bikaner State

गौरी शकर हीराचन्द ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास (पहला भाग) पृष्ठ ९० ९१

सलाह लकर नय किल की नीव सन १४८५ ई० (सवत् १५४२) म रावी घाटी पर डाली । इस किल के अवशष आज भी हम वतमान किले से दो मील दक्षिण-पश्चिम म दिखाई देत हैं । इसी किल के आस-पास बीकाजी ने १२ अप्रल सन १४८८ (सवत् १५४५) को अपने नाम पर बीकानेर नगर बसाया।[1] बीकानेर स्थापना विषयक निम्नाकित दोहा भी प्रसिद्ध है—

पनर स पतालव सुद बशाख सुमर ।
थावर बीज थरप्पियो बीके बीकानेर ॥

पावलेट ने भी इसी प्रकार का उल्लख 'गजेटियर ऑफ द बीकानेर स्टेट' म किया है ।[2]

भौगोलिक विस्तार और विशेषताएँ

वतमान बीकानेर जिले का क्षेत्रफल १० १५० वग मील है। यह २७ १५ से २६ १५ अक्षाश म तथा ७२ २० से ७४ ४० पूर्वी देशातर म स्थित है । वतमान काल म प्रशासन की सुविधा हेतु इसे दो उपखडो म तथा चार तहसीलो म विभाजित किया गया है । उपखडो के क्रमश बीकानेर व लूणकरणसर उत्तरी खड मे तथा नोखा और कोलायत दक्षिणी खड मे आते हैं । ये ही चार तहसीलें है । इस जिले म कुल मिलाकर १२३ ग्राम पचायतें २६ न्याय पचायतें ४ पचायत समितिया तथा ६६० ग्राम हैं । इसके उत्तर पूव म श्री गगानगर और चूरू पूव म चूरू दक्षिण पूव म नागौर और चूरू दक्षिण म जोधपुर और नागौर, दक्षिण पश्चिम म जसलमेर और जोधपुर तथा पश्चिम म पाकिस्तान है और उत्तर पश्चिम म श्री गगानगर जिला है ।

बीकानेर की भौगोलिक स्थिति भी उल्लखनीय है । जिले का अधिकाश भाग रेतीला है जिसम २० स १०० फीट की ऊचाई के रेतीले टीले पाये जात हैं ।

---

1 Captain P W Powlate Gazetteer the Bikaner State Page 2-3

2 *Baishakh the month the day the second fifteen four five* the year and sixth day of the week when Bika founded Bikaner
– Captain P W Powlate

बीकानेर जिले म अनेक स्थना पर नमकीन आकरभारी भूतल है। लूणकरणसर किसनासर, रजनर आदि के नमक केन्द्र और वानासर कोहमनेसर आदि नमकीन भूतलें प्रसिद्ध हैं। समुद्र तट से बाकानेर जिले की ऊंचाइ लगभग ७०० से १२०० फीट है। बीकानेर स्वय आस-पास के धरातल से ७२६ फीट ऊँचे चट्टान पर बसा हुआ है। जिले मे कोई नदी नहा नाले अवश्य हैं जो वर्षाकाल म भर जाते हैं।

यहां की जलवायु शुष्क एव गम है। वर्षा का अभाव स्वत ही जगला के अभाव की ओर इ गित करता है। यहा के वक्षा म खेजड़ा, नीम, बबूल व घर की झाड़ियों का ही आधिक्य है। आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्र थ 'भाव प्रकाश' म इस प्रदेश के जिन वक्षा का उल्लेख किया गया है उनम उपयुक्त वक्षा के ही नाम गिनाये हैं।[1] बीकानेर जिले म आयुर्वेदीय औषधियो का अटूट भण्डार है। शख पुष्पी, रोहितृण (रमीवर) नागरकी कपूरगधा महाजला, हरमा व इद्रायण आदि अनेक शास्त्रीय औषधियाँ तथा ऊँट कटाला, रक्त व श्वेताक (आकडा) बसालिया व भूरीगाली आदि कयी जडी बूटियाँ है।[2] यहाँ की मुख्य पदावार बाजरा मोठ व ग्वार हैं। अन्य प्रसिद्ध वस्तुओ म भण्डारा का मतीरा, बीकानेर की मिश्री, कोडमदेसर के बग व महाजन पट्टे का घी भी है।

उद्योग की दृष्टि म पशु पालन ही मुख्य है। यहां के ऊँट तो प्रसिद्ध ही हैं। पशुओ म दूसरा प्रमुख पशु भेड है। राजस्थान में सर्वाधिक ऊन बीकानेर म ही होती है। अपने इस व्यवसाय के लिए यह जिला विशेष प्रसिद्ध है। प्रतिवर्ष लगभग २० लाख पौंड ऊन का निर्यात बीकानेर से होता है।

१— आकाशशुभ्रउच्चैस्च स्वल्पपानीय पादप ।
शमीकरीरबिल्वाकपीलु कर्कन्धु सकुल ॥
सुस्वादु फलवान्देशो वातालो जाङ्गल स्मृत ॥
(भाव प्रकाश चतुर्थ अध्याय हर्गीतिका वर्णन)

२— वैद्य हनुमत् प्रसाद शास्त्री व वैद्य ठाकुर प्रसाद इस विषय म अति सचेष्ट हैं एव अनेक प्रदर्शनियो म अनुमतित औषधियो का प्रदर्शन करते हैं।

खनिज पदार्थों में जिप्सम, कोयला व लाल पत्थर के लिए बीकानेर विशेष प्रसिद्ध है। भारत में ९० प्रतिशत जिप्सम राजस्थान में होता है और राजस्थान में भी सर्वाधिक बीकानेर (जामसर) में होता है। पलाना में कोयले की खान है तथा लाल पत्थर की खानें दुलमेरा गांव में हैं।

परिवेश और परिस्थितियाँ

साहित्य का प्रतिपाद्य प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में मानव जीवन होता है और मानव जीवन परिस्थितियों का अनुचर है। यही कारण है कि साहित्य भी मानव जीवन परिवेश से अछूता नहीं रह पाता। उस पर परिस्थितियों की प्रतिच्छाया स्पष्टरूपेण परिलक्षित होती जाती है। ये परिस्थितियाँ अनेक प्रकार की होती है, जैसे धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक, राजनीतिक आदि। इन परिस्थितियों को आधार बनाकर ही अनेक संस्थाओं का प्रादुर्भाव होता है। आलोच्य विषय के स्पष्टीकरण के लिए उन सभी परिस्थितियों का संक्षिप्त विवेचन वाञ्छनीय है जिनके प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष प्रभाव ने बीकानेर जिले में अनेक साहित्यिक संस्थाओं को जन्म दिया।

बीकानेर जिले की सामाजिक परिस्थिति

बीकानेर की सामाजिक स्थिति भारतीय संस्कृति की मूलाधार वर्ण व्यवस्था पर आधारित है। पुरुष सूक्त की ऋचा में वर्णित जाति व्यवस्था का स्वरूप हमें यहाँ स्पष्टतः दिखाई देता है[1] ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र चारों ही वर्णों की कई उपजातियाँ भी यहाँ के समाज में स्पष्टतः दिखाई देती हैं। इसके अतिरिक्त अन्त्यज और म्लेच्छादि जातियाँ भी यहाँ निवास करती हैं। सुथार, दर्जी, कुम्हार, तेली, माली, खत्री, कायस्थ, जाट, बिश्नोई, घोसी, गूजर, बैरागी, गोस्वामी, स्वामी, छीपा, भड़भूजा आदि जातियाँ

१— ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद् वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोऽजायत॥ (ऋग्वेद पुरुष सूक्त)

के लोग भी यहाँ बसे हुए हैं। जंगली जातियों में मोने बावरी, थारी आदि हैं। मुसलमानों में सयद, शेख मुगल और पठान आदि कई जातियाँ हैं।[1]

ब्राह्मणों की भी यहाँ उपजातियाँ-पुष्करणा पारीक गुजरगौड आदि हैं। अधिकता पुष्करणा ब्राह्मणों की है। बीकानेर राज्य की स्थापना के साथ ही साथ राज्य में पुष्करणा ब्राह्मणों की मुख्य मुख्य जातियाँ यहाँ आकर बसी और उनको बीकानेर के राजाओं द्वारा विशेष प्रश्रय प्रदान किया गया। यथा राज्य दरबार में ज्योतिष के लिए आचार्य जाति का, श्रौतस्मार्त कार्यों के लिए व्यास जाति का विशेष महत्त्व रहा है। अन्य ब्राह्मण जातियों का भी प्रारम्भ में तो मुख्य व्यवसाय धार्मिक कृत्य एवं पौरोहित्य ही था। राजपूतों में राठौड़ वंश की महत्ता रही है। राजपूत वर्ग का प्रमुख कार्य सैनिक सेवा तथा वैश्यों का व्यवसाय व्यापार करना रहा है। वैश्यों को दो मुख्य जातियों में विभाजित किया जा सकता है - माहेश्वरी और जैन। माहेश्वरियों में मोहता, डागा, मूंधड़ा, दम्मानी आदि तथा जैनियों में रामपुरिया, सठिया बांठिया लूनिया बोथरा आदि भारत के प्रमुख व्यापारियों में गिने जाते रहे हैं। अन्य जातियों का कार्य वंश परम्परा पर ही आधारित हैं फिर भी वर्तमान जन जागृति के कारण व्यवसायों में परिवर्तन तेजी के साथ होते जा रहे हैं और आज समाज में सभी वर्गों के लोग सभी प्रकार के व्यवसाय कर रहे हैं।

शहर में तो सभी प्रकार के खाद्यान्नों का प्रयोग होता है किन्तु गांवों के लोगों का मुख्य खाद्यान्न बाजरा और मोठ है। यहाँ पर विशेष त्यौहारों पर लाफसी (लप्सी), चावल मूंग और बड़िया के साग का प्रचलन है। गांवों में प्राय दूध दही के साथ ही सूखी सब्जियां कैर, सांगरी फे, खेलरा आदि का प्रयोग अधिकता से होता है। बीकानेर का भुजिया और रसगुल्ला तो भारत प्रसिद्ध है।

बीकानेर का स्त्री समाज आज सुधार पर है। पर्दा प्रथा आदि कुरीतियों का उन्मूलन होता जा रहा है। इसका मूल कारण शिक्षा का जिले में तीव्रगति से प्रचार व प्रसार है। शिक्षा विस्तार की दृष्टि से बीकानेर बहुत सौभाग्यशाली रहा

१- गौरीशंकर हीराचन्द ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास (पहला भाग) पृष्ठ २१

है। आज यहा सभी प्रकार की शिक्षा प्रदान करने वाली संस्थाए हैं। जैसे, मेडिकल कॉलेज टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज वेटरनरी कालेज, पोलीटेक्निक कालेज, आयुर्वेद महाविद्यालय संस्कृत महाविद्यालय आदि। यही नही अनेक ऐसे प्रयास किये जा रहे हैं जिससे भविष्य मे शीघ्र ही बीकानेर विश्वविद्यालय की भी आशा है। गाँवो मे भी यातायात के साधनो के साथ ही शिक्षा की समुचित व्यवस्था है। गांवो का जनजीवन शिक्षा के विषय म जागरूक प्रतीत होता है।

वेशभूषा म यहां पुरुषो के लिए धोती, कोट कुर्ता व पगडी का प्रचलन प्रमुख रहा है तथा औरतो के लिए घाघरा, साडी, काँचली व ओढनी का विशेष रिवाज रहा है। नगर मे आधुनिक साज सज्जा व प्रसाधन के साधनो का पूरा प्रयोग होता है।

विवाह प्रथा मे यहा के पुष्करणा ब्राह्मणो की विवाह प्रथा विशेष उल्लेखनीय है। इनका विवाह प्रति ४ वष की अवधि पर ही होता है। विवाह का मुहूर्त यहा के लब्ध प्रतिष्ठ ज्योतिषी शास्त्राथ के अनन्तर तय करते हैं। शास्त्राथ मानेश्वर महादेव के मन्दिर पर होता है।[1] विद्वानो द्वारा निश्चित सुमुहूर्त पर दो तीन हजार ब्राह्मण कुमार कुमारियो का विवाह एकसाथ सपन्न होता है। इस अवसर पर कलकत्ता, बम्बई आदि अन्य नगरो म निवास करने वाले ब्राह्मण भी यहाँ आ जाते हैं। पुष्करणा ब्राह्मणेतर वर्णों के विवाह सामान्य शुभ मुहूर्तों म भी सम्पन्न हो जाते हैं। पुष्करणा ब्राह्मणो के अतिरिक्त अन्य वर्गों मे दहेज प्रथा का प्रचलन है।

बीकानेर जिले की धार्मिक परिस्थिति

बीकानेर मे प्राय सभी धर्मों जैसे, वदिक, जन सिक्ख इस्लाम, इसाई आर्यसमाजी आदि के अनुयायी है किन्तु आधिक्य वदिक धर्मानुरागियो का है। वदिक धर्मानुयायियो म शव व शाक्त आदि की अपेक्षा वष्णवो की सख्या अधिक है। यहाँ की धार्मिक परिपाटी वष्णव धर्मानुकूल रही है। लक्ष्मीनाथ जी मरुनायक जी व मदनमोहन जी – ये तीन विशेष मदिर वष्णव भावना के प्रसार व प्रचार म

१– बीकानेर का अति प्राचीन शिव मन्दिर

विशेष सहायक हैं।[1] इसके अतिरिक्त अलख गिरि नामक का एक अलग धर्म सम्प्रदाय भी है।[2]

बीकानेर म त्योहारा का अपना विशिष्ट महत्त्व है। यहां भारत के प्रसिद्ध त्योहारा के साथ ही अक्षय तृतीया दीपावली व होली के उत्सव विशेष उल्लास से मनाए जाते हैं। अक्षय ततीया को यहां विशिष्ट भोजन 'खीचडा' व 'इमलानी' बनाए जाते हैं एव पतग उडाई जाती हैं। होली का क्रम ६ दिन

१— ये तीनो ही मन्दिर प्रसिद्ध एव प्राचीन हैं। ऐसा कहा जाता है कि राव बीकाजी के साथ ही 'सालोजी' व रतोजी' भी आए थे। लक्ष्मीनाथजी का मन्दिर तो राज मन्दिर है। 'सालोजी' न जो माहेश्वरी वैश्या के आदि पूवज थ, मरुनायक जी के मन्दिर की स्थापना बीकानेर बसने के साथ ही करवाई थी। पुन मोहता ने विक्रम सवत् १७१० मे श्री मदनमोहन जी के मन्दिर की स्थापना की।

इन तीना ही मदिरा म श्री मद्भागवत महापुराण' की कथा होती है। साथ ही इन मदिरा के पीछे जातियाँ बधी हुई हैं। मदिर के पीछे आबद्ध जातियां को अपने धार्मिक व पौराहित्यक काय 'बारीदार व्यास से सपन्न करवाने पडने हैं। बारीदार व्यास के अतिरिक्त इनके घरा मे श्रीमद्भागवत सप्ताह पारायण एव 'गरुड पुराण' की कथा नही बाच सकता। गाँवा म भी यदि इस प्रकार की कथा आदि का आयोजन करवाना हो तो इन तीनो मन्दिरा पर सूचना कर दी जाती है और वाचक बारीदार स्वत ही प्रबध करता है। व्यासा के पास इसका 'ताबा पत्र विद्यमान है। साराश म यहा की धार्मिक प्रवृत्ति वैष्णव सम्प्रदाय स अधिक प्रभावित है। इस बात की पुष्टि उपयु क्त मन्दिरो के विवचन से स्पष्ट हो जाती है।

२ — गौरीशकर हीराचन्द ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास (पहला भाग) पृष्ठ १८

तक चलता है । फाल्गुन शुक्ला ८ से १५ तक तो नगर के भिन्न भिन्न चौकों में रम्मत व ख्याल का आयोजन होता है ।[१] रात्रि में श्री मरुनायकजी के मंदिर में लगातार ६ दिन तक डांडिया का आयोजन किया जाता है एवं अन्य मंदिरों में उत्सव मनाए जाते हैं । धारण्डी को दम्मानियों के चौक में नाच एवं गान का विशिष्ट आयोजन होता है । आश्चर्य की बात तो यह है कि सम्पूर्ण बीकानेर निवासी एकत्र होकर प्रेम से एक दूसरे से गले मिलते हैं । साथ ही समकालीन समाज की स्थिति पर प्रकाश डालने वाले लोक प्रिय गीतों के गायन का आयोजन विभिन्न अखाड़े वाले एक साथ करते हैं। वस्तुतः यह त्योहार बीकानेर की सांस्कृतिक परम्पराओं में अपना विशिष्ट स्थान रखता है । इन त्योहारों के साथ ही यहां के दो स्त्रीत्योहार भी उल्लेखनीय हैं– ऊबछठ (चन्दन षष्ठी) व करवा चौथ (करक चतुर्थी) । दोनों ही दिन मरुनायकजी के मंदिर में सिवाय औरतों के और कोई भी नहीं जा सकता । वे अपने पूजा कार्य को समारोह पूर्वक सम्पन्न करती हैं ।

मेलों में यहां विशेष रूप से छोटीतीज को जसोलाई तलाई पर बड़ी तीज को गढ़ में तथा श्रावण की दशमी को शिवबाड़ी पर लगते हैं । इनके अतिरिक्त अति महत्त्व पूर्ण मेला श्री कोलायतजी का है । कोलायतजी बीकानेर से दक्षिण पश्चिम में स्थित है । यहां कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा को मेला लगता है। मेले पर कम से कम ५ ७ हजार व्यक्ति एकत्र होते हैं । नागा सन्यासी निरंजनी सतनामी आदि सभी मिलकर कपिल महामुनि की समाधि की पूजा करते हैं। यहां एक विशालकाय जलाशय है जिसे पुराणों में बिन्दु सरोवर की संज्ञा दी गई है। इस तालाब के किनारे पर ही परमयोगी सांख्याचार्य महामुनि कपिलदेव जी का

१— रम्मतों एवं ख्यालों का विशेष आयोजन इन चौकों में होता है–

(क) फरसोलाई तलाई
(ख) दम्मानियों का चौक
(ग) भट्टड़ों का चौक
(घ) बिस्सों का चौक
(ड) बारह गुवाड़
(च) आचार्यों का चौक

मंदिर है। ऐसी पुराणो की मान्यता है कि माँ देवहूति को कपिलदेव जी ने इसी स्थान पर सांख्य दर्शन का उपदेश दिया था।[1]

देशनोक मे, जो कि शहर से २० मील दक्षिण मे है, करणी जी का विशाल मंदिर है। इस मंदिर की निजी विशेषता है कि मन्दिर मे चूहे अत्यधिक हैं। ये चूहे 'काबा' नाम से पुकारे जाते हैं। माँ का प्रत्येक भक्त देशनोक जब जाता है तो इनके लिए भी भोजन सामग्री अवश्य ले जाता है। यह आश्चर्य की बात है कि प्लेग के फैलने पर भी यहा इन चूहो की पालना ही की जाती है और मा करणी की कृपा से यहाँ के निवासियो पर प्लेग का कोई प्रभाव नही पड़ता। यहाँ वर्ष मे दो बार नवरात्रि म मेले लगते हैं। इन मन्दिरो के अतिरिक्त देवी कु ड सागर की सतियो की चर्चा करनी भी उचित होगी। यहा पर बीकानेर के राजाओ के शवदाह किये जाते हैं एवं स्मृति म एक छतरी बनाई जाती है। इन छतरियो मे 'सती माता' की भी एक छतरी है जिसमे से दूध स्वत प्रस्फुटित हुआ करता था। वहा मे आता था क्या था ? यह कौतूहल का विषय है। जैन मन्दिरो मे श्री भांडासर जी का मंदिर, श्री चिन्तामणि जी का मंदिर पारसनाथ जी का मन्दिर आदि प्रसिद्ध हैं जहा प्रत्येक पर्व पर उत्सव मनाया जाता है। बीकानेर के मंदिरो मे श्री नागणेची जी का मंदिर भी प्रसिद्ध है।[2]

१— द्रष्टव्य श्री मद्भागवत महापुराण —

अ— तस्यासीत् पुण्यतम क्षेत्रं त्रैलोक्य विश्रुतम् ।
नाम्ना सिद्धिपदं यत्र सा ससिद्धिमुपेयुषी ॥
तस्मिन् बिन्दुसरेवासीत् भगवान् कपिल किल ॥
(तृतीयस्कंध अध्याय ३/श्लोक ३१-३३)

आ कपिलायतन तीर्थ महात्म्य में भी लिखा है —
"स करुणाकर कृपालु भगवान कपिल स्वकीये अत्यल्पे वयसि स्व मात्रे देवहूत्यै जगदुद्धारकारक सांख्ययोग च सविस्तरम् प्रोवाच उपदिष्टवान ॥"
पृ० ३५

२— गौरीशकर हीराचन्द ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास (प०भाग) पृ०२६

ये सभी मन्दिर यहा की धार्मिक प्रवृतिया एव परिस्थितिया को हमारे समक्ष प्रस्तुत करने म अपना विशेष महत्त्व रखते है । त्यौहारो पर स्त्रिया पीपल, वट तुलसी आदि का पूजन करती हैं।

राजनीतिक परिस्थितियाँ

बीकानेर राज्य की स्थापना से लेकर स्वाधीनता प्राप्ति के अनन्तर इस राज्य के भारतीय सघ म विलय होने तक यहा राठौड वश का एक छत्र शासन रहा। एक ही वश की परम्परा इस तथ्य को घोषित करती है कि इस राज्य के नरेश प्राणो की आहुती देकर भी राज्य रक्षण करते रहे । वस मुगलो के शासन काल म बीकानेर राज्य के उनस मत्रीपूर्ण सबध रहे किन्तु इस मत्री का आधार सौहार्द ही था कोई कूटनीतिक चाल या दौर्बल्य नही। कतिपय अवसर एस भी आए जब बीकानर नरेशो का मुगलो से सघर्ष भी हुआ । उदाहरण के लिए बाबर की मृत्यु के पश्चात् कामरा ने भटनेर (वर्तमान हनुमानगढ) पर अधिकार किया तथा बीकानर की ओर कदम बढाए किन्तु जतसी ने मुगलो की सेना को आगे नही बढने दिया।[1] तदनन्तर महाराजा कल्याणमल जी ने अकबर स घनिष्ठ मित्रता स्थापित करली जो मुगल सत्ता के पतन तक स्थायी बनी रही। समय समय पर बादशाहो द्वारा बीकानेर नरेश सम्मानित भी रहे।[2] औरगजेब के शासन काल म उसकी असहिष्णु नीतियो के फलस्वरूप अन्य राज्यो की भांति बीकानर के भी मुगलो स सबध नाम मात्र के रह गये। ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना के साथ देश म अग्रेजी सत्ता के कदम जम गये। अग्रजो से बीकानेर नरेशो के सबध नितान्त सौहार्दपूर्ण बन रहे। इसलिए अग्रेजी प्रशासन काल म बीकानेर राज्य का चतुर्मुखी विकास हुआ । विशेष रूप म महाराजा डूगरसिंह जी और गगासिंह जी के शासन काल म बीकानेर राज्य की अभूत पूर्व प्रगति हुई। डूगरसिंह जी निस्सन्तान थे। अत उन्होने अपने भाई गगासिंह को ही अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। गगासिंह जी का शासन काल बीकानेर

१—गौरीशकर हीराचन्द ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास (पहला भाग) पृष्ठ १२० १३२

२—गौरीशकर ओझा बीकानेर परिचय पृष्ठ ४२

राज्य के इतिहास का स्वर्णयुग कहा जा सकता है। उन्ही के समय में 'गंगनहर' का निर्माण हुआ जिसने मरुधरा को शस्यश्यामला बनाया। गंगासिंहजी ने अनेक प्रशासनिक सुधार एवं जनहित के कार्य किए। गंगासिंह जी की प्रशासनिक योग्यता एवं कौशल का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि उन्होंने अनेक बार अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत का प्रतिनिधित्व किया।

अंग्रेजों से मैत्रीपूर्ण संबंध होने के कारण तत्कालीन बीकानेर नरेश महाराजा गंगासिंह जी ने स्वाधीनता आंदोलन के मार्ग में निरन्तर गतिरोध उत्पन्न किया। उन्होंने अपनी सामर्थ्य भर यही प्रयत्न किया कि कोई भी राष्ट्रीय नेता राज्य में प्रविष्ट न हो। उदाहरण के लिए सन् १९२८ में जब सेठ जमनालाल ब्रह्मचर्य आश्रम के समारोह में रतनगढ़ आए तो उन्हें गाडी से उतरने का अवसर भी नहीं दिया।[१] किन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि बीकानेर में राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन के प्रति जनता सचेष्ट नहीं थी। देश के अन्य भागों की तरह यहां के जन जीवन में भी अदम्य उत्साह और स्वदेश प्रेम की भावना थी। यहाँ की जनता ने सर्व प्रथम रिश्वत खोरी के खिलाफ आंदोलन शुरू किया। यही आन्दोलन कालान्तर में अंग्रेज विरोधी रूप में परिणित हो गया। बीकानेर के प्रशासकों ने सन् १९३२ में कठोरता पूर्वक जन आन्दोलन को कुचलने के प्रयास प्रारंभ भी किए किंतु वे सफल न हो सके। प्रजामंडलों की स्थापना जैसे अन्य राज्यों में हुई वैसे यहां भी हुई किन्तु उन्हें पनपने नहीं दिया गया।[२] किंतु इस दिशा में बराबर प्रयत्न होते रहे और सन् १९३५ में श्रीमती लक्ष्मी देवी आचार्य की अध्यक्षता में बीकानेर राज्य प्रजा मंडल की स्थापना बीकानेर में हुई। जिसकी पहली बैठक ४ अक्टूबर १९३६ को रात्रि को 'रतन बाई ट्रस्ट' कलकत्ते में हुई। श्री मघाराम

१— श्री सत्यदेव विद्यालंकार बीकानेर का राजनीतिक विकास और

पंडित मघाराम वैद्य पृष्ठ १९

२— वही, पृष्ठ २५

मंडल के प्रधान चुने गये सन् १९३७ में ही मंडल के अध्यक्ष और मंत्री को बंदी बना लिया गया और मंडल समाप्त हो गया। २२ जुलाई सन १९४२ को रघुवर दयाल जी प्रभृति कर्मठ नेताओं के प्रयत्न से 'प्रजा परिषद्' की स्थापना की गई किन्तु यह संस्था भी दीर्घजीवी न रही। सन १९४२ में जो 'भारत छोड़ो' आन्दोलन छिड़ा था उसका उग्र प्रभाव बीकानेर में भी दिखाई दिया। ६ दिसंबर १९४२ को यहां झंडा सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ और २६ जनवरी १९४३ को स्वतन्त्रता दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया।[1] बीकानेर में प्रथम राजनीतिक सम्मेलन ३० जून व १ जुलाई सन १९४६ को रायसिंह नगर में मनाया गया। यद्यपि राज्य की ओर से तिरंगा फहराने की निषेधाज्ञा थी तथापि अपार जन समूह तिरंगे लेकर पहुँचा। इसी अवसर पर बीरबल सिंह शहीद हुए। १५ अगस्त सन १९४७ को जब देश स्वाधीन हुआ तो बीकानेर में भी महाराज शार्दूल सिंह जी के संरक्षण में यह उत्सव सोल्लास मनाया गया।

देश के विभाजन के फलस्वरूप बड़ी संख्या में पाकिस्तान से आये हुए शरणार्थियों को महाराजा श्री शार्दूल सिंह जी ने बीकानेर में शरण दी। यहां तक कि उन्होंने सुजानगढ़ स्थित अपने निजी भवन को भी शरणार्थियों को दे दिया।[2] इसी बीच देशी रियासतों के एकीकरण का कार्य सरदार पटेल के प्रयत्नों से प्रारम्भ हुआ। १० मार्च १९४९ को सरदार पटेल द्वारा वृहद् राजस्थान संघ का उद्घाटन किया गया जिसमें बीकानेर भी सम्मिलित था।

स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् देश के अन्य भागों की तरह बीकानेर में भी राजनैतिक चेतना और आधुनिकता के चिह्न दिखाई देते हैं। सन १९५२ में वयस्क मताधिकार के आधार पर सम्पन्न हुए आम चुनावों में अनेक राजनैतिक दलों जैसे — कांग्रेस, जनसंघ, स्वतंत्र, समाजवादी आदि के प्रत्याशियों ने चुनाव लड़े। बीकानेर नगर निर्वाचन क्षेत्र में प्रारम्भ से लेकर अब तक

१— डॉ० नरेन्द्र विद्यालंकार बीकानेर का राजनैतिक विकास व पद्धति
मधुमती वर्ष पृष्ठ १३९

— डॉ० करणी सिंह बीकानेर के राजघराने का केन्द्रीय सत्ता से संबंध
पृष्ठ ३८८

सपन्न हुए सभी चुनावों में ससद के लिए महाराजा करणीसिंह जी चुने गए। विधान सभा के लिए विभिन्न दलों के उम्मीदवार चुने जाते रहे हैं और आज स्थिति यह है कि सभी राजनीतिक दलों की गतिविधियां जिले में दिखाई देती है। निष्कर्षत यह कहा जा सकता है कि आज बीकानेर जिले के जन जीवन में राजनीतिक चेतना आदोलित है और सभी राजनीतिक विचार धाराओं के लोग देखे जा सकते हैं।

साहित्यिक परिस्थितियाँ

प्राचीन बीकानेर राज्य में कला एव साहित्य का विकास उसी प्रकार हुआ, जिस प्रकार सामन्तशाही वातावरण में इसकी अपेक्षा की जा सकती है। इसीलिए प्राचीन बीकानेर में साहित्यिक एव कलात्मक उपलब्धियाँ विशेष उल्लेखनीय नहीं रही। शासन वृद्धि की लिप्सा के कारण यहाँ के प्रशासकों को साहित्य के प्रसार व प्रचार की फुरसत ही नहीं थी। यदि सच्चे अर्थों में साहित्य का विकास प्रारम्भ हुआ तो वह राव बीका जी द्वारा बीकानेर राज्य की स्थापना के बाद ही।[१] यहाँ पुस्तकालयों एव जैन पुस्तक भडारों में बीकानेर राज्य स्थापना के पूर्व की भी हस्त लिखित पुस्तकें प्राप्त होती हैं किन्तु इनका सबध पूजा-पाठ से ही विशेष है।[२] अत राव बीका से ही हम सम्यक् साहित्य चेतना का आविर्भाव मान सकते हैं। बीका जी के बाद यहाँ के राजा प्राय स्वय साहित्य रचना किया करते थे एव विद्वानों को प्रश्रय देकर साहित्य सर्जना के लिए प्रोत्साहित करते रहते थे। शासक लेखकों में राव कल्याण मल जी के पुत्र पृथ्वीराज का स्थान मूर्धन्य है, जिनकी 'वेलि क्रिसन रुकमणी री' अद्यावधि भी राजस्थानी काव्य जगत् की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि मानी जाती है। वेलि के अतिरिक्त भी पृथ्वीराज ने फुटकर छन्दों में अनेक विषयों पर रचना की थी। वैष्णव होने के कारण राम और कृष्ण परक छन्द भी आपने लिखे। तदनन्तर

१—डॉ० दिवाकर शर्मा सस्कृत साहित्य के विकास में बीकानेर क्षेत्र का योगदान (अप्रकाशित शोध प्रबन्ध) पृ० ५४२

२—वही, पृ० २१

राजा रायसिंह (सन १६५७ – १६१२) भी स्वयं साहित्य प्रेमी थे। आपका संस्कृत तथा हिन्दी दोनों पर समान अधिकार था एवं दोनों ही में कविता करते थे। ज्योतिष शास्त्र का भी इन्हें अच्छा ज्ञान था। ज्योतिष की कृतियां में 'राय सिंह महोत्सव' तथा 'ज्योतिष रत्नाकर' गणित व फलित दोनों ही प्रकार से परम उपयोगी हैं।[1] रायसिंह ने विद्वानों को भी प्रोत्साहित किया। आपके ही आश्रय में जैन साधु विमल ने शान्त भेद की टीका लिखी। कर्ण सिंह (सन १६३१–१६६६) के समय साहित्य सर्जना का विकास अनेक विधाओं के रूप में हुआ। उनके शासन काल में काव्य के शास्त्रीय पक्ष पर भी अनेक ग्रन्थों का निर्माण हुआ। अब तक के प्राप्त ग्रन्थों[2] की गणना इस प्रकार की जा सकती है —

१– साहित्य कल्पद्रुम — इसकी रचना स्वयं महाराज ने अनेक मनीषियों की सहायता से की।

२– कवि संतोष — कवि मुद्गल
३– कर्ण भूषण — गंगानन्द मैथिल
४– कर्णावतंस — भट्ट होसिहक
५– काव्य डाकिनी — गंगादान मैथिल
६– वृत्त सारावली

तदुपरान्त बीकानेर की साहित्य सर्जना का वह युग आता है जिसे हम स्वर्ण युग भी कह दें तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। वह युग था महाराजा अनूप सिंह जी का। महाराजा स्वयं साहित्य एवं कला के प्रकाण्ड पंडित थे। आपने कई ग्रन्थों की रचना की तथा अनेक ग्रन्थों की टीका भी लिखी। उनकी रचनाओं में 'अनूप विवेक' (तंत्र शास्त्र) 'काम प्रबोध' (काम शास्त्र) व 'श्राद्ध प्रयोग चिंतामणि' (कर्मकाण्ड) प्रमुख हैं। महाराजा कृत टीकाओं

१— गौरीशंकर हीराचन्द ओझा — बीकानेर राज्य का इतिहास (पहला भाग) पृष्ठ २०१२

२— वही पृ० २२२ ४३

। 'गीत गोविन्द' की 'अनूपोन्द्र टीका' विद्वद् समाज में अधिक प्रतिष्ठा प्राप्त है। महाराजा ने विद्वानों का समादर के साथ प्रश्रय देकर भी अनेक ग्रन्थों[1] की रचना करवाई जिनका वर्णन इस प्रकार है —

१– ध्यात्मनिसार	—	वैद्यनाथ
२– अनूप व्यवहार सागर	—	मणि राम दीक्षित
३– अनूप विलास	—	मणि राम दीक्षित
४– तीर्थ रत्नाकर	—	अनन्त भट्ट
५– पाण्डित्य दर्पण	—	श्वेताम्बर उदयचन्द्र
६– अयुत लक्षकोटि होम प्रयोग	—	भद्र राम

अनूपसिंह जी ने राजस्थानी भाषा के प्रति उदारता का परिचय दिया एवं 'शुक सारिका' की कथाओं का भी अनुवाद कराया एवं राजस्थानी ग्रन्थों की भी रचना कराई। साथ-साथ संगीत के भी महाराजा मर्मज्ञ थे। अतः आपके समय में भावभट्ट ने 'संगीत अनूपांकुश' अनूप संगीत विलास तथा 'अनूप संगीत रत्नाकर' नामक ग्रन्थों की रचना की।[2] सारांश में अनूपसिंह जी का साहित्य व कला प्रेम स्तुत्य है। आज भी बीकानेर में स्थापित भारत प्रसिद्ध 'अनूप संस्कृत लाइब्रेरी' उनके साहित्य प्रेम को प्रकट कर रही है।

महाराजा जोरावर सिंह जी भी साहित्य प्रेमी थे। आपने 'वैद्य सागर' और 'पूजा पद्धति' नामक दो ग्रन्थों की रचना की। भाषा (हिन्दी) में आपने 'कवि प्रिया' और 'रसिक प्रिया' की टीका भी लिखी। महाराजा गजसिंह जी (सन १७४५ - १७८७) के काल में राजस्थानी भाषा में अनेक ग्रन्थ रचे गये। 'जस रूपक' तथा 'महाराजा गज सिंह जी रा गीत कवित्त दूहा

१— गौरीशंकर हीराचन्द ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास (पहला भाग) पृ० २८०

२— वही, पृ० २८७

नामक ग्रंथ लिखे। इसी प्रकार बीकानेर के महाराजा रतन सिंह जी भी साहित्य में सतत् प्रयत्नशील रहे। आपके युग में 'रतन विलास' 'रतनरूपक' और रतनजस रूपक आदि ग्रन्थों की रचना हुई। तदुपरांत महाराजा डूगरसिंह जी का युग आता है। आपने बीकानेर में साहित्य के साथ ही शिक्षा के प्रचार प्रसारार्थ अनेक शिक्षा संस्थाएं भी खुलवाई। डूंगरसिंह जी के अनन्तर गंगासिंह जी सिंहासनारूढ हुए। आपने तो बीकानेर की हर प्रकार की उन्नति की। आपने सन १९१२ में रजत जयंती के अवसर पर डूंगर मेमोरियल कॉलेज का उद्घाटन किया। साथ ही नगर की सुप्रसिद्ध साहित्यिक संस्था 'जुबली नागरी भंडार' के भवन निर्माण हेतु भूमि प्रदान की। इसी संस्था के सदस्यों द्वारा एक स्वर में माग करने पर महाराजा ने कचहरी की भाषा भी हिन्दी करदी। 'गंगा संस्कृत पाठशाला' की स्थापना कर महाराजा ने संस्कृत भाषा के प्रति भी अपनी उदारता का परिचय दिया।

सन १९४३ में महाराजा गंगासिंह जी का देहान्त हुआ। महाराजा शार्दूल सिंह जी ने शासन भार सम्हाला। आपके युग में साहित्यिक वातावरण में नव चेतना की लहर दौड़ पड़ी एवं अनेक साहित्यिक संस्थाओं की भी स्थापना हुई। स्वयं महाराजा की ४२ वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में सन १९४४ में 'श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट' की स्थापना की गई जिसका आज भी बीकानेर की साहित्यिक संस्थाओं में उल्लेखनीय स्थान है। शार्दूलसिंह जी उदारचेता व्यक्ति थे। यही कारण है कि उन्होंने सिंहासनासीन होते ही उन साहित्यकारों को जिन्हें आन्दोलनकारी प्रवृत्तियों के कारण बन्दी बना लिया गया था स्वतन्त्र कर दिया। शिक्षा के प्रचार व प्रसार में आपका योगदान अविस्मरणीय है। बीकानेर में संस्कृत कॉलेज का अभाव था जिसे आपने ही श्री शार्दूल संस्कृत विद्यापीठ व श्री शार्दूल ब्रह्मचर्याश्रम की स्थापना करके दूर किया। इसके साथ ही श्री शार्दूल पुष्करणा हाई स्कूल' का भी उद्घाटन आपके ही कर कमलों द्वारा हुआ। महाराजा ने साहित्य की प्रगति हेतु श्रेष्ठ साहित्यकारों को पुरस्कार व मेधावी छात्रों के लिए छात्रवृत्तियों की योजनाएं प्रारम्भ की।

१० माच १९४६ ई० को भारत का पुनगठन हुआ। सारे देश मे ही राजनीतिक चेतना के साथ साथ नवीन साहित्य चेतना भी जागत हुई। फल स्वरूप बीकानेर जिले म भी अनेक साहित्यिक सस्थाए स्थापित हुई। प्राचीन साहित्यिक सस्थाओ का पुनरुद्धार किया गया। साथ ही प्राचीन और नई पीढ़ी के साहित्यकारो ने विपुल परिमाण म समसामयिक सामाजिक एव सास्कृतिक चेतना स प्रेरित होकर साहित्यिक सजना का काय प्रारम्भ किया। आज नगर म अनेक छोटी बड़ी साहित्यिक सस्थाएँ बीकानेर की साहित्यिक चेतना का ज्वलत प्रमाण है। इनम उल्लखनीय हैं श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीच्यूट श्री अभय जैन ग्रथालय भारतीय विद्यामदिर शोध प्रतिष्ठान, राजस्थानी भाषा प्रचार प्रकाशन सस्थान, वातायन सस्थान श्री जुबली नागरी भडार, हिन्दी विश्व भारती, सहिता तथा गुण प्रकाशक सज्जनालय।

इन सस्थाओ द्वारा एक ओर उच्चस्तरीय शोध काय सम्पन्न किया जा रहा है तो दूसरी ओर विचार सगोष्ठियो पत्र पत्रिकाओ एव साहित्यिक ग्रथो के प्रकाशन का काय भी सम्पन्न हो रहा है। नगर के सजनशील साहित्यकारो की सजनात्मक मेधा को अभिव्यक्ति प्रदान करने का भी माध्यम ये सस्थाएँ बनी हुई हैं। पुरानी पीढ़ी के जो साहित्यकार इन सस्थाओ म सबद्ध हैं उनम सव श्री शम्भूदयाल सक्सेना डॉ० दशरथ शर्मा विद्याधर जी शास्त्री, अगरचन्द नाहटा ठाकुर रामसिह नरोत्तमदास स्वामी, मुरलीधर व्यास, जुगलसिह खीची व डॉ० छगन मोहता के नाम उल्लेखनीय हैं। नवीन पीढ़ी के साहित्यकारो मे सव श्री- हरीश भादानी मगन सक्सना, यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' धनजय वर्मा, प्रेम सक्सेना, राजानन्द भटनागर प्रवान परिमल अशोक आत्रेय डा० पुष्कर शर्मा, योगेन्द्र-किसलय, प्रो० रामदेव आचाय, भवानी शकर व्यास, डॉ० महावीर दाधीच, डा० मदन केवलिया आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय है। नई और पुरानी पीढ़ी के उल्लिखित रचनाकार साहित्य की नाना विधाओ जसे, कविता, कहानी, उपन्यास नाटक, निबध, समालोचना, रेखा चित्र, ससमरण, रेडियो रूपक एव शोध को अपनी अमूल्य रचनाओ द्वारा समद्ध कर रहे हैं। इनम से अधिकाश के नाम अखिल भारतीय स्तर की पत्र पत्रिकाओ में आए दिन प्रकाशित होते रहते हैं।

साहित्य अकादमियों द्वारा इनमें से अनेक पुरस्कृत किए जा चुके हैं। राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर ने श्री विद्याधर जी शास्त्री को विद्यावाचस्पति की उपाधि एवं श्री हरीश भादानी को उनके काव्य संकलन 'एक उजली नजर की सुई' पर एक हजार रुपयों के पुरस्कार से सम्मानित किया है। इसी प्रकार श्री शम्भूदयाल सक्सेना व यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' अपनी अनेक कृतियों के लिए एवं श्री अगरचन्द नाहटा जैन साहित्य संबंधी शोध कार्य के लिए विभिन्न अवसरों पर सम्मानित किए गए हैं। राजस्थानी भाषा और साहित्य, जैन तथा लोक साहित्य से संबंधित महत्त्वपूर्ण शोध कार्य भी नगर की साहित्यिक संस्थाएँ संपन्न कर रही हैं। आज के बीकानेर में प्रबुद्ध साहित्यिक वातावरण सर्वत्र परिलक्षित होता है जो नगर की विकसित साहित्यिक चेतना का ज्वलंत प्रमाण है।

अध्याय / २

बीकानेर की साहित्यिक संस्थाओं का परिचय और इतिहास

मानव एक सामाजिक प्राणी है। सामाजिकता की प्रवृत्ति के ही कारण वह सृष्टि के अन्य प्राणियों की तुलना में श्रेष्ठ माना जाता है। सामाजिकता की भावना ही संस्थाओं की जन्मदात्री होती है। यद्यपि साहित्य संरचना का क्रम स्रष्टा (साहित्यकार) के मानस जगत् से प्रादुर्भूत होता है किन्तु अभिव्यक्ति के अनन्तर वही सार्वजनिक बन जाता है। इसी प्रकार साहित्यकार की अनुभूति यद्यपि वैयक्तिक होती है किन्तु अनुभूति का स्रोत सामाजिक जीवन और चतुर्दिक वातावरण ही होता है। अतः यह निस्सन्देह कहा जा सकता है कि साहित्य और समाज का अन्योन्याश्रय संबंध है। सामाजिक जीवन और परिवेश ही साहित्यिक सृजना को जीवन और गति प्रदान करते हैं। मानव स्वभाव की सर्वत्र समानता के कारण यद्यपि साहित्य के अन्तस्तल में देश भेद से कोई विशेष भेद नहीं होता तथापि प्रत्येक प्रदेश की स्थानीय विशेषताओं के प्रभाव से साहित्य सृजना अछूती नहीं रह सकती। प्रकृति ने मरु प्रदेश बीकानेर को रुक्ष अवश्य बनाया है किंतु इसका मस्तिष्क इतना उर्वर और हृदय इतना सरस है कि इसमें से प्रवाहित होने वाली मधुर रसमयी वाग्धारा अलक्षित होकर भी साहित्योद्यान को विकसित करती रही है। जल की गहराई के साथ साथ यहाँ के साहित्य में भी पूर्ण गहराई है। यही कारण है कि बीकानेर में सामंती काल से लेकर अद्यावधि साहित्य संरचना

की स्तोत्रस्विनी अनवरत प्रवाहित हो रही है। इस तथ्य की संपुष्टि यहाँ के सजीव एवं समुन्नत साहित्यिक वातावरण से हो जाती है। बीकानेर के इस साहित्यिक वातावरण के निर्माण में प्रारंभ से ही साहित्यिक संस्थाओं का अपना विशिष्ट स्थान रहा है। समय समय पर संस्थापित इन संस्थाओं का श्रेय सब श्री कृष्णा गोपाल जी तिवाड़ी विद्याधर जी शास्त्री ठाकुर रामसिंह नरोत्तमदास स्वामी डॉ० दशरथ जी शर्मा सूर्यकरण जी पारीक मुरलीधर जी व्यास, शिवचन्द जी भरतिया तथा अगरचन्द जी नाहटा प्रभृति विद्वानों को ही दिया जा सकता है। इन सभी की अपनी अनोखी साहित्यिक प्रतिभा तथा साहित्य सेवा भावना रही है जिसका परिचय हम बीकानेर की विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं के व्यापक कार्य क्षेत्र एवं गतिविधियों से मिल जाता है।

बीकानेर की साहित्यिक संस्थाओं के ऐतिहासिक विकास क्रम पर दृष्टि पात करने से ज्ञात होता है कि साहित्यिक संस्थाओं का प्रारंभिक स्वरूप नगर की साहित्यिक सगोष्ठियों के रूप में विकसित हुआ। कालान्तर में इन संस्थाओं से संबंधित प्रामाणिक जानकारी के अभाव में केवल नगर के साहित्यकारों से उपलब्ध मौखिक जानकारी के आधार पर इनका नामोल्लेख मात्र ही किया जा सकता है। फिर भी नगर की इन प्रारम्भिक संस्थाओं में राजस्थानी साहित्य पीठ प्रगतिशील युवक संघ साहित्य संघ नरमल साहित्य सदन आदि प्रमुख रही हैं। इन सभी संस्थाओं में प्रतिसप्ताह गोष्ठी हुआ करती थी, जिसमें प्रत्येक सदस्य के लिए यह अनिवार्य प्रतिबंध था कि वह गद्य अथवा पद्य में स्वरचित रचना लाए एवं पत्रवाचन के रूप में उसे गोष्ठी में पढ़े। इस प्रकार इन संस्थाओं में उस समय के सामाजिक राजनीतिक सांस्कृतिक और साहित्यिक वातावरण से ओतप्रोत कविताओं कहानियों आदि का अच्छा खासा संग्रह संकलित हो गया। यह संकलन आज भी श्री विद्याधर जी के पास हस्तलिखित रूप में सुरक्षित है। इन संस्थाओं के प्रमुख कार्यकर्ता स्व० चन्द्रदेव श्री कन्हैयालाल गोस्वामी श्री विद्याधर जी, श्री नरोत्तमदास जी श्री अगरचन्द जी आदि ही थे।

तत्पश्चात् अनेक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक संस्थाएँ नगर में स्थापित होती गई जिनका कार्यक्षेत्र एवं महत्त्व की दृष्टि से विवरण निम्नांकित है-

१— श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट, बीकानेर।
२— श्री अभय जैन ग्रन्थालय, नाहटा की गुवाड़, बीकानेर।
३— भारतीय विद्यामंदिर शोध प्रतिष्ठान, रतन बिहारी जी का पार्क बीकानेर।
४— राजस्थानी भाषा प्रचार प्रकाशन संस्थान, ५/६००,कोटगेट,बीकानेर।
५— वातायन, डागा बिल्डिंग, बीकानेर।
६— हिन्दी विश्व भारती, स्टेशन रोड, बीकानेर।
७— श्री तुलसी नागरी भंडार, स्टेशन रोड, बीकानेर।
८— संहिता, आचार्यों की घाटी बीकानेर।
९— गुण प्रकाश सज्जनालय, कोटगेट के अन्दर, बीकानेर।

श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट

बीकानेर की साहित्यिक संस्थाओं में सर्वाधिक महत्त्व श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट का है। इस संस्था की स्थापना संस्कृत, हिन्दी एवं विशेषतः राजस्थानी साहित्य की सेवा तथा राजस्थानी भाषा के सर्वांगीण विकास के लिए की गई थी। १२ नवम्बर १९४४ को बीकानेर के स्व० महाराजा श्री सादूलसिंह जी ने अपनी ४२ वीं वर्षगांठ के अवसर पर इसका उद्घाटन किया। संस्था की स्थापना का सर्वाधिक श्रेय तत्कालीन प्रधान मंत्री (बीकानेर) श्री के० एम० पणिक्कर महोदय को है।[१] आपने मंत्री पद के भार का सम्हालते हुए साहित्यिक गतिविधियों को विकसित करने तथा राजस्थानी भाषा एवं साहित्य विषयक शोध कार्य को सम्पन्न कराने हेतु महाराजा श्री सादूलसिंह जी को ऐसी संस्था के निर्माण हेतु प्रेरित एवं प्रोत्साहित किया। फलतः इस संस्था की स्थापना हुई।

१— राजस्थान भारती

सन् १९४६ की इन्स्टीट्यूट की विवरण पत्रिका के अनुसार इस संस्था के प्रथम पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता निम्नांकित थे—

संरक्षक— महाराजाधिराज श्री सादूल सिंह जी बहादुर सी॰ बी॰ ओ॰ बीकानेर नरेश।

उपसंरक्षक— मेजर महाकुमार श्री करणीसिंह जी बहादुर कप्तिन महाराज कुमार श्री अमर सिंह जी बहादुर।

अधिष्ठाता— श्री के॰ एम॰ पणिक्कर एम॰ ए॰ (आक्सन) बार एट-ला

अध्यक्ष— ठाकुर रामसिंह जी एम॰ ए॰ विद्यारत्न डा॰ दशरथ शर्मा (१९४६–१९४८)

साहित्य मंत्री— प्रो॰ नरोत्तमदास जी स्वामी एम॰ ए॰ विद्यामहोदधि

कोष मंत्री— सेठ अगरचन्द नाहटा

प्रधान मंत्री— प्रो॰ नाथूराम खड्गावत एम॰ ए॰

साहित्य समिति

ठा॰ रामसिंह जी,	— भाषा और साहित्य विभाग
डा॰ दशरथ शर्मा	— इतिहास पुरातत्त्व विभाग
डा॰ विद्याधर शास्त्री	— भाषण और निबंध विभाग
पं॰ मुरलीधर व्यास	— लोक साहित्य विभाग
अगरचन्द नाहटा	— संग्रहालय विभाग
खुशाल चन्द डागा	— कला कौशल विभाग
शम्भुदान सठिया	— समाज विज्ञान विभाग
प्रो॰ मीनाराम रंगा	— पुस्तकालय विभाग
प्रो॰ नाथूराम खड्गावत	— प्रकाशन एवं प्रचार विभाग
प्रो॰ नरोत्तमदास स्वामी	— मुखपत्रिका विभाग

संस्था पदाधिकारियों एवं साहित्य समिति के सदस्यों की नामावली से स्पष्ट प्रतीत होता है कि नगर के सभी गण्यमान्य लेखक एवं विद्वान् इस संस्था से सम्बद्ध थे। अस्तु! आरम्भ से ही संस्था की महत्त्वपूर्ण साहित्यिक गतिविधियाँ

प्रारम्भ हो गई । इन्स्टीट्यूट की 'राजस्थान भारती' शोध पत्रिका के माध्यम से संस्था की प्रारम्भिक गतिविधियों का अप्रकाशित विवरण प्राप्त हो जाता है। ठाकुर रामसिंह प्रो० नरोत्तमदास स्वामी, विद्याधर शास्त्री प्रभृति विद्वानों के प्रयत्नों में संस्था अनेक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक समायोजन करती रही । स्थापना से लेकर सन् १९५२ तक स्व० नाथूराम खड्गावत (भूतपूर्व अध्यक्ष - पुरातत्त्व विभाग, राजस्थान) संस्था के महासचिव के रूप में गतिविधियों को संचालित करते रहे । सन् १९५३ से ५६ तक श्री अक्षय चन्द्र जी शर्मा संस्था के महासचिव रहे । इनके कार्यकाल में ही राजस्थानी भाषा और साहित्य के कोविद डा० टेसीटोरी दिवस का समायोजन प्रारम्भ हुआ और उन्हीं के नाम से भाषणपीठ स्थापित किया गया जिसके अन्तर्गत आज तक मूर्धन्य विद्वानों के अभिभाषण होते हैं । इनके पश्चात् श्री लालचन्द जी कोठारी सन् १९५६ लेकर सन् १९६८ तक संस्था के महासचिव रहे और श्री अगरचन्द नाहटा संस्था के अध्यक्ष पद पर आसीन रहे । इनके कार्यकाल में अनेक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक ग्रंथों का प्रकाशन हुआ । साथ ही बीकानेर में उपलब्ध हस्तलिखित विभिन्न ग्रंथों के सूचीपत्र भी बनाए गए । इन ग्रंथों की संख्या लगभग ढाई लाख है । १८ मार्च सन् १९६९ ई० को संस्था के फलो सदस्यों (सदस्य विशेष) द्वारा नई कार्यकारिणी का निर्वाचन सम्पन्न हुआ, जिसमें निम्नांकित पदाधिकारी निर्वाचित हुए—

१— निर्देशक — ठाकुर रामसिंह जी

२— प्रधान सचिव — श्री गोपाल जोशी

३— साहित्य मंत्री — श्री यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

४— कोषाध्यक्ष — श्री दामोदरदास मोहता

साहित्य परिषद्

१ राजवी श्री अमर सिंह

२- डा० रामसिंह

३ ठा० सगत सिंह

४ श्री शम्भूदयाल सक्सेना

५ श्री चन्द्रदान चारण

६ श्री यादवेन्द्र चन्द्र

७ श्री दीना नाथ खत्री

८ श्री दामोदर दास मोहता

९ श्री जसवन्त सिंह शास्त्री १० श्री गोपाल कृष्ण जोशी
११ श्री सत्यनारायण पारीक

श्री अभय जैन ग्रंथालय

बीकानेर की उन साहित्यिक संस्थाओं में जिन्होंने साहित्य के साथ ललित कला के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय योगदान किया है इस संस्था का विशिष्ट स्थान है। संस्था की स्थापना सन् १९२० में श्री अभय राज नाहटा की स्मृति में की गई थी। संस्था का प्रारम्भ तो केवल पुस्तकालय के रूप में ही हुआ था किन्तु आज श्री अगरचन्द नाहटा जैसे विद्वान एवं कर्मठ संचालक की साधना के फलस्वरूप यह ग्रंथालय ही नहीं अपितु साहित्यिक शोध का भी महत्त्वपूर्ण संस्थान है। इसके अतिरिक्त संगोष्ठियाँ, शोध कार्य निर्देशन, प्राचीन ग्रंथ प्रकाशन एवं कलात्मक उपकरण संचय आदि भी इस संस्था की उल्लेखनीय प्रवृत्तियाँ हैं।

संस्था में ६० हजार से भी अधिक हस्तलिखित और मुद्रित ग्रंथ है। हस्त लिखित ग्रंथ ४० हजार है जिनमें पत्राकार हस्तलिखित ग्रंथ २५ हजार एवं गुटकाकार १५ हजार हैं। शेष २० हजार मुद्रित पुस्तकें हैं। इन ग्रंथों की विशद विवरण सूची का निर्माण ग्रंथालय द्वारा किया गया है। इनमें संस्कृत प्राकृत अपभ्रंश हिन्दी राजस्थानी व गुजराती आदि भाषाओं के ग्रंथ नागरी गुजराती बंगला उड़िया आदि लिपियों में सन् १२८३ से लगाकर २० वीं शताब्दी तक के ग्रंथ उपलब्ध हैं। ग्रंथ ताड़पत्र भोजपत्र एवं कागजों पर लिखे गए हैं। सभी का संक्षिप्त विवेचन इस प्रकार है

ताडपत्रीय ग्रंथ

नागरी लिपि के ताडपत्रीय ग्रंथों में पाशुपताचार्य वामेश्वरध्वज कृत प्रबोध सिद्धि नामक न्याय ग्रंथ उल्लेखनीय है। बंगला लिपि में ताडपत्रीय ग्रंथों में सविवृत्ति' चण्डीदेवी महात्म्य आदि प्रतियां तथा उत्कल लिपि में ब्रह्मविद्या यंत्र'-और 'भागवत' आदि की प्रतियां हैं। नागरी लिपि की प्रतियां १४वीं

शताब्दी की बंगला लिपि की प्रतियाँ १७वी शताब्दी की तथा उत्तरल प्रतियाँ आधुनिक कालीन हैं।

कागज पर लिखे ग्रंथ

सन् १३४३ से लगाकर २० वी शताब्दी तक हस्तलिखित ग्रंथो की संख्या लगभग १५ हजार है। ये सब पत्राकार हैं। इनमे संस्कृत प्राकृत अपभ्रंश हिन्दी राजस्थानी तथा गुजराती आदि भाषाओं की हस्तलिखित प्रतियो का संग्रह है।

विविध विषयक ग्रंथ

प्रस्तुत संग्रहालय की हस्तलिखित प्रतियो में सभी विषयो के ग्रंथ हैं। जैसे, जैन आगम प्रकरण, कथायें रास, स्तुति स्तोत्र ऐतिहासिक तीर्थमालायें, आचार्य एवं श्रावकों के रास, नगर वर्णनात्मक गजलें बावनी, छत्तीसी, संवाद पूजायें विधि विधान संस्कृत टीकायें व्याकरण काव्य, कोश अलंकार छन्द ज्योतिष वैद्यक मन्त्र-तन्त्र आदि ग्रंथो के साथ ही जैनेतर सम्प्रदायों के धार्मिक ग्रंथ, स्तोत्र शकुन सामुद्रिक, स्वरोदय रत्न-परीक्षा राजस्थानी में रचित वार्तायें, गीत, दोहे, वलि, सलोका छन्द धमाल विवाह खंड आदि विविध विषयक ग्रंथ भी हैं।

ऐतिहासिक साहित्य

इस संग्रहालय की एक बड़ी विशेषता ऐतिहासिक साहित्य की प्रचुरता है। ऐतिहासिक साहित्य के अनेक निम्नांकित रूप संस्था के संग्रह में देखे जा सकते हैं–

(अ) वंशावलियां

प्राचीन काल से प्रत्येक जाति अपनी वंशावली सुरक्षित रखने का प्रयत्न करती चली आरही है। प्रत्येक जाति के भाट कुल गुरु आदि नियुक्त है जिनका पेशा ही अपनी अपनी संबंधित जातियो की वंशावलियाँ लिखते रहने का है। हमारी उपेक्षा के कारण प्राचीन वंशावलियो की सुरक्षा को महत्त्व नही दिया गया, अतः बहुत सी वंशावलियाँ नष्ट हो गई और जो कुछ कुल गुरु एवं भाट आदि के पास अवशेष है उन्हें भी वे लोग दिखाते नही, इसलिए उनका होना न होना समान सा है। संग्रहालय में एतद् विषयक सामग्री एकत्र की गई है।

(आ) तीर्थ मालाएं

भारत के भौगोलिक साधनो में जैन तीर्थ मालाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। इस ग्रंथालय में भिन्न भिन्न स्थानों की तीर्थ मालायें तथा चैत्य परिपाटियाँ प्रचुर परिमाण में एकत्र की गई है।

(इ) पट्टावलियाँ

जैन श्रमण संघ के विविध गच्छों का इतिहास उनकी पट्टावलियों में पाया जाता है। खरतरगच्छ, तपागच्छ की कई शाखाओं एवं बहद्गच्छ, पल्लीवालगच्छ तथा लुकागच्छ की पट्टावलियाँ संस्था में संग्रहित हैं।

(ई) नगर वर्णनात्मक गजलें

१७ वीं शताब्दी से लेकर वर्तमान तक जैन कवियों ने भारत के अनेक नगरों का बड़ा ही सुन्दर वर्णन अपने इस साहित्य में किया है। प्रस्तुत संग्रह में इस प्रकार का जितना साहित्य उपलब्ध है उतना अन्यत्र कहीं भी नहीं।

राजाओं के पत्र और खास रुक्के

राजपूत नरेशों से जैनाचार्यों एवं जैन समाज का शताब्दियों से घनिष्ठ संबंध रहा है। राजा महाराजाओं ने समय समय पर जैनाचार्यों को पत्र लिखे और जैन धर्म को परवाने दिये। उनका भी कुछ संग्रह प्रस्तुत संग्रहालय में किया गया है जिनमें से बीकानेर के महाराजा अनूप सिंह जी और सुजान सिंह जी के पत्र अत्यन्त महत्वपूर्ण है। बीकानेर नरेश सूरत सिंह जी जैन योगिराज श्री ज्ञान सार जी के अनन्य भक्त थे। महाराजा ने अपने हस्ताक्षरों में बहुत से लम्बे पत्र आपको लिखे थे। जिनमें से अनेक खास रुक्के इस संस्था में सुरक्षित है। जैसलमेर के महारावल गजसिंह जी का खास रुक्का भी संस्था में सुरक्षित है जिसका विविध दृष्टि से बहुत महत्व है।

जैनाचार्य अपने आज्ञानुवर्ती मुनियों को विहार एवं चतुर्मास करने के लिए आदेश पत्र भेजते रहते थे। उनके द्वारा किस संवत् में किस आचार्य और किस मुनि को किस स्थान विशेष पर चातुर्मास करने की आज्ञा दी गई आदि का विवेचन इन आदेश पत्रों में पाया जाता है जिनका संग्रह इस संस्था में किया गया है। आचार्यों के पीयू पगाड़ि के समाचारों के रूप में जन संघ को प्रेषित पत्र भी तत्कालीन धार्मिक वातावरण स्थान स्थान के मुखिया श्रावक तथा उनके धर्म कृत्य आदि पर अच्छा प्रकाश डालते हैं। ऐसे पत्रों का वृहद संग्रह इस संग्रहालय में प्राप्त होता है।

विभिन्न ज्ञान भण्डारों के सूची-पत्र

बीकानेर के जो वृहद ज्ञान भण्डारों में से श्री जिनकृपाचन्द्र सूरि ज्ञान भण्डार बोहरा की सेरी ज्ञान भण्डार तथा यति जय चंद जी के ज्ञान भण्डार में प्राप्त हस्तलिखित ग्रन्थों की सूचियाँ तो इसी ग्रन्थालय में तैयार की गई। इसके अतिरिक्त स्थानीय अन्य भण्डारों की सूचियाँ के साथ ही साथ सेठिया लाइब्रेरी तथा अनूप संस्कृत लाइब्रेरी के जैन ग्रन्थों की सूची भी यहाँ प्राप्य है। स्थानीय ज्ञान भण्डारों के सूचीपत्रों के अतिरिक्त जैसलमेर पाटण जयपुर कोटा फलोदी अम्बाला बम्बई आदि के ज्ञान भण्डारों की सूचियाँ और आगरा लाहौर कलकत्ता बालोतरा, सरदार शहर चूरू तथा भावनगर आदि पच्चासों ज्ञान भण्डारों के ग्रन्थों के आवश्यक नोट्स (Notes) इस संग्रहालय में सुरक्षित हैं। संक्षेप में कहा जाय तो एक लाख से भी अधिक हस्तलिखित प्रतियों की सूची एवं जानकारी इस संग्रहालय से प्राप्त की जा सकती है।

लेखन कला के सुन्दर उदाहरण

लेखन कला की दृष्टि से भी ग्रन्थालय के संग्रह उल्लेखनीय हैं। १६ वीं शताब्दी का एक गुटका संग्रहालय में सुरक्षित है जो स्वर्ण व रजतमय

अक्षरों में लिखित है। इसके लिपि चित्र तथा हाशिये पर चित्रित बेल-बूटे विशेष आकर्षक हैं। इस प्रकार की प्रतियों [redacted] स्वर्ण व रौप्याक्षरों में लिखित 'कल्प-सूत्र' सूक्ष्माक्षरों में लिखित त्रिपाठ तथा रंग बिरंगे अक्षरों में लिखित 'भागवत' की प्रति विशेष उल्लेखनीय है।

विद्वानों के हस्ताक्षर, पचांग व जन्मपत्रियाँ

संग्रहालय में अनेक विद्वानों के हस्ताक्षर सुरक्षित हैं। इसके साथ ही संवत् १७०१ से लेकर आज तक के सभी पचांग उपलब्ध होते हैं। बीकानेर नरेशों की जन्मपत्रियाँ भी संग्रहालय में संग्रहित की गई हैं।

दुर्लभ ग्रन्थों की प्रेस कापियां

प्राचीन प्रतियों के अतिरिक्त अन्य संग्रहालयों की ऐतिहासिक एवं महत्त्वपूर्ण दुर्लभ पुस्तकें यहाँ प्रेस कापियों के रूप में सुरक्षित हैं।

प्रसिद्ध कवियों का साहित्य-संग्रह

ग्रन्थालय द्वारा अनेक प्रसिद्ध जैन कवियों के पूरे साहित्य का संग्रह किया गया है। इनमें जटमल नाहर, समय सुन्दर, धर्म वर्द्धन, ज्ञानसार, जिनराज सूरि महाकवि जिनहर्ष आदि के नाम गिनाये जा सकते हैं जिनका पूरा साहित्य यहाँ उपलब्ध है।

संस्थान की अन्य प्रवृत्तियों का सुचारु रूपेण कार्यान्वित करने हेतु पुस्तकालय के अतिरिक्त निम्नांकित विभागों की व्यवस्था भी है —

शोध-विभाग

इस विभाग में प्रति सप्ताह शोध सम्बन्धी गोष्ठियों का आयोजन किया जाता है। भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों से सम्पर्क स्थापित कर साहित्यिक शोध कार्य सम्बन्धी पूरी जानकारी यहाँ एकत्र की जाती है। छात्रों को शोध कार्य हेतु विषय का सुझाव देकर तत्सम्बन्धी पूरी जानकारी एवं उचित निर्देशन श्री अगरचन्द नाहटा द्वारा दिया जाता है।

जैन साहित्य विभाग

प्रारम्भ स यह सस्था जैन साहित्य सग्रह म अधिक सचेष्ट एव सक्रिय रही है। सस्था का यह विभाग जन साहित्य से सबधित प्रत्येक लघु वा वहद कृति का विवचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने हेतु सदव तत्पर रहता है।

राजस्थानी साहित्य विभाग

इस विभाग मे राजस्थानी भाषा और साहित्य के प्रचार और प्रसारार्थ सगोष्ठियाँ की जाती है साथ ही प्राचीन राजस्थानी ग्रथा का सकलन सपादन एव पाठालोचन आदि का काय किया जाता है। नवीन राजस्थानी साहित्य के सवद्ध न हेतु अनक विद्वाना के साहित्यिक लेख कहानी, कविता आदि का सग्रह तथा प्रकाशन किया जाता है।

प्रकाशन विभाग

सस्था म प्रकाशन विभाग का काय शाध और शोधेतर साहित्यिक ग्रथा का प्रकाशन करना है। इस विभाग द्वारा अद्यावधि १५ पुस्तको का प्रकाशन हो चुका है जिनका विवरण तथा मूल्यांकन अग्रिम अध्याया मे प्रस्तुत किया जा रहा है।

कला विभाग

इस विभाग म प्राचीन कालीन चित्र पुराने सिक्के मिटटी की सीलें हाथी दांत की वस्तुएँ और धातु की वस्तुआ का सग्रह किया जाता है। अनक हस्तलिखित सचित्र पुस्तका का सग्रह किया गया है। इस प्रकार की पुस्तका म श्री मदभागवत' की भी एक सु दर सचित्र प्रति है। कपड पर रचित चित्रावली म एक बौद्धचित्रपट है जो ७०० वष प्राचीन है। इसम ८४ सिद्ध और सूक्ष्म कलम के तान्त्रिक चित्रा के साथ साथ भगवान बुद्ध की भिन्न भिन्न प्रकार की लगभग २० मुद्राओ क चित्र हैं। प्रस्तुत चित्रपट रगो की विविधता और बारीकी की दृष्टि स विशेष उल्लेखनीय है।

इस विभाग म कूटे की भी कलात्मक वस्तुओ का सग्रह है। इस प्रकार की उल्लेखनीय वस्तुआ मे कूटे के दो सुन्दर देव मदिर हैं जिसमे एक काच जडा हुआ और दूसरा बेल पत्तियो से चित्रित है। इसके अतिरिक्त हाथ की कलम से रचित अनेक चित्रो का सग्रह है जो मुगल तथा राजपूत कालीन है ।

पुरान सिक्का का सग्रह विशेष नही फिर भी कुषाण कालीन सोने का हुविष्क का सिक्का और चादी के बीसो पचमाक सिक्के और ताबे के बहुत से सिक्के दो हजार वष स भी पुरान है। ताबे के सिक्को पर सिंह चत्य, हाथी, कल्पवृक्ष, स्वस्तिक इत्यादि के चित्र अकित हैं। चान्दी के सिक्के कौशाम्बी एव ताब के सिक्के मगध देश के हैं। सारनाथ और राजगृह से प्राप्त बौद्ध सीले मिट्टी की मूर्तियाँ भी कम महत्त्व की नही हैं। ये सीले लगभग सौ डेढ सौ वष पुरानी हैं और अनेक सीला पर पुरानी लिपि के लेख उत्कीण हैं। हाथी दांत की वस्तुआ म एक अति प्राचीन घुडसवार और नगीतलवार उल्लेखनीय है।

धातु की वस्तुओ म पित्तलमय बुद्ध की मूर्ति के अतिरिक्त अन्य ४ प्याले और गारुहिम की पहाडी जाति के पूजनीय गारुखोरे भी प्राचीन हैं। उन्यराममर के टीला म निकले हुए लोह् खड भी सरक्षित हैं। इसके अतिरिक्त तीर का घण्टाकरण-यन्त्र' भी यहाँ सुरक्षित है।

सक्षेप म यह कहा जा सकता है कि बीकानर की यह साहित्यिक सस्था मात्र ग्र थालय ही नही है वरन् कला शोध एव साहित्य का भी महत्त्वपूर्ण सस्थान है। वतमान तक के शोध अध्यता इस सग्रहालय स लाभ उठा चुके हैं।

भारतीय विद्या मन्दिर शोध-प्रतिष्ठान

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद देश म व्याप्त नवचेतना की लहर स प्रभावित हो कतिपय शिक्षानुरागियो ने बीकानर म प्रौढ एव समाज शिक्षा का अभियान आरम्भ किया पचन रक्षा बधन, श्रावण पूनम १५ सवत् २००५ तदनुसार दिनाक १६ अगस्त १६४८ ई० को भारतीय विद्या मन्दिर की स्थापना की गई।

इस सस्था का उद्देश्य राष्ट्र भाषा हिन्दी, राज्य भाषा राजस्थानी एव अन्य भाषाओ के माध्यम से प्रारम्भिक से उच्च शिक्षा तक की व्यवस्था और साक्षरता के साथ-साथ वैज्ञानिक पद्धति एव शुद्ध बौद्धिक दृष्टिकोण से सास्कृतिक उत्थान की रचनात्मक एव लोक शिक्षणात्मक प्रवृत्तियो का सचालन तथा साहित्यिक शोध कार्य सपादन करना रहा है। अपने उद्देश्य पूर्ति की दिशा मे मन्दिर के अन्तर्गत भारतीय विद्यामदिर रात्रि विद्यालय राजस्थान बालभारती और भारतीय विद्या-मदिर शोध प्रतिष्ठान की स्थापना की गई। इस प्रकार विवेच्य सस्था विद्या मन्दिर की ही एक शाखा है ।

यह सस्था राजस्थान शिक्षा विभाग राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर तथा काशीनागरी प्रचारणी सभा बनारस से सबद्ध है। साहित्यिक शोध क्षेत्र मे इसका महत्वपूर्ण स्थान है। इसमे एक पुस्तकालय भी है जिसमे ८०० से अधिक महत्वपूर्ण हस्तलिखित ग्रथो एव अप्राप्य मुद्रित सदर्भ ग्रथो का विशाल सग्रह किया गया है। शोध-पत्रिकायें भी मगाई जाती हैं। सस्था मे विशेष रूप से सत साहित्य और लोक साहित्य सबधी सामग्री पर कार्य हो रहा है। बड़ी मात्रा मे लोक कथाओ लोक नाटयो शिलालेखो, लोक गीतो भजनो लोक गाथाओ मुहावरो और लोकोक्तियो का सग्रह किया गया है। विभिन्न विश्व विद्यालयो से यहाँ आने वाले शोध कर्ता भी पीएच० डी० और डी० लिट० की तैयारी के लिए उपलब्ध सामग्री से लाभ उठाते हैं।

सस्था की प्रबंध समिति इस प्रकार है—

श्री नरोत्तमदास स्वामी	—	कुलपति
श्री शम्भूदयाल सक्सेना	—	उपकुलपति
श्री फाल्गुन गोस्वामी	—	पीठस्थविर
श्री सुरपत सिह	—	प्रधान सचिव
श्री ठाकुरदास वर्मा	—	सयुक्त सचिव
श्री आनन्द राज शर्मा	—	कोषाध्यक्ष

इस संस्था के व्यय हेतु ८० प्रतिशत राजकीय अनुदान एव शुल्क की भी प्राप्ति होती है और शेष धनराशि जन सहयोग से प्राप्त होती है। सस्था के सचालन हेतु निम्नांकित विभाग हैं

शोध–विभाग

इस विभाग का कार्य प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकों की खोज, उनका संग्रह, अनुवाद सपादन और विवरण का प्रकाशन करना है। दूसरे, लोक संगीत की स्वर लिपियाँ तयार करना तथा प्राचीन लोक वाद्यो और लोक नृत्यो पर गवेषणात्मक कार्य करना है। तीसरे, सामाजिक एव सास्कृतिक लोक परम्पराओ तथा रीति रिवाजो का एतिहासिक तथा विश्लेषणात्मक अध्ययन कर उनका जन जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का मूल्यांकन करना है। चौथे प्राचीन शिलालेखो का पता लगाकर उनका सरक्षण एव उनका एतिहासिक विवरण प्रस्तुत करना है तथा कथाओ, वार्ताओ ख्यातो मुहावरो एव कहावतो का संग्रह व संपादन करना है।

भाषा–विज्ञान विभाग

इस विभाग म शहरों कस्बो गांवो, ढाणियो और व्यक्तियो के नामो या भाषा वैज्ञानिक आधार पर विश्लेषणात्मक अध्ययन एव विशेष धधो स संबधित शब्दावली का संग्रह किया जाता है। साथ ही राजस्थानी भाषा और बीकानेरी बोली का भी भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण किया जा रहा है।

पुरातत्व कला विभाग

इस विभाग का प्रमुख कार्य राजस्थान एव बीकानेर के चित्रो का संग्रह और राजस्थानी कला की विशिष्टताओ का शोध करना तथा उसका अन्य चित्र शलियो पर पड़े प्रभाव का पता लगाना है। साथ ही राजस्थान एवं विशेषत बीकानेर की स्थापत्य कला दुर्ग मन्दिर आदि की निर्माण शलियो का विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक विवरण भी प्रस्तुत करना है। प्राचीन वेश भूषा, आभूषण अस्त्र-शस्त्र बर्तन और उनका मानव जाति खिलौने मृण्मूर्तियाँ एव साज

कलाओं का संग्रह तथा अध्ययन करना भी इसी विभाग का काम है।

प्रकाशन विभाग

प्रकाशन विभाग में अन्य सभी विभागों की उपलब्धियों के साथ ही शोध और शोधेतर साहित्यिक ग्रन्थों का प्रकाशन किया जाता है। अभी तक ६ महत्त्व पूर्ण साहित्यिक ग्रंथों का प्रकाशन हो चुका है और तीन प्रेस में हैं।

राजस्थानी भाषा प्रचार- प्रकाशन संस्थान-

इस संस्था का निजी वैशिष्ट्य है। बीकानेर की अन्य साहित्यिक संस्थाओं में तो हिन्दी के साथ साथ राजस्थानी भाषा और साहित्य पर भी कार्य हो रहा है किंतु इस संस्था में केवल राजस्थानी भाषा और साहित्य के ही प्रसार एवं प्रचार का कार्य हो रहा है। इस संस्था की स्थापना सन् १९६१ में की गई। संस्था के संचालक श्री मूलचन्द जी 'प्राणेश' हैं। अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु संस्था में प्रकाशन कार्य की योजना ही प्रमुख है। यह प्रकाशन कार्य दो रूपों में होता है पुस्तक प्रकाशन और पत्रिका प्रकाशन।

पुस्तक प्रकाशन में अब तक राजस्थानी भाषा में रचित छह पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। संस्था द्वारा 'जलम भोम' नामक मासिक पत्रिका का भी प्रकाशन किया जाता है। नगर की यह एक मात्र पत्रिका है जो राजस्थानी भाषा में प्रकाशित होती है।

संस्था का संचालक मण्डल इस प्रकार है—

श्री मूलचन्द 'प्राणेश'	—	संयोजक
श्री भवरलाल खत्नानी	—	सचिव
श्री ज्ञान प्रकाश जैन	—	उपसचिव
श्री हनुमान मल बागडी	—	विशिष्ट सदस्य
श्री पूनम चन्द तापड़िया	—	
श्री झूमरलाल वर्मा	—	

वातायन सस्थान

बीकानेर के युवा एव प्रगतिशील साहित्यकारो की इस प्रमुख साहित्यिक सस्था की स्थापना सुविख्यात कवि श्री हरीश भादानी और उनके अन्य सहयोगियो द्वारा अप्रेल सन् १९६१ ई० मे की गई थी। इस सस्था का मुख्य उद्देश्य आधुनिक साहित्य व नये साहित्यिक आदोलनो तथा नई कविता नई कहानी एव नवलेखन का सृजन व समालोचना है। साथ ही युवा लेखन को प्रश्रय प्रदान करते हुए नवीन शैली की सृजन परम्परा को गतिमान रखना इस सस्था की विशेषता है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सस्था मे चार योजनायें कार्यान्वित हैं।

सगोष्ठी समायोजना

इसमे प्रति सप्ताह गोष्ठियाँ की जाती हैं जिनमे समकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियो साहित्यिक सृजना के विविध आयामो तथा नव प्रकाशित साहित्यिक कृतियो की उपलब्धियो पर गम्भीर विचार मथन होता है।

पत्रिका प्रकाशन योजना

सन् १९६१ से 'वातायन' नामक पत्रिका का इस सस्था से प्रकाशन होता है। प्रारम्भ मे यह प्रकाशन त्रैमासिक के रूप मे रहा था जो नियमित रूप से तीन वर्ष तक चलता रहा। तदुपरान्त सन् १९६४ से इस पत्रिका का प्रकाशन मासिक होने लगा। अनेक महत्वपूर्ण विशेषाक भी प्रकाशित हो चुके हैं। देश की उच्चस्तरीय साहित्यिक पत्रिकाओ मे वातायन मासिक की गणना की जाती है।

प्रकाशन योजना

अभिनन्दन और पुरस्कार योजना

सस्था का यह भी सौभाग्य रहा है कि इसमे समय समय पर अखिल भारतीय ख्याति प्राप्त विद्वानो का शुभागमन होता रहा है एव सस्था ने उन्हें अभिनन्दित और पुरस्कृत भी किया है।

सस्था के सचालन मे निम्नांकित व्यक्तियो के नाम विशेषत उल्लेखनीय हैं —

डा० छगन मोहता
डा० महावीर दाधीच
डॉ० राजानन्द भटनागर
प्रो० रामदेव आचार्य
श्री प्रेम बहादुर सक्सेना
श्री प्रकाश परिमल
डा० पूनम दैया
श्री हरिकृष्ण 'सरल'
श्रीमती सीता भटनागर

उल्लिखित महानुभाव नगर के सुप्रसिद्ध कवि कहानीकार, नाटककार, उपन्यासकार, प्राध्यापक एव विचारक हैं।

हिन्दी विश्वभारती अनुसधान

इस सस्था की स्थापना ३ अक्टूबर १९५७ म की गई। हिन्दी विश्व भारती अनुसन्धान परिषद् का उद्देश्य राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के रूप म देश के सांस्कृतिक साहित्यिक, सामाजिक एव ज्ञान विज्ञान सम्बन्धी जीवन का निर्माण करना तथा अनुसधान समाज कल्याण और भाषा प्रचार आदि कार्यों द्वारा देश की विकासो मुख प्रवृत्तियो को गति प्रदान करना है।[1] इन उद्देश्यो की पूर्ति हेतु सस्था म निम्नांकित विभाग क्रियाशील हैं—

१—हिन्दी विश्वभारती अनुसधान परिषद की योजना सबधी रूपरेखा पृष्ठ २

शोध–विभाग

इस विभाग म दोना प्रकार के उपाधि निरपेक्ष व उपाधि सापेक्ष शोध काय होते हैं। उपाधि निरपेक्ष कार्यों म शोध ग्रथ प्रकाशन तथा उपाधि सापेक्ष मे विश्वविद्यालय की पीएच० डी० आदि उपाधि के अनुसधित्सु छात्रों का निर्देशन सस्था के सचालक श्री विद्याधर जी शास्त्री करते हैं।

शिक्षण–विभाग

इस विभाग मे विभिन्न विषया के अध्ययन की व्यवस्था नियुक्त रूपेण की गई है। विशेषकर सस्कृत एव हिन्दी के उच्चस्तरीय विद्यार्थियो को इस विभाग द्वारा उपयोगी माग दशन कराया जाता है।

ज्योतिष–विभाग

इस विभाग म जातक एव फलित ज्योतिष सबधी सपुष्ट नियमो का निर्धारण किया जाता है। यही नहीं नवीन पद्धतिया द्वारा सारणियो का निर्माण ग्रहो का मानव जीवन पर प्रभाव वषपत्री के विषय मे नवीन सिद्धाता का भी निर्माण किया जाता है।

राजस्थानी और हिन्दी साहित्य विभाग

इस विभाग क अतगत राजस्थानी एव हिन्दी साहित्य के उच्चकोटि के ग्रथो के अध्ययन, अनुशीलन एव प्रकाशन की व्यवस्था की गई है।

प्रकाशन विभाग

इस विभाग के अतगत विश्वम्भरा नामक त्रैमासिक साहित्यिक शोध पत्रिका सन् १९६३ से नियमित रूप म प्रकाशित हो रही है एव अनेक साहित्यिक प्रकाशना की योजना है। कई महत्वपूण प्रकाशन हो भी चुके है जिनका विवरण आग क अध्याया म प्रस्तुत किया जा रहा है।

इन प्रमुख विभागों के अतिरिक्त संस्था की विवरण पत्रिका में तो परीक्षा विभाग समाज विभाग, विज्ञान विभाग आदि अनेक विभागों को गिनाया गया है। इन विभागों की कोई विशेष गतिविधियां न होने के कारण उनका उल्लेख करना भी समीचीन नहीं है।

संस्था की व्यवस्थापिका समिति इस प्रकार है-

विद्याभास्कर आचार्य श्री गौरीशंकर शास्त्री एम० ए०	– अध्यक्ष
विद्यावाचस्पति श्री विद्याधर शास्त्री एम० ए०	– कार्याध्यक्ष
श्री गिरधारीलाल व्यास एम० ए० बी० एड्०	– मंत्री
श्री रामप्रसाद सहल बी० ए० ज्योतिष रत्न	– अर्थ मंत्री
श्री भगवानदत्त गोस्वामी बी० ए०	– सदस्य
डा० जयशंकर जी	–
प्रो० जानकी प्रसाद उपाध्याय	– "
श्री शान्ति भण्डारी एम० ए०	– "
डा० पुष्करदत्त शर्मा	– "
डा० प्रभाकर शर्मा	– "
डा० दिवाकर शर्मा	– "
सरदार मक्खन सिंह (राजकीय सदस्य)	– "

श्री जुबली -नागरी -भण्डार

यह बीकानेर की प्राचीन संस्था है। इस संस्था की स्थापना सन् १६०६ में की गई। संस्था के प्रथम मंत्री जुगल सिंह जी खीची रहे। सन् १६१२ में महाराजा श्री गंगासिंह जी की जुबली के शुभअवसर पर संस्था के निजी भवन का निर्माण हुआ। भवन निर्माण हेतु महाराजा ने निःशुल्क भूमि प्रदान की तथा भवन का निर्माण सार्वजनिक खर्च से किया गया।[1]

---

१ — नागरी भण्डार कार्यालय विवरण पत्रिका पृष्ठ ५

स स्था की स्थापना के उद्देश्य विवरण पत्रिका म इस प्रकार है–[1]

(क) मानव जाति के सुधार के एक मात्र साधन प्राचीन तथा नवीन साहित्य, विज्ञान की उत्तमोत्तम पुस्तको का एक पुस्तकालय स्थापित कर पठन पाठन आदि के द्वारा विद्या-वृद्धि का उद्योग करना।

(ख) विषय विन्यास लेख प्रकाशन तथा सभाषण आदि साधनो के द्वारा मातृ भाषा के साहित्य का प्रचार करना।

(ग) चतुवग के साधन एव जगतप्रशसनीय लौकिक तथा पारमार्थिक कर्तव्य का शास्त्रानुसार ज्ञान प्राप्त कर तदनुकूल व्यवहार करने और कराने म तत्पर होना।

(घ) शास्त्र विहित सन्मार्ग प्रवृत्ति को ही श्रेष्ठ धम मानकर कथा वार्ता सत्सग और सदुपदेशादि के द्वारा सज्जनो का स्नेह सदाचार स्थिर करना।

इन उद्देश्यो की पूर्ति हेतु विवरण पत्रिका म अनेक विभागो के नामोल्लेख किये गय हैं जिनके प्रबध सयोजक सहित नाम इस प्रकार है—

प्रचार विभाग	—	श्री विद्याधर शास्त्री
सपादन विभाग	—	श्री जुगल सिंह खीची
सग्रह विभाग	—	डा० दशरथ शर्मा
हिन्दी विभाग	—	श्री शभूदयाल सक्सेना
राजस्थानी विभाग	—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
परीक्षा विभाग	—	श्री मुरलीधर व्यास
प्रकाशन विभाग	—	डा० छगन मोहता

सस्था मे समय समय पर विचार सगोष्ठियाँ एव अन्य साहित्यिक समायोजन हाते रहते हैं। नागरी भण्डार का भवन नगर की नई और पुरानी पीढ़ियो के साहित्यकारो के विचार विनिमय का प्रमुख केन्द्र है। सप्रति सस्था मे पुस्तकालय और वाचनालय ही है। सस्था का सचालन श्री विद्याधर जी कर रहे हैं।

१— नागरी भण्डार कार्यालय विवरण पत्रिका पृष्ठ ७

बीकानेर की उन साहित्यिक सस्थाओ म जिन्होने साहित्यिक सगोष्ठियो के माध्यम स साहित्य की नवीन विधाओ नई कहानी, नई कविता आदि के सृजन और समालोचन को प्रोत्साहित किया सहिता' सस्था का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इस सस्था की स्थापना १५ अगस्त १९६५ ई० म की गई। सस्था की प्रमुख प्रवृत्ति प्रति सप्ताह साहित्यिक सगोष्ठी समायोजन व कवि सम्मेलन आदि हैं। दो प्रकाशन भी सस्था की ओर से प्रकाशित हो चुके हैं जिनका विवेचन अग्रिम अध्यायो म द्रष्टव्य है।

सस्था की प्रबध समिति इस प्रकार है —

डा० पुष्कर शर्मा	—	अध्यक्ष
डॉ० मदन केवलिया	—	सयोजक
श्री ओकार पारीक	—	मुख्य सचिव
श्री भवानी शकर व्यास	—	उप सचिव
श्री धर्मेश शर्मा	—	सदस्य
श्री गौरीशकर अरुण'	—	"
श्री शिवराज छगानी	—	"

गुण प्रकाशक सज्जनालय

बीकानेर की यह प्रथम साहित्यिक सस्था है। इसकी स्थापना सन् १९०१ (विक्रम स० १९५८) म की गई। बीकानेर के जन जीवन को शिक्षा के क्षेत्र म पिछडा हुआ देख तथा युवको की मनोवृत्ति को ऐशो-आराम म रमती हुई देख तत्कालीन दीवान मोहता गिरधर लाल और रामगोपाल ने मिलकर इस सस्था की स्थापना की। सस्था के प्रथम मन्त्री श्री किशनसिह जी मोहता थ। तत्कालीन धार्मिक प्रवृत्ति के कारण सस्था म साहित्य के साथ धर्म की भी शिक्षा दी जाती थी। उन दिनो सस्था का निजी भवन भी नही था अत पहले मोहता के चौक म पुन बाँठिया के चौक म, तद नतर स्थायी भवन का निर्माण सन् १९१७ म कोटगेट बीकानेर पर

सार्वजनिक खर्चे से किया गया। स्थायी भवन से पूर्व संस्था के कार्य श्री मदनमोहन जी के मंदिर में सम्पन्न हुआ करते थे।

संस्था के तत्वावधान में प्रति रविवार गोष्ठी होती थी तथा भाषण देने का अभ्यास कराया जाता था। वक्ताओं को पुरस्कृत भी किया जाता था। प्रारम्भ में संस्था की ओर से संस्कृत हिन्दी की रात्रि पाठशाला भी चलती थी। श्री चिरंजीलाल गोस्वामी इस पाठशाला के संरक्षक थे। इस पाठशाला में बनारस, मथुरा आदि से विद्वानों को भी बुलाया जाता था। संस्था में एक पुस्तकालय का भी प्रबंध था जिसमें कुल २८७ पुस्तकें थीं। संस्था के भवन निर्माण के अनंतर २१ वें अधिवेशन के अवसर पर पुस्तकों की संख्या में अधिक वृद्धि हुई और ६ हजार पुस्तकों का संग्रह किया गया। पुस्तकालय का एक उपविभाग चलता फिरता पुस्तकालय भी रखा गया जो शहर में घूम घूम कर पुस्तकें पढ़ने के लिए देने जाता था। इस प्रकार शिक्षा के प्रचार प्रसार में इस संस्था ने अधिक योगदान दिया। संप्रति पुस्तकालय में १८ हजार पुस्तकें हैं एवं वाचनालय में सभी प्रमुख पत्र पत्रिकायें आती हैं। संस्था को अभी ७० प्रतिशत अनुदान सरकार द्वारा प्राप्त होता है तथा कार्यभार श्री मथुरा दास पुरोहित संभाले हुए हैं।

ϴ ϴ ϴ

अध्याय / ३

बीकानेर की साहित्यिक संस्थाओं का कार्यक्षेत्र

बीकानेर की साहित्यिक संस्थाओं के कार्यक्षेत्र के अन्तर्गत उनकी विभिन्न गतिविधियां सम्मिलित हैं। इस अध्याय में साहित्यिक संस्थाओं की सम्पूर्ण गतिविधियों का अध्ययन निम्नांकित शीर्षकों के अन्तर्गत विभाजित करके किया गया है –

१– शोध-कार्य

बीकानेर की अधिकांश साहित्यिक संस्थाओं का सर्व प्रमुख काम साहित्यिक शोध है। उपाधि सापेक्ष एवं उपाधि निरपेक्ष दोनों प्रकार का शोध कार्य साहित्यिक संस्थाओं द्वारा सम्पन्न हुआ है। आलोच्य संस्थाओं के शोध कार्य में साहित्यिक महत्व के प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों का सम्पादन, पाठालोचन खोज तथा उच्चस्तरीय साहित्यिक विषयों पर समालोचनात्मक अनुसंधान सम्मिलित है। विशेष रूप में राजस्थानी भाषा और जन साहित्य पर महत्वपूर्ण शोध कार्य हुआ है।

२– साहित्यिक ग्रन्थ प्रकाशन

साहित्यिक संस्थाओं द्वारा दूसरा महत्वपूर्ण कार्य उच्चकोटि के साहित्यिक ग्रन्थों का प्रकाशन है। इस दृष्टि से विभिन्न संस्थाओं द्वारा प्राचीन और

अर्वाचीन सभी प्रकार के कथा साहित्य संस्कृति, इतिहास, दर्शन आदि विषयों के प्राचीन ग्रंथों तथा समालोचनात्मक एवं रचनात्मक साहित्यिक कृतियों का प्रकाशन है ।

३– पत्रिका-प्रकाशन

बीकानेर नगर की चार प्रमुख संस्थाओं द्वारा मासिक एवं त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिकाओं का प्रकाशन भी किया जाता है । 'राजस्थान भारती', विश्वम्भरा और जलम भोम' त्रैमासिक तथा वातायन मासिक पत्रिका है । इन पत्रिकाओं में साहित्य जगत् के मूर्धन्य मनीषियों, लेखकों कवियों एवं कृतिकारों के शोध पूर्ण लेख एवं रचनाएँ प्रकाशित होती हैं ।

४–संगोष्ठियां

साहित्यिक संस्थाओं की एक उल्लेखनीय गतिविधि साहित्यिक संगोष्ठियों का समायोजन है । ये संगोष्ठियां प्राचीन एवं समकालीन साहित्य से संबंधित विभिन्न विषयों पर स्थानीय एवं सार्वदेशीय ख्याति के अधिकारी विद्वानों की अध्यक्षता में समय-समय पर आयोजित हुई हैं । इन संगोष्ठियों द्वारा नगर के बुद्धि जीवी वर्ग में साहित्यिक जागरूकता विद्यमान रही है ।

५– आसनपीठ एवं व्याख्यान मालाएँ --

नगर की कुछ संस्थाओं द्वारा संस्था से सम्बंधित विद्वानों की स्मृति में आसनपीठ स्थापित किये गये हैं जिनके अंतर्गत उच्चकोटि के विद्वानों द्वारा गम्भीर साहित्य एवं शोध विषयों पर व्याख्यान दिये जाते हैं ।

६– अन्य गतिविधियां –

नगर की सभी साहित्यिक संस्थाएँ समय-समय पर महापुरुषों की जयन्तियाँ मनाती रही हैं । साथ ही मनीषियों का स्वागत साहित्य संवर्द्धन कृतियों पुरस्कार एवं प्रदर्शनियों का आयोजन करती रही है ।

शोध-कार्य

बीकानर की निम्नांकित संस्थाओं में शोध कार्य सम्पन्न हो रहा है–

(१) श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट
(२) भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान
(३) हिन्दी विश्व भारती अनुसंधान परिषद्
(४) श्री अभय जैन ग्रंथालय

इन संस्थाओं द्वारा किये जाने वाले शोध कार्यों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है —

अ- उपाधि सापेक्ष शोध कार्य

यह वह शोध कार्य है जो विश्वविद्यालयीय उपाधियां जैसे पी एच० डी० डी० फिल तथा डी० लिट आदि के लिए किया जाता है। बीकानेर की साहित्यिक संस्थाओं में इस प्रकार का कार्य पर्याप्त मात्रा में हुआ है। श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट के साहित्य मंत्री श्री नरोत्तमदास जी स्वामी के निर्देशन में राजस्थान विश्वविद्यालय की पी एच० डी० उपाधि हेतु श्री शिव स्वरूप 'अचल' डॉ० माधोदास व्यास, मोहनलाल जिज्ञासु कृष्णचन्द्र श्रोत्रिय, डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल डॉ० नरेन्द्र भनावत मथुरा प्रसाद अग्रवाल, उषा देसाई तथा आलमशाह ने क्रमशः 'राजस्थानी गद्य साहित्य का विकास और इतिहास', 'काव्य-शाप 'राजस्थान के चारणों का डिंगल साहित्य', 'खुमाणरासो एक अध्ययन', राजस्थान का बेलि-साहित्य' 'राजस्थान के लौकिक प्रेमाख्यान' 'राजस्थानी लोकगीत', 'माधवानलकामकंदला साहित्य' और गणपति का माधवानल कामकंदला प्रबंध 'भूयमल मिश्रण का वंशभास्कर ऐतिहासिक और साहित्यिक अध्ययन' विषयों पर पंजीकरण कराया। इनमें से अनेक ने उपाधियां प्राप्त करली हैं तथा कतिपय कार्य कर रहे हैं। डॉ० शिवस्वरूप शर्मा 'अचल' का शोध प्रबंध भी इसी संस्था द्वारा प्रकाशित किया गया है।

हिन्दी विश्व भारती अनुसंधान परिषद् के संचालक श्री विद्यावाचस्पति विद्याधर जी हैं जिनके निर्देशन में ब्रज नारायण पुरोहित ब्रह्मानन्द शर्मा देव

कृष्ण सारस्वत आचार्य वेद प्रकाश तथा वासुदेव उपाध्याय, राजस्थान विश्व विद्यालय से क्रमश विक्रम एव तत्सम्बन्धी साहित्य 'सादृश्य मूलक अलकार', भवभूति का आलोचनात्मक अध्ययन 'पचमहाभूतो का तुलनात्मक अध्ययन' तथा पुराणो म विश्वजनीनता विषय लेकर पजीकृत हुए थे जिनमे से डा० व्रज नारायण पुरोहित, डा० ब्रह्मानन्द शर्मा पी एच० डी० की उपाधि प्राप्त कर चुके हैं।

श्री अभय जन ग्रन्थालय व भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान के सचालक एव अधिकारीगण विश्वविद्यालयो से निर्देशक के रूप म नियुक्त न होने पर भी शोध छात्रो को महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। श्री अभय जन ग्रन्थालय के सचालक श्री अगरचन्द नाहटा ने प्राचीन जन साहित्य के अनेक विषयो का निर्धारण कर शोध काय सम्पन्न कराया है। उदाहरण के लिए आपके द्वारा निर्देशित विषयो पर डा० व्रज नारायण पुरोहित श्री ईश्वरानन्द शर्मा श्री सत्य नारायण स्वामी क्रमश तेरापन्थी जन साहित्य की हिन्दी को देन महाकवि जिनहर्ष तथा महाकवि समय सुदर विषय लेकर काय कर रहे हैं। भारतीय विद्या मन्दिर स भी शोध छात्र सहायता प्राप्त करते रहे हैं। उदाहरण के लिए श्री गोविन्द लाल गुप्त श्री कृष्ण कुमार शर्मा श्री राम बातेरा भगवती लाल शर्मा श्री मनोहर शर्मा श्री आकारनाथ चतुर्वेदी राम किशोर मौय श्री रिछपाल सिंह शेखावत श्री नानूराम सस्कर्ता कुमारी राज सक्सेना क्रमश लोक गाथाए हिन्दी उपन्यासो म यथार्थवाद का विकास ढोला मारू रा दूहा म इतिहास सस्कृति व साहित्य बातां राजस्थानी सत साहित्य जान कवि के प्रेमाख्यानो का आलोचनात्मक अध्ययन 'राजस्थानी साहित्य म नारी दशा' तथा राजस्थानी म विनाई पथ विषयो पर सहायताथ सस्था म आये थ।

उपाधि सापेक्ष्य शोध काय के क्षेत्र म उल्लिखित सस्थाओ का एक महत्त्वपूर्ण काय यह भी रहा है कि देश भर के शोध छात्रो ने इन सस्थाओ म बठकर शोध सामग्री म वलित की है एव उपयुक्त निर्देशन भी प्राप्त किया है जिसका विवरण आगे की तालिका म द्रष्टव्य है।[1]

१— यह तालिका भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान म प्राप्त की गई है।

शोध छात्र का नाम	उपाधि	विषय	निर्देशक	विश्वविद्यालय
सुशील प्रभा	पी एच डी	पंजाब की लोक कथाओं का आलोचनात्मक अध्ययन	डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी	पंजाब
रघुनन्दन प्रसाद तिवारी	,	मध्य युगीन हिन्दी भक्ति व रीति कालीन काव्य पर राजस्थानी चित्र कला का प्रभाव और उनकी समानताओं का अनुशीलन	आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी	सागर
पद्मावती		अक्क महादेवी और मीराबाई का तुलनात्मक अध्ययन	सावित्री श्रीवास्तव	इलाहाबाद
विमल गुप्ता	,	राजस्थान के निर्गुण संत और सम्प्रदाय	कल्याणमल लोढा (ऐच्छ)	कलकत्ता
बिहारीलाल व्यास	,	भारतीय पुनर्जागरण में आर्य समाज का योगदान	बी के सिंह	विक्रम
किशोर भण्डारी	,	आधुनिक राजस्थानी गद्य साहित्य		बम्बई
प्रकाश माथुर	,	भक्तमाल तथा परिचयी साहित्य लोकतात्त्विक अध्ययन	डा० सत्येन्द्र	आगरा

शोध छात्र का नाम	उपाधि	विषय	विश्वविद्यालय
डा० कैलाशचन्द्र अग्रवाल	डी लिट	पूर्वोत्तर राजस्थान की बोलियों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन	लखनऊ
डा० शंकरदयाल चौऋषि	,,	प्रहेलिकाओं का सैद्धांतिक व सांस्कृतिक अध्ययन	प्रयाग

यह तो हुई राजस्थानेतर प्रान्तों की बात। राजस्थान की भी विभिन्न विश्वविद्यालयों के छात्रों ने शोध कार्य हेतु इस संस्था से सहायता प्राप्त की है जिसका विवरण इस प्रकार है —

शोध छात्र का नाम	उपाधि	विषय	निर्देशक	विश्वविद्यालय
कुसुम माथुर	पीएच डी	राजस्थानी साहित्य में गीति काव्य	डा० सरनाम सिंह जी अरुण	राजस्थान
ललिता माथुर	,,	राजस्थानी साहित्य में काव्य	,, ,,	,, ,,
कु० कृष्णा उपाध्याय	,,	डिंगल काव्य में समाज चित्रण	,,	,,
महावीर प्रसाद शर्मा		सबदों का उद्गम और विकास	डॉ० सत्येन्द्र जी	
आसूलाल शर्मा		१६वीं शताब्दी में जन-जीवन	डा० दशरथ शर्मा	जोधपुर
लक्ष्मी शर्मा		राजस्थान व ब्रज प्रदेश की व्रत कथाएं	नरोत्तमदास स्वामी	बनस्थली

(आ) उपाधि निरपेक्ष शोध-कार्य

इसकी सीमा में प्राचीन महत्वपूर्ण हस्तलिखित ग्रंथों का पाठानुसंधान सम्पादन एवं समालोचनात्मक अध्ययन होता है। आलोच्य बीकानेर की साहित्यिक संस्थाएं इस प्रकार के कार्य क्षेत्र में अग्रसर रही हैं। संस्थाओं द्वारा अनेक प्राचीन महत्वपूर्ण हस्तलिखित ग्रंथों का पाठानुसंधान किया गया है। राजस्थानी भाषा और साहित्य के अनेक रूपों जैसे, कहावतों लोकगीतों लोककथाओं एवं शब्दकोषों आदि के संपादन कार्य को संपन्न किया गया है। इस दृष्टि से भी श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट, भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान विश्वभारती अनुसंधान परिषद व श्री अभय जैन ग्रंथालय के नाम उल्लेखनीय हैं। इन संस्थाओं के उपाधि निरपेक्ष शोध कार्य का विवरण इस प्रकार है

श्री सादूल राजस्थानी रिसर्चइंस्टीट्यूट

इस संस्था ने कला, लोक-साहित्य, प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति के अनेक ग्रंथों का संपादन व पाठानुसंधान प्रस्तुत किया है। संस्था से प्रकाशित व संपादित ग्रंथों का परिचय इस प्रकार है—

१—अचलदास खीची री वचनिका

वचनिका १५ वीं शताब्दी का पद्यात्मक ऐतिहासिक ग्रंथ है। यह राजस्थानी साहित्य की प्राचीनतम रचनाओं में से है। इसमें वचनिका के साथ सानुवाद लाला मेवाड़ी की बात भी दी गई है। प्रारम्भ में डा० दशरथ शर्मा का ऐतिहासिक परीक्षण और अंत में शब्दकोष दिया गया है। इसका संपादन श्री दीनानाथ खत्री ने किया है। ग्रंथ गागरोनगढ़ और वचनिका के आदि अंत के पत्रों के फोटो से युक्त है।

२—पवार-वंश-दर्पण

बीकानेर के राठौड़ों के ख्यात के सुप्रसिद्ध लेखक दयालदास सिंढायच के

इस ग्रंथ का संपादन डॉ० दशरथ शर्मा ने किया है। परिशिष्ट में बांकीदास की ख्यात से पवार वंश विवरण और दयालदास के 'देश दर्पण' से बीकानेर के पवारों के ठिकाणे, मालवे के परमारों की उदयपुर प्रशस्ति, 'जगदेव पवार' की बात संकलित किए गये हैं। साथ में परमारों की उत्पत्ति, राजाभोज, जगदेव पवार आदि से संबंधित ऐतिहासिक निबंध दिये गए हैं। ऐतिहासिक प्रस्तावना और दयालदास एवं उनकी रचनाओं का परिचय भी दिया गया है।

३– विनय चंद्र कृति कुसुमांजलि

इसका संपादन श्री भंवरलाल नाहटा ने किया है। प्रस्तुत ग्रंथ में कवि की छोटी छोटी रचनाओं के साथ उत्तमकुमार चौपई नामक बड़ा चरित काव्य भी सम्मिलित है। प्रारंभ में कवि परिचय अंत में शब्दकोष, कथासार, कवि एवं उनके गुरु के हस्ताक्षरों के ब्लाक हैं।

४– धर्मवर्द्धन-ग्रंथावली

इसका संपादन श्री अगरचन्द नाहटा ने किया है। इसमें जैन कवि धर्मवर्द्धन की राजस्थानी के साथ साथ हिंदी और संस्कृत की रचनाएं भी हैं। प्रारम्भ में कवि का परिचय दिया गया है। डा० मनोहर शर्मा ने भूमिका में कवि की साहित्यिक प्रतिभा पर प्रकाश डाला है। अंत में कवि के स्मारक और हस्ताक्षरों के ब्लाक भी दिए गए हैं।

५–जिनराज सूरि कृति कुसुमांजलि

इसका भी संपादन श्री अगरचन्द नाहटा ने किया है। ग्रंथ में कवि की छोटी छोटी रचनाओं के साथ 'शालिभद्र चौपाई और गजसुकुमाल चौपाई' नामक चरित काव्य भी दिए गए हैं। कवि के प्राचीन चित्र और हस्ताक्षरों के ब्लाकों के साथ शाही चित्रकार शालिवाहन द्वारा चित्रित शालिभद्र चौपाई के कई महत्त्वपूर्ण चित्र दिए गए हैं। प्रारम्भ में कवि और उसके साहित्य का परिचय और अंत में शब्दकोष है।

६– समय सुन्दर रास पचक

महामहोपाध्याय समय सुन्दर कृत पाच काव्य कथासार सहित इस पुस्तक म सकलित हैं। ग्रथ का सपादन श्री भवरलाल नाहटा ने किया है।

७– भारतीय सस्कृति की रूपरेखा

डा० रामसिंह प्रकाश परिमल और रमेश जैन द्वारा सपादित इस ग्रथ म भारतीय सस्कृति के साहित्य भाषा, इतिहास, पुरातत्व, चित्रकला, मूर्तिकला दशन भौतिक विज्ञान सगीत शास्त्र आयुर्वेद और ज्योतिष से सबधित बीस शोधपूर्ण निबध सकलित हैं। लेखको म डॉ० वी० वी० रमन, डा० रामानद तिवारी, डा० विद्यानिवास मिश्र डा० दशरथ शर्मा के नाम उल्लेखनीय हैं।

८– जिनहर्ष-ग्रन्थावली

राजस्थानी साहित्य के विशिष्ट जन कवियो म जसराज या जिन हर्ष उन कवियो म हैं जिनकी चरित काव्य आदि राजस्थानी रचनाए लक्षाधिक पद्यो मे रचित हैं। उनकी लघु रचनाओ का यह बृहद् सग्रह श्री अगरचन्द नाहटा ने सपादित किया है। हाल ही म डूगर कालेज के प्रो० ईश्वरानन्द शर्मा को महाकवि जिनहर्ष पर पीएच०डी० की उपाधि भी राजस्थान विश्वविद्यालय से प्राप्त हुई है।

८– दम्पति-विनोद

बीकानेर के महाराजा अनूप सिंह जी का साहित्यप्रेम सव विदित है। उन्होने अपने आश्रित विद्वानो से राजस्थानी भाषा म कुछ ग्रथ लिखवाय थे उनम दम्पति विनोद' भी एक है। इसम शुक और सारिका के वार्तालाप रूप वर्णित पुरुषो तथा स्त्रियो की विशिष्टताएँ सूचित करने वाली ३२ रोचक वार्ताएँ गद्य मे लिखी गई हैं। इस ग्रथ के रचयिता 'मथेन जोगी राय' का शोधपूर्ण परिचय उनके हस्ताक्षरो के ब्लॉक सहित प्राक्कथन म दिया गया है। ग्रथारम्भ म

राजस्थानी लोक साहित्य के ममप विद्वान् डॉ० मनाहर शर्मा की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण है।

१०– सीताराम-चौपाई

महामहोपाध्याय समय सुन्दर रचित इस राजस्थानी राम काव्य का सम्पादन श्री अगरचन्द नाहटा ने किया है। रामचरित्र ग्रन्थ का विवेच्य है।

११– पीरदान-ग्रन्थावली

राजस्थानी भक्ति साहित्य विषयक चारण कवियों द्वारा विरचित अभी तक बहुत ही कम प्रकाशन में आया है। इस ग्रन्थ में चारण कवि पीरदान लालस की समस्त रचनाओं का संग्रह है। ग्रन्थ के प्रारम्भ में कवि का परिचय और हस्ताक्षरों का ब्लाक दिया हुआ है। अन्त में ८४ पृष्ठों का विस्तृत शब्दकोश है। ग्रन्थ का सम्पादन श्री अगर चन्द नाहटा ने किया है।

भारतीय विद्या-मन्दिर शोध-प्रतिष्ठान

इस संस्था द्वारा निम्नांकित शोध ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं —

१– रासो साहित्य और पृथ्वीराज रासो

प्रस्तुत ग्रन्थ के लेखक श्री नरोत्तमदास स्वामी हैं। ग्रन्थ में कुल १२ अध्याय हैं। प्रथम दो अध्यायों में रासो साहित्य तथा उसकी रचनाओं का सामान्य परिचय दिया गया है। पुनः ८ अध्यायों में चन्द और उसकी कृतियाँ, पृथ्वीराज रासो के रूपान्तरों की विविध प्रतियाँ, रासो की प्रामाणिकता, रासो की भाषा, रासो के छन्द, रासो का कथासार, रासो में वर्णित इतिहास की परीक्षा आदि विषयों पर तर्क सम्मत एवं अध्ययन पूर्ण प्रकाश डाला गया है। ग्यारहवें अध्याय में पृथ्वीराज रासो का साहित्यिक व सांस्कृतिक मूल्यांकन है जो श्री अगरचन्द नाहटा का लिखा हुआ है। बारहवाँ अध्याय उपसंहारात्मक है जिसमें

विद्वान् लेखक ने निष्कर्ष रूप में रासो विषयक अपनी मान्यताओं को सप्रमाण प्रस्तुत किया है।

प्राचीन काव्यों की रूप परम्परा

श्री अगरचन्द जी नाहटा द्वारा लिखित प्रस्तुत पुस्तक भाषा काव्यों के इतिहास तथा शोध विद्वानों के लिए परम उपयोगी है। प्रस्तुत पुस्तक में भाषा काव्य के गद्य व पद्य के अनेक रूप जैसे रासो, सतसई वेलि बात, कथा आदि का शोधपूर्ण रूप से विवेचित किये गये है। इसमें राजस्थानी, गुजराती ब्रज भाषा और अंशतः हिन्दी के काव्य रूपों पर भी विचार किया गया है। ये विचार पन्द्रह निबन्धों में समाविष्ट हुए हैं। इन निबन्धों में उल्लिखित काव्य रूपों की संख्या १२० है। विवेचन में ८० से अधिक काव्य रूपों का सोत्पत्ति एवं साधार विवेचन हुआ है। समाविष्ट हुए काव्य रूपों के इस अध्ययन में कुछ का ऐतिहासिक परिचय भी मिल जाता है। जैसे राजस्थानी साहित्य के सम्वाद ग्रंथ विवाहलाक, मगलकाव्य आदि। कुछ काव्यरूपों का परिचय और उनके साथ उद्धृत की गई सबंधित ग्रंथों की नामावली का महत्व शोध कर्ताओं के लिए विशेष रूप से है।

उपर्युक्त प्रकाशित शोध ग्रंथों के अतिरिक्त इस संस्था में निम्नांकित कार्य सम्पादित हैं –

संत साहित्य

(अ) राजस्थानी लोक-महाभारत (लोक-गाथा-काव्य)

यह ग्रंथ सम्पादन प्रक्रिया में है। ग्रंथ का सम्पादन श्री मूलचन्द प्राणेश' कर रहे है। राजस्थान के क्षेत्र में लोकानुरंजनकारी गाथा काव्य का सटीक एवं महाभारत के साथ तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करते हुए सपादन की योजना है।

राजस्थानी लोक साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान् डा० मनोहर शर्मा की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण है।

१०– सीताराम-चौपाई

महोपाध्याय समय सुन्दर रचित इस राजस्थानी राम काव्य का सम्पादन श्री अगरचन्द नाहटा ने किया है। रामचरित ग्रन्थ का विवेच्य है।

११– पीरदान-ग्रन्थावली

राजस्थानी भक्ति साहित्य विशेषतः चारण कवियों द्वारा विरचित अभी तक बहुत ही कम प्रकाश में आया है। इस ग्रन्थ में चारण कवि पीरदान लालस की समस्त रचनाओं का संग्रह है। ग्रन्थ के प्रारम्भ में कवि का परिचय और हस्तप्रतियों का विवरण दिया हुआ है। अन्त में ६४ पृष्ठों का विस्तृत शब्दकोष है। ग्रन्थ का सम्पादन श्री अगरचन्द नाहटा ने किया है।

भारतीय विद्या-मन्दिर शोध-प्रतिष्ठान

इस संस्था द्वारा निम्नांकित शोध ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं —

१– रासो साहित्य और पृथ्वीराज रासो

प्रस्तुत ग्रन्थ के लेखक श्री नरोत्तमदास स्वामी हैं। ग्रन्थ में कुल २२ अध्याय हैं। प्रथम दो अध्यायों में रासो साहित्य एवं उसकी रचनाओं का सामान्य परिचय दिया गया है। पुनः ८ अध्यायों में चन्द और उसकी कृतियाँ, पृथ्वीराज रासो के रूपान्तरों की विविध प्रतियाँ, रासो की प्रामाणिकता, रासो की भाषा, रासो के छन्द, रासो का कथासार, रासो में वर्णित इतिहास की परीक्षा आदि विषयों पर गम्भीर मनन एवं अध्ययनपूर्ण प्रकाश डाला गया है। ग्यारहवें अध्याय में पृथ्वीराज रासो का साहित्यिक व सांस्कृतिक मूल्यांकन है जो श्री अगरचन्द नाहटा का लिखा हुआ है। बारहवाँ अध्याय उपसंहारात्मक है जिसमें

विगत् लखक न निश्चय रूप म रासो विषयक अपनी मान्यताओ का सप्रमाण प्रस्तुत किया है ।

प्राचीन काव्यो की रूप परम्परा

श्री अगरचन्द जी नाहटा द्वारा लिखित प्रस्तुत पुस्तक भाषा काव्या क इतिहास तथा शोध विद्वानो क लिए परम उपयोगी है । प्रस्तुत पुस्तक म भाषा काव्य क गद्य व पद्यो के अनक रूप जैसे रासा सतसई, वलि बात, ख्या आदि का नाम पूर्ण ढग स विवेचित किय गय है । इसम राजस्थानी, गुजराती, ब्रज भाषा और अ शत हिन्दी क काव्य रूपा पर भी विचार किया गया है । य विचार पन्द्रह निबधा म समाविष्ट हुए हैं । इन निबधा म उल्लिखित काव्य रूपा की सख्या १२० है । विवेचन म ८० स अधिक काव्य रूपा का सोत्पत्तिक एव साकार विवेचन हुआ है । समाविष्ट हुए काव्य रूपा के इस अध्ययन मे कुछ का ऐतिहासिक परिचय भी मिल जाता है । जैसे राजस्थानी साहित्य के सम्वाद ग्रथ विवाहलाद, मगलकाव्य आदि । कुछ काव्यरूपा का परिचय और उनक साथ उद्धत की गई सबधित ग्र था की नामावली का महत्त्व शाध कर्ताओ क लिए विशेष रूप स है ।

उपयु क्त प्रकाशित शोध ग्रथा क अतिरिक्त इस सस्था म निम्नाकित काय सस्थागत हैं –

सत साहित्य

(अ) राजस्थानी लोक-महाभारत (लोक-गाथा-काव्य)

यह ग्र थ सम्पादन प्रक्रिया म है । ग्रथ का सम्पादन श्री पूरनचन्द 'प्राणेश' कर रहे है । राजस्थान के क्षेत्र म लोकानुरजनकारी गाथा काव्य का सटीक एव महाभारत के साथ तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करत हुए सपादन की योजना है ।

(आ) बाबा रामदेव जी कृतित्व एव व्यक्तित्व

पश्चिमी राजस्थान के सुप्रसिद्ध लोक-पुरुष रामदेव जी का प्रामाणिक जीवनवृत्त, वाणी एव दर्शन का समालोचनात्मक प्रस्तुतिकरण इस सपादन म सम्पन्न होगा। सपादन काय श्री मूलचन्द 'प्राणेश' कर रहे हैं।

हिन्दी विश्वभारती अनुसधान-परिषद्

इस सस्था की प्रवृत्ति साहित्यिक शोध के साथ साथ ज्योतिष अनुसधान की भी है। साहित्यिक शोध-काय प्रेस म है—

राजस्थान के लोकोत्सव और मेले

राजस्थान के लोक जीवन म अनेक उत्सव विशेष रूप से मनाए जाते हैं। साथ ही प्रतिमास राजस्थान म यत्र तत्र मेले होते रहते हैं। वे क्यो मनाये जाते हैं कब स मनाया जाना प्रारम्भ हुआ है आदि आदि विषयो को लेकर शोधपूण विवेचन इस पुस्तक मे है। पुस्तक प्रकाशनाथ आलोक प्रकाशन म प्रेषित है।

सतवाणी भाग १

इसम बीकानेर के अनेक सत जसे कृसनाथ गुलाबनाथ आदि सतो के सदुपदेशो का सग्रह किया गया है। साथ ही नाथ सम्प्रदाय के प्रसिद्ध सत भानीनाथ माननाथ शकरनाथ और विवकनाथ की शब्द वाणियो का सग्रह किया गया है। ग्रथ का सम्पादन श्री विद्याधर जी ने किया है।

सस्था के ज्योतिष विभाग म निम्नाकित विषयो पर गवेषणात्मक काय हुआ है जिसका प्रकाशन यदा कदा विश्वम्भरा म होता रहा है—

१— चन्द्रमा की आधुनिक खोजो म प्राचीन ज्योतिष का स्वरूप निर्धारण।

२— विश्व पर ग्रह मण्डल का प्रभाव।

३– ज्योतिष और व्यवसाय ।
४– ज्योतिष और शिक्षा ।
५– अनेक विशिष्ट कुंडलियों का संग्रह ।
६– वर्ष पद्धति का सरलीकरण ।

राजस्थानी भाषा में निम्नांकित विषयों पर शोध कार्य स्वागत है —

१– राजस्थान की आलेखन कला मांडणा
२– भीली साहित्य और संस्कृति ।
३– राजस्थानी साहित्य वात-गाथा में पेड़ पौधे ।
४– भारतीय लोक साहित्य में 'चरखा' ।
५– भारतीय लोक पक्ष 'साक्षी' ।
६– जैसलमेर के अज्ञात कवि और उनकी कृतियाँ ।

श्री अभय जैन ग्रन्थालय

इस संस्था में जैन साहित्य से संबंधित विशेष शोध कार्य हुआ है । विवरण इस प्रकार है —

१– ऐतिहासिक जैन-काव्य-संग्रह

जैनों का प्राचीन इतिहास प्रायः बिखरा हुआ है । ताम्रपत्र और शिलालेखों के अतिरिक्त संस्कृत, प्राकृत और लोक भाषा के काव्यों में भी प्रचुर इतिहास सामग्री उपलब्ध होती है, उन सब को संग्रह कर प्रकाशित करना नितांत आवश्यक है । प्रस्तुत ग्रंथ द्वारा इस न्यूनता की पूर्ति कुछ अंश तक हुई है । ग्रंथ में खरतरगच्छीय भिन्न भिन्न शाखाओं के काव्यों का संग्रह है । प्रायः सभी काव्य ऐतिहासिक दृष्टि से संग्रहित किये गये हैं । गुणवर्णनात्मक गीत गहूंलियें अष्टक प्रभृति वे ही संग्रहित हैं जो ऐतिहासिक हैं । विशेषता यह है कि इस ग्रंथ में प्राप्त गीतों का विषय शृंगार नहीं भक्ति है प्रिय प्रेयसी चिंतन नहीं महापुरुष कीर्तिस्मरण है । ये भिन्न भिन्न सरस राग रागिनियों के रसास्वादन के साथ साथ परमार्थ और सदाचार में मन की गति को ले जाने वाले हैं । ग्रंथ में १२ वीं शताब्दी से लेकर २० वीं शताब्दी तक के गीतों का संग्रह

है । ग्रंथ के प्रारम्भ में सपादकीय भूमिका है, पुन रास रचना काल का सक्षिप्त शताब्दी अनुक्रम है। तदुपरान्त श्री हीरालाल जैन लिखित प्रस्तावना प्रति परिचय चित्र परिचय तथा रास सार सूची दी गई है। ग्रन्थान्त में शब्दकोष है। ग्रंथ का सम्पादन श्री अगरचन्द जी व श्री भंवरलाल जी नाहटा ने किया है।

२– समय सुन्दर कृति कुसुमाजलि

ग्रंथ का शोधपूर्ण सपादन श्री अगरचन्दजी और श्री भंवरलालजी नाहटा ने किया है। प्रस्तुत सग्रह के प्रणेता १७ वी शती के साहित्याकाश के जाज्वल्यमान नक्षत्र महर्षि समय सुन्दर गणि है। कविवर सर्वतोमुखी प्रतिभा के धारक एक उद्भट्ट विद्वान थे। उन्होंने व्याकरण साहित्य छद, ज्योतिष आदि का समुचित ज्ञान कर रक्खा था। उन्हीं के अनेक गीतों का इस कृति में सग्रह किया गया है।

३– ज्ञानसार-ग्रन्थावली

प्रस्तुत ग्रंथ का सम्पादन भी श्री अगर चन्द जी और भंवर लाल जी नाहटा ने किया है। ग्रन्थावली में जैनाचार्य ज्ञानसार कृत पदावली चौबीसी बीसी बहत्तरी पद गीत बालावबोध आध्यात्मिक पद, स्तवन आत्मप्रबोध चारित्र छत्तीसी, गूढ़बावनी, नवपद पूजा माला पिंगलचद आदि का सग्रह किया गया है। ग्रंथ की भूमिका में श्री राहुल सांकृत्यायन ने ग्रंथ की उपादेयता पर प्रकाश डाला है। परिशिष्ट में अवतरण सग्रह दिया गया है।

४– बीकानेर जैन-लेख-सग्रह

इस सस्था की यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं श्रमपूर्ण देन है। प्रस्तुत लेख सग्रह में ६ वी शताब्दी से लेकर आज तक के लगभग ३००० लेख सग्रहित है। जैनों के सग्रह में अनेक श्मशान लेख भी सग्रहित किये गए है। विविध ऐतिहासिक सामग्री दृष्टियों से लेखों का महत्व है। साथ ही अनेक लेख साहित्य की दृष्टि से भी उपादेय हैं। इस ग्रंथ की सर्वाधिक विशेषता है कि राज्य भर के

समस्त जन लेखा का एकीकरण इसमें किया गया है। अनेक लेख व प्रतिमाओं का अध्ययन करने से अनेक ऐसे स्थानों का परिचय मिलता है जिनका अस्तित्व आज दिखाई नहीं देता।

साहित्यिक ग्रन्थ-प्रकाशन

बीकानेर की साहित्यिक संस्थाओं के कार्य क्षेत्र के अन्तर्गत दूसरा कार्य शोधेतर साहित्यिक ग्रंथों का प्रकाशन है। यह कार्य श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट, भारतीय विद्यामन्दिर शोध प्रतिष्ठान हिन्दी विश्वभारती अनुसंधान परिषद् श्री अभय जैन ग्रन्थालय राजस्थानी भाषा प्रचार प्रकाशन वातायन संस्थान संहिता व जुबली नागरी भण्डार द्वारा सम्पन्न हो रहा है। सभी संस्थाओं में समय समय पर साहित्य की किसी न किसी विधा पर ग्रंथों का प्रकाशन हुआ है। संस्थाओं से प्रकाशित साहित्यिक ग्रंथों का परिचय इस प्रकार है –

श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट

इस संस्था से निम्नांकित साहित्यिक प्रकाशन हुए हैं –

१– राजस्थानी रा दूहा

दोहा अपभ्रंश काल की शास्त्रीय उपलब्धि है। अपभ्रंश काल की इस परम्परा का सर्वाधिक प्रयोग राजस्थानी में हुआ है। अतः राजस्थानी भाषा के दोहों की संख्या २०–२५ हजार से कम नहीं होगी। प्रस्तुत संकलन में राजस्थानी के प्रमुख दोहों का संकलन किया गया है। श्री नरोत्तमदास स्वामी संकलन कर्ता है।

२– पद्मिनी चरित्र-चौपाई

प्रस्तुत संकलन में इतिहास प्रसिद्ध जौहर की वीर नायिका पद्मिनी से संबंधित प्राचीन काव्य का संग्रह किया गया है। पद्मिनी चरित्र में जैन कवि लब्धोदय की पद्मिनी चौपाई के अतिरिक्त 'खुमाण रासो' का पद्मिनी चरित्र संबंधी छठा खंड जटमल नाहर की गोरा बादल चौपाई भी ग्रंथ में संग्रहित है। ६२ पृष्ठों की विस्तृत प्रस्तावना और १८ पृष्ठों का डॉ० दशरथ शर्मा

लिखित रानी पद्‌मिनी सबंधी विवेचन बड़ा ही महत्वपूर्ण है। ग्रंथ का सम्पादन श्री भवरलाल नाहटा ने किया है।

३– हम्मीरायण

राजस्थान के स्वाभिमानी महान् वीर हम्मीरदेव भारतीय इतिहास में देदीप्यमान नक्षत्र रहे है। प्रस्तुत प्रकाशन में विक्रम संवत् १५३८ में रचित ब्यारा भाहा की 'हम्मीर दे चौपाई' के अतिरिक्त प्राकृत पैंगलम् के हम्मीर संबंधी पद्य, हम्मीर हठीले रा कवित्त', विद्यापति के 'पुरुष परीक्षा' की दयावीर कथा,' भाट खेम रचित 'हमीर दे कवित्त' आदि हमीर संबंधी काव्य सम्मिलित है। प्रारम्भ में दी गई १३४ पृष्ठों की डा० दशरथ शर्मा की ऐतिहासिक प्रस्तावना विशेष रूप से उल्लेखनीय है। रणथम्भौर दुर्ग और हमीर के शिला लेख से पुस्तक सुसज्जित है।

४– दलपत-विलास

बीकानेर के महाराजा दलपत सिंह के राजस्थानी गद्य में लिखे हुए ऐतिहासिक चरित्र का सानुवाद सपादन राजस्थानी के प्रसिद्ध विद्वान् श्री रावत सारस्वत ने किया है। इसका ऐतिहासिक समीक्षण डॉ० दशरथ शर्मा ने लिखा है। इसमें दलपत सिंह जी का चित्र और दलपत विलास के प्रथम और अंतिम पृष्ठों के ब्लाक भी दिये गये हैं।

५– वीर रस रा दूहा

स्वामी नरोत्तम दास जी द्वारा संकलित प्रस्तुत ग्रंथ में वीर रस के दोहे सानुवाद दिये गये हैं। मुख पृष्ठ पर वीरता के प्रतीक महाराणा प्रताप का सुन्दर चित्र भी है। इस ग्रंथ का सकलन भारत सरकार के भूतपूर्व रक्षा मंत्री डा० कैलाशनाथ काटजू की प्रेरणा से किया गया था।

६– राजस्थानी नीति दूहा

प्रस्तुत ग्रंथ का संपादन श्री मोहनलाल पुरोहित द्वारा किया गया है।

ग्रंथ में करीब १६१५ दोहे हैं। सभी दोहे नीति परक हैं।

७– डिंगल-गीत

राजस्थानी साहित्य में, विशेषतः चारणी साहित्य में डिंगल गीतों का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रस्तुत ग्रंथ में ५२ गीत अर्थ और टिप्पणियों सहित संकलित किए गए हैं। अन्त में शब्दकोश और विशेष नाम सूची देकर ग्रंथ का महत्व बढ़ा दिया गया है। इसके सम्पादक श्री रावत सारस्वत और चंडीदान सांदू हैं।

८– हरि-रस

यह राजस्थान का प्रसिद्ध भक्ति काव्य है। इसका सम्पादन राजस्थानी के ममर्ग विद्वान् पं० बद्री प्रसाद साकरिया ने किया है। विस्तृत भूमिका और परिशिष्ट की अंतकथाएँ बहुत ही उपयोगी हैं।

९– राजस्थानी प्रेम-कथाएँ

राजस्थानी भाषा में लिखित यत्र तत्र अनेक प्रेम कथाएँ उपलब्ध होती हैं। उनमें से कतिपय प्रेम कथाओं का सपादन श्री मोहन लाल पुरोहित ने किया है। सपादक की विस्तृत भूमिका और राजपूत शैली के चित्रों से ग्रंथ सुसज्जित है।

१०– राजस्थानी व्रत साहित्य

इस ग्रंथ मे राजस्थानी गद्य पद्यात्मक ४३ व्रत कथाएँ संकलित हैं। श्री मोहनलाल पुरोहित ने इसका सम्पादन किया है।

११– महादेव-पारवती री वेलि

राजस्थानी साहित्य में 'वेलि' संज्ञक अनेक रचनाएँ मिलती हैं। वेलि क्रिसन रुकमणी री के अनन्तर प्रस्तुत वेलि का महत्वपूर्ण स्थान है। इसका संपादन श्री रावत सारस्वत ने किया है।

लिखित रानी पद्मिनी संबंधी विशेषतः बहुत ही महत्त्वपूर्ण है । ग्रंथ का संपादन श्री भंवरलाल नाहटा ने किया है ।

३— हम्मीरायण

राजस्थान के स्वाभिमानी महान् वीर हम्मीरदेव भारतीय इतिहास के देदीप्यमान नक्षत्र रहे है । प्रस्तुत प्रकाशन में विक्रम संवत् १५३७ में रचित व्यास भाडा की हम्मीर दे चौपाई के अतिरिक्त प्राकृत पंगलम् के हम्मीर संबंधी पद्य, 'हम्मीर हठीले रा कवित्त', विद्यापति के 'पुरुष परीक्षा' की 'दयावीर कथा भाट खेम रचित हमीर दे कवित्त आदि हमीर संबंधी काव्य सम्मिलित है । प्रारम्भ में दी गई १३४ पृष्ठों की डा० दशरथ शर्मा की ऐतिहासिक प्रस्तावना विशेष रूप से उल्लेखनीय है । रणथम्भोर दुर्ग और हमीर के शिला लेख से पुस्तक सुसज्जित है ।

४— दलपत-विलास

बीकानेर के महाराजा दलपत सिंह के राजस्थानी गद्य में लिखे हुए ऐतिहासिक चरित्र का सानुवाद संपादन राजस्थानी के प्रसिद्ध विद्वान् श्री रावत सारस्वत ने किया है। इसका ऐतिहासिक समीक्षण डा० दशरथ शर्मा ने लिखा है । इसमें दलपत सिंह जी का चित्र और दलपत विलास के प्रथम और अंतिम पृष्ठों के ब्लाक भी दिये गये हैं ।

५— वीर रस रा दूहा

स्वामी नरोत्तम दास जी द्वारा संकलित प्रस्तुत ग्रंथ में वीर रस के दोहे सानुवाद दिये गये हैं । मुख पृष्ठ पर वीरता के प्रतीक महाराणा प्रताप का सुंदर चित्र भी है । इस ग्रंथ का संकलन भारत सरकार के भूतपूर्व रक्षा मन्त्री डा० कैलाशनाथ काटजू की प्रेरणा से किया गया था ।

६— राजस्थानी नीति दूहा

प्रस्तुत ग्रंथ का संपादन श्री मोहनलाल पुरोहित द्वारा किया गया है ।

ग्रंथ में करीब १४१५ दोहे हैं। सभी दोहे नीति परक हैं।

७– डिंगल-गीत

राजस्थानी साहित्य मे, विशेषत चारणी साहित्य मे डिंगल गीता का महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्रस्तुत ग्रंथ मे ९२ गीत अर्थ और टिप्पणिया सहित संकलित किए गए हैं। अंत म शब्दकोश और विशेष नाम सूची देकर ग्रंथ का महत्त्व बढ़ा दिया गया है। इसके सम्पादक श्री रावत सारस्वत और चंडीदान सदू है।

८– हरि-रस

यह राजस्थान का प्रसिद्ध भक्ति काव्य है। इसका सम्पादन राजस्थानी के ममग विद्वान् प० बद्री प्रसाद साकरिया ने किया है। विस्तृत भूमिका और परिशिष्ट की अंतकथाएँ बहुत ही उपयोगी है।

९– राजस्थानी प्रेम-कथाएँ

राजस्थानी भाषा में लिखित यत्र तत्र अनेक प्रेम कथाएँ उपलब्ध होती हैं। उनम स कतिपय प्रेम कथाओ का सपादन श्री मोहन लाल पुरोहित ने किया है। सपादक की विस्तृत भूमिका और राजपूत शैली के चित्रो से ग्रंथ सुसज्जित है।

१०– राजस्थानी व्रत साहित्य

इस ग्रंथ मे राजस्थानी गद्य पद्यात्मक ४३ व्रत कथाए संकलित हैं। श्री मोहनलाल पुरोहित ने इसका सम्पादन किया है।

११– महादेव-पारवती री वेलि

राजस्थानी साहित्य म 'वेलि सज्ञक अनेक रचनाएँ' मिलती हैं। 'वेलि क्रिसन रुकमणी री' के अनंतर प्रस्तुत वेलि का महत्वपूर्ण स्थान है। इसका संपादन श्री रावत सारस्वत न किया है।

१२– सदयवत्स वीर प्रबंध

१५ वीं शताब्दी के भीम कवि रचित सुकवि सदयवत्स और सावलिंगा की वार्ता संबंधी इस प्राचीन काव्य का महत्त्वपूर्ण सम्पादन डॉ० मजूमदार मजूमदार ने किया है। परिशिष्ट में इस कथा सम्बन्धी दो अन्य काव्य भी दिए गए हैं।

१३– वरसगांठ

राजस्थानी भाषा के ममज्ञ विद्वान श्री मुरली धर जी व्यास द्वारा रचित २८ कहानियों का यह अनूठा संग्रह है। कहानियाँ राजस्थानी भाषा के माध्यम में लिखी गई है। इन कहानियों में अधिकतर सामाजिक कहानियाँ हैं। कुछ ऐतिहासिक कहानियाँ भी हैं जिनमें राजस्थान के अतीत गौरव का चित्रण किया गया है। सामाजिक कहानियों में वतमान के राजस्थानी समाज के पतनो न्मुख अनेक दशा तथा विकृतियों के दृश्य हैं।

१४– संक्षिप्त राजस्थानी व्याकरण

प्रस्तुत ग्रंथ के लेखक श्री नरोत्तमदास स्वामी हैं। इस ग्रंथ का भाषा वैज्ञानिक महत्त्व है। राजस्थानी भाषा के व्याकरण विषयक एक बड़े अभाव की पूर्ति इस ग्रंथ द्वारा हुई है। यह स्मरणीय है कि प्रस्तुत पुस्तक मारवाड़ी सम्मेलन बम्बई द्वारा राजस्थानी के पुरस्कार के लिए सर्व श्रेष्ठ घोषित की गई एवं स्वामी जी को ५०० रुपया से पुरस्कृत किया गया।

१५– चन्दायन

हिन्दी के प्रसिद्ध कवि मुल्ला दाऊद रचित इस महत्त्वपूर्ण प्रेम काव्य का संपादन श्री रावत सारस्वत ने किया है।

१६– राजस्थानी गद्य-साहित्य उद्भव और विकास

प्रस्तुत ग्रंथ डा० शिवस्वरूप शर्मा अचल का शोध प्रबंध है जिसमें राजस्थानी साहित्य की अनेक विशिष्टताओं में उनकी गद्य रचनाओं की प्राचीन

परम्परा और विकास को प्रस्तुत किया गया है ।

राजस्थानी भाषा प्रचार-प्रकाशन

इस संस्था से निम्नांकित राजस्थानी भाषा के ग्रन्थों का प्रकाशन हुआ है –

१– परदेशी री गोरडी

इसके लेखक श्री मूलचन्द 'प्राणेश' हैं । ग्रन्थ में नई नई दुलहिनों पर सास, नणद, जिठाणी, देवर द्वारा होने वाले अत्याचारों की रोमांचकारी कथा वर्णित है । साथ ही नई दुलहिन इन समस्त अत्याचारों के घूंट को किस प्रकार पी जाती है इसका हृदयग्राही वर्णन किया गया है ।

२– दस-दोष

साहित्य महोपाध्याय श्री नानूराम संस्कर्ता रचित दस सामाजिक कहानियाँ इसमें संकलित हैं । समाज और व्यक्ति के दस दोषों को लेकर कवि ने इन कथाओं का सृजन किया है । मारवाड़ी समाज में प्रचलित उल्टे सीधे अंध विश्वास, लगवार आदि की इन कहानियों में खुल कर भर्त्सना की गई है ।

३– हिये तणा उपाय

श्री मूलचन्द 'प्राणेश' की यह दूसरी सृजनात्मक कृति है जिसमें ६७ लघु किन्तु ज्ञान वर्द्धक कथाएँ संग्रहित हैं । लेखक ने कथाओं का संग्रह घरों, गलियों, मेले त्योहारों आदि अनेक स्थलों पर स्वयं उपस्थित होकर किया है । प्रत्येक घटना में हृदय की स्फुरणा है । जैसे ही कहानी का अन्त होता है उसका शीर्षक जो कि मुहावरे या लोकोक्तियाँ हैं स्वयं स्पष्ट हो जाता है । टीकरी घड़ा फोड़, सर ने सवासेर, आन्धे बहरे के भरम, कोठरी हाडो आपा रहे चोर रे मन में चानणो, परलग ने परमाण कांई, रावां रा भाव रात गया किए किए न न्हांहे आदि ऐसी ही रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक कहानियाँ हैं ।

४– मूरज कू डालो

श्री सूय नकर पारीक रचित ४६ कविताओ का इसम स ग्रह किया गया है। पुस्तक का प्रारम्भ सरस्वती वन्ना म हुआ है। साथ ही 'रावन भया' आदि कविताओ म देश की राजनीतिक स्थिति पर भी प्रकाश डाला गया है।

५– एकल गिडदाढाले री ग्रान

ग्रथ का सम्पादन श्री मूलचन्द प्राणेश ने किया है। प्रस्तुत पुस्तक म कथात्मक प्रतीको के सहारे दाढाल सूअर और भूडण 'सूकरी' तथा उसके वश का जो चित्रण किया गया है वह परोक्ष मानवीय काय कलापो की ही प्रत्यभिव्यजना है। कथा के सभी पात्र मध्ययुगीन राजपूतो की वीरता साहस, शीलता व शौय भावना प्रकट करते हैं। पुस्तक गद्य-पद्य म लिखी गई है।

६– राजस्थान रा प्रतिनिधि कवि

इस पुस्तक म राजस्थान के वतमान ८३ कवियो के सचित्र परिचय के साथ उनकी प्रतिनिधि रचनाओ को स कलित किया गया है। इसका स पादन श्री मूलचन्द प्राणेश ने किया है।

७– राजस्थानी रा प्रतिनिधि कथाकार

मूलचन्द प्राणेश द्वारा सपादित इस पुस्तक म वतमान राजस्थान के लेखको की २१ कहानियो का स कलन लेखको के चित्रों एव परिचय के साथ किया गया है।

वातायन सम्थान

इस स स्थान से प्रकाशित साहित्यिक ग्रथो का स क्षिप्त परिचय इस प्रकार है –

१– एक उजली नजर की सूई

नई पीढी के ख्याति प्राप्त रचनाकार श्री हरीश भादानी हिन्दी साहित्य जगत म अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। इस पुस्तक म भादानी जी रचित गीतो

का सग्रह है । गीत ममस्पर्शी हैं एव वतमान युग की अनेक समस्याओ पर प्रकाश डालने वाल हैं। इस ग्रथ का महत्त्व इसी बात से स्पष्ट हो जाता है कि 'राजस्थान साहित्य अकादमी' से इस पुस्तक के लिए श्री भादानी जी को १०००) रुपया से पुरस्कृत किया गया है।

२– गीतायन

प्रस्तुत प्रकाशन म श्री हरीश भादानी व डॉ० पूनम दैया के गीतो का सग्रह किया गया है । इसम नये पुराने ४५ गीत और गीत विधा पर कतिपय टिप्पणियाँ हैं । मूल्याकन के विशिष्ट सन्भ मे श्री कन्हैया लाल सेठिया, श्री केदार नाथ सिंह और श्री गोपालदास नीरज' की समीक्षात्मक टिप्पणियाँ द्रष्टव्य हैं ।

३– सुलगते-पिंड

इस पुस्तक म हरीश भादानी द्वारा रचित कविताओ का सग्रह किया गया है । ये कविताएँ यथाथ को सामने रख कर लिखी गई हैं । वतमान समाज की विषम नीतियो पर कवि का आक्रोश इन कविताओ मे प्रकट हुआ है । भूख और अभाव ॥ लडने वाले गरीब क्या इसान नही हैं ? क्या उन्ह रोटी रोजी का अधिकार नही है ? आदि आदि सदभ की सफल अभिव्यजना प्रस्तुत सकलन की कविताओ के माध्यम से हुई है ।

४– एक टुकडा धूप

नवीन काव्य प्रकाशन की कडी म डॉ० गोपाल कृष्ण सराफ की कविताओ का सग्रह इस पुस्तक म है । नेत्र विशेषज्ञ कवि ने अपने ही काम म आने वाले उपकरणो को कविता की भाषा मे ढालने का प्रयत्न किया है । शल्य चिकित्सा के उपकरण डाक्टरी आपरेशन मे जहा केवल वजन और धातु की वस्तुमात्र का अर्थ देते हैं वे ही एक टुकडा धूप की कविताओ म विभिन्न काव्य सन्दर्भों से जुडे हुए हैं ।

५– ये कथाएँ

इस पुस्तक का सम्पादन श्री प्रेम सक्सेना ने किया है । यह हिन्दी की

प्रथम पुस्तक है जिसम अन्तर्राष्ट्रीय, अन्तर्प्रान्तीय और हिन्दी भाषा की कहानियों का त्रिवेणी सगम है । इसम १२ विदेशी, १२ भारतीय अन्य भाषाओं (कन्नड, तेलगू मलयालम आदि) तथा ६ हिन्दी कहानियों का सग्रह किया गया है।

६– प्रस्तुति

सन् १६६७ क शिक्षक दिवस पर शिक्षा विभाग राजस्थान के लिए राजस्थान के सृजनशील शिक्षकों का कविता-सग्रह प्रस्तुति' है । इसका सपादन श्री शान भारिल्ल व श्री प्रेम सक्सेना ने किया है । पुस्तक म नये व पुराने दोनो प्रकार के कवि शिक्षको का काव्य सकलित किया गया है ।

७– हिन्दी साहित्य का पिछला दशक

इसका सम्पादन श्री विश्वनाथ ने किया है । पुस्तक म सन् १६५२ से १६६२ ई० तक के साहित्य का मूल्याकन किया गया है । साहित्य की विभिन्न विधाओ यथा, कहानी उपन्यास, निबन्ध, समालोचना काव्य एव शोध की दशकगत उपलब्धियों का अधिकारी विद्वानो द्वारा विवेचन प्रस्तुत किया गया है ।

श्री अभय जैन ग्रन्थालय

इस सस्था के साहित्यिक प्रकाशन निम्नाकित हैं–

१– सीता राम चौपाई

राम और सीता का समादर हिन्दू साहित्य मे जितना है उतना जन साहित्य म भी है । प्रस्तुत पुस्तक मे सीता राम विषयक कथा जन साहित्य के अपने ढग से लिखी गई है ।

२– जीव दया प्रकरण काव्यत्रयी

प्रस्तुत ग्रथ म जीव दया प्रकरण, नाना वृत्तक प्रकरण और बालावबोध नामक तीन प्राकृत रचनाओ को हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित किया गया है । तीनो ही रचनाएँ जन धम से सबधित हैं और प्राचीन हैं । इनम जीव

दया अर्थात् अहिंसा तत्त्व का महत्त्व वर्णन है जो सार्वदेशिक तथा सार्वकालिक सत्य है। ग्रंथ के प्रारम्भ में जैन धर्म की सार्वभौमिकता पर विचार प्रस्तुत किये गए हैं।

३- राजा श्रीपाल और मैनासुन्दरी

गुजराती लेखक श्री जय भिक्खु की पुस्तक का अनुवाद डा० जय शंकर श्रीमाली ने किया है। ग्रंथ के प्रारम्भ में श्री अगरचन्द जी नाहटा ने नवपद या सिद्ध चक्र की आराधना का महत्त्व प्रतिपादन किया है। इसी सिद्धचक्र की आराधना से राजा श्रीपाल एवं रानी मैनासुन्दरी ने महान् सुफल प्राप्त किया था जिससे सम्बंधित संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती और कन्नड़ भाषा में ६० से भी अधिक गद्य पद्यात्मक रचनाएँ प्राप्त होती हैं। इस पुस्तक में भी संक्षेप में कथा और नवपद व्रत की विधि वर्णित है। ग्रंथ के प्रारम्भ में नवपदयंत्र का ब्लाक भी है।

४- सती मृगावती

इस पुस्तक में जैन इतिहास प्रसिद्ध सती मृगावती की कथा को संक्षेप में लिखा गया है। पुस्तक के लेखक श्री भंवरलाल जी नाहटा हैं।

हिन्दी विश्व भारती अनुसंधान-परिषद्

इस संस्था से प्रकाशित साहित्यिक ग्रंथ का विवेचन इस प्रकार है -

१- सोढीनाथी रा गूढार्थ

राजस्थानी में अनेक साहित्यिक विधाएँ हैं जिनमें गूढार्थ की अपनी अलग महत्ता है। यह ज्ञानवर्द्धक साहित्य है और राजस्थानी भाषा में प्रचुर परिमाण में प्राप्त है। इस संस्था ने इसी विधा पर प्रस्तुत पुस्तक का प्रकाशन किया है।

पुस्तक के प्रारम्भ में दस पृष्ठों की भूमिका है जिसमें कवयित्री सोढी नाथी और उसकी रचनाओं के परिचय के साथ गूढार्थ की प्राचीन परम्पराओं

पर अच्छा प्रकाश डाला गया है । तदनन्तर ३२ पृष्ठों म ७४ राजस्थानी गीतों का सग्रह इस ग्रन्थ म प्रस्तुत किया गया है । प्रारम्भ गीतों के साथ उनका हिन्दी में अर्थ भी दे दिया गया है जिससे ग्रन्थ सर्व साधारण के लिए उपयोगी बन गया है । मर्द दादा के राजस्थानी म दस्तावेज भी दिए गए हैं ।

श्री जुबली नागरी भण्डार

सन् १९२३ म स स्था की ओर स तुलसी जयन्ती का भव्य आयोजन किया गया । उसी समय निम्नांकित दो पुस्तकें भी स स्था स प्रकाशित हुईं जिनका परिचय इस प्रकार है —

१- कवितोपहार

पुस्तक क प्रारम्भ म प्रस्तावना है जिसम महा कवि तुलसी की स क्षिप्त जीवनी दी गई है । पुन पुस्तक म कान्हाह हुसन राना, बाबू काशी प्रसाद जी प० भाऊ लाल जी गोस्वामी प० सूय नारायण आभा विद्यावाचस्पति रिद्धा धर जी शास्त्री, प० मदन गोपाल गोस्वामी प० फागुन जी गोस्वामी रणछोड लाल जी गोस्वामी व प० नारायण दास जी प्रभृति विद्वानों की कविताओं का स ग्रह किया गया है । सभी कविताएँ महाकवि तुलसी से स बन्धित हैं ।

२- श्रीमद् गोस्वामी तुलसीदास जी के काव्य का महत्व

इसम महाकवि तुलसी के व्यक्तित्व एव कृतित्व पर अति स क्षिप्त किन्तु सारगर्भित विवेचन प्रस्तुत किया गया है । पुन रामचरितमानस विनय पत्रिका गीतावली, कवितावली आदि के हृदयग्राही अ शो का स कलन किया गया है । स कलित अ शो म अधिकतर अ श रामचरितमानस एव विनय पत्रिका से उद्धृत किए गए हैं ।

पत्रिका-प्रकाशन

बीकानेर की प्रमुख चार साहित्यिक स स्थाओं से शोध एव साहित्य

सवना पत्रिकाओं का प्रकाशन होता है । सभी का विवरण इस प्रकार है —

राजस्थान भारती

श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट की यह त्रैमासिक पत्रिका है जिसका प्रकाशन सन् १६४८ से नियमित रूप में हो रहा है । यह पत्रिका न केवल राजस्थान प्रदेश की अपितु भारत की गौरवपूर्ण पत्रिकाओं में अपना विशिष्ट स्थान रखती है । भाषा और साहित्य के अतिरिक्त कला, इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति से सम्बन्धित विषयों पर इस पत्रिका में शोधपूर्ण लेख प्रकाशित होते हैं । इस पत्रिका के लेखकों में देश भर के चोटी के विद्वान् सम्मिलित हैं जिनमें डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ० दशरथ शर्मा, डा० कन्हैया लाल सहल, डा० सत्य प्रकाश, डा० आनन्द प्रकाश दीक्षित प्रभृति के नाम विशेष रूप से गिनाए जा सकते हैं । इस पत्रिका के अनेक महत्वपूर्ण विशेषांक भी प्रकाशित हो चुके हैं जिनमें डा० तस्सितोरी विशेषांक, पृथ्वीराज राठौड़ विशेषांक, महाराणा कुंभा विशेषांक, लोक साहित्य विशेषांक तथा भारतीय संस्कृति विशेषांक विशेष उल्लेखनीय हैं । तैस्सितोरी विशेषांक बहुत ही महत्वपूर्ण एवं उपयोगी सामग्री से परिपूर्ण है । यह अंक एक विदेशी विद्वान् की राजस्थानी साहित्य सेवा का बहुमूल्य सचित्र कोष है । इसी प्रकार पृथ्वीराज राठौड़ विशेषांक में बीकानेर नरेश महाराजा पृथ्वीराज राठौड़ के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर पूर्ण प्रकाश डालता है । अन्य सभी विशेषांक भी स्व-स्व संबंधी विषयों पर पूर्ण प्रकाश डालते हैं । विशेषांकों के अतिरिक्त संस्था के सम्मान्य विद्वानों द्वारा लिखित लेखों की वृहद् सूचियां भी पत्रिका में प्रकाशित हुई हैं जिनमें सब श्री डॉ० दशरथ शर्मा, नरोत्तमदास स्वामी और अगर चन्द नाहटा के लेखों की सूचियां उल्लेखनीय है । पत्रिका की उपयोगिता और महत्व के विषय में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशों में भी इसकी मांग है और इसके ग्राहक भी है । उच्चस्तरीय शोध ग्रंथों में सर्वत्र ही 'राजस्थान भारती' को उद्धृत किया जाता है । अस्तु अनुसंधित्सु 'राजस्थान भारती' की पुरानी फाइलों का अध्ययन करने इन्स्टीट्यूट में आते हैं । सारांश में शोध कर्ता के लिए यह पत्रिका अनिवार्यतः संग्रहणीय है ।

विश्वम्भरा

यह हिन्दी विश्वभारती अनुसंधान परिषद् की त्रैमासिक पत्रिका है। इस पत्रिका का सम्पादन विद्यावाचस्पति प्रो॰ विद्याधर जी शास्त्री करते हैं। इसका प्रकाशन सन् १९६३ से नियमित रूप से हो रहा है। पत्रिका में प्राचीन भारतीय साहित्य, विशेष रूप से संस्कृत काव्य शास्त्र धर्म शास्त्र वैदिक देव शास्त्र, पुराण ज्योतिष, अन्तरिक्ष विज्ञान आयुर्वेद एवं विभिन्न कलाओं से संबंधित शोधपूर्ण लेख प्रकाशित होते रहे हैं। प्राचीन राजस्थानी एवं जन साहित्य में संबंधित गवेषणात्मक लेख भी विश्वम्भरा के अनेक अंकों में संकलित हैं। पुस्तक समालोचना एवं आयोजित साहित्यिक कार्य क्रमों का विवरण भी पत्रिका के प्रत्येक अंक में प्रकाशित होता है।

वातायन

वातायन संस्थान की यह मुख्य पत्रिका है। इसमें हिन्दी साहित्य की आधुनिक विधाओं जैसे नई कविता, नई कहानी नवलेखन आदि से संबंधित महत्वपूर्ण रचनाओं एवं लेखों का प्रकाशन किया जाता है। संस्थान की स्थापना के साथ ही पत्रिका प्रकाशन कार्य प्रारम्भ हुआ। पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ में त्रैमासिक रूप में होता रहा किन्तु अगस्त सन् १९६४ से प्रकाशन मासिक रूप में होने लगा। अनेक विशेषांक भी प्रकाशित हुए हैं जिनमें रंगमंचीय एकांकी नाटक विशेषांक मूल्यांकन विशेषांक, गीत विशेषांक, उपन्यास तथा सृजन मूल्यांकन विशेषांक विशेष उल्लेखनीय हैं। सभी विशेषांकों की साहित्यिक विवेचना तो अग्रिम अध्याय में प्रस्तुत की जा रही है तथापि यहां में इतना ही कहना अनुचित न होगा कि आज के नवीन साहित्य की नवीन विधाओं की श्री वृद्धि करने में इन विशेषांकों का अपना महत्व है। इनमें ख्याति प्राप्त नव लेखकों की रचनाएँ संकलित हैं।

जलमभोम

राजस्थानी भाषा प्रचार प्रकाशन संस्थान की यह मुख पत्रिका है। पत्रिका का प्रकाशन त्रैमासिक होता है। इसके संपादक श्री मूलचन्द 'प्राणेश' हैं।

इस पत्रिका की भाषा राजस्थानी है। पत्रिका के प्रकाशन का मूल उद्देश्य प्राचीन राजस्थानी साहित्य को प्रकाश में लाना तथा राजस्थानी में सृजित समकालीन साहित्य को प्रकाशित करना है। वस्तुत इस पत्रिका के माध्यम से राजस्थानी के लेखकों को अपनी रचनाओं के प्रकाशन का सुअवसर प्राप्त होता है।

साहित्यिक संगोष्ठियाँ

बीकानेर की सभी साहित्यिक संस्थाओं में प्रायः सप्ताहांत पक्षांत एवं मासिक साहित्यिक संगोष्ठियों का समायोजन होता है। ये संगोष्ठियाँ विचार संगोष्ठी कविगोष्ठी, समीक्षात्मक कविगोष्ठी, समीक्षात्मक काव्य गोष्ठी कथा गोष्ठी, आदि विभिन्न रूपों में होती हैं। संगोष्ठी-समायोजन की दृष्टि से संप्रति 'संहिता' संस्था का विशेष महत्व दिया जा सकता है जिसमें प्रति सप्ताह उल्लिखित संगोष्ठियों के सभी रूपों में से एक न एक का आयोजन किया जाता है। संस्था की स्थापना के अनन्तर यद्यपि विषय वैभिन्य की दृष्टि से अनेक संगोष्ठियों का समायोजन किया गया तथापि कुछ एक का उल्लेख मात्र विवेचनीय कार्यक्षेत्र के स्पष्टीकरण के लिये आवश्यक है। संहिता में हुई महत्त्वपूर्ण कुछ संगोष्ठियों का विवरण इस प्रकार है —

समीक्षात्मक कवि गोष्ठियाँ

इस प्रकार की संगोष्ठियों के अन्तर्गत दो या तीन कवियों की दो तीन रचनाएँ सुनकर उन पर समीक्षा का आयोजन किया जाता है। 'संहिता' में बीकानेर के प्रसिद्ध कवि श्री हरीश भादानी डा० पुष्कर शर्मा, प्रो० रामदेव आचार्य प्रकाश परिमल प्रो० योगेन्द्र किसलय प्रभृति की रचनाओं पर इस प्रकार की गोष्ठियाँ समायोजित की गई है।

विचार गोष्ठियाँ

इस प्रकार की संगोष्ठियों में संहिता संस्था में प्रतिबद्धता एवं सृजन' अज्ञेय की काव्यचेतना का विकास, समकालीन साहित्य कुछ प्रतिक्रियाएं रचना

निर्मिति और परख', 'कलाकार एव विद्रोह की पृष्ठभूमि' आदि विषयो को लेकर हुए हैं।

कथा-गोष्ठियाँ

इनम किसी प्रमुख कथाकार की रचना को लेकर समीक्षात्मक परिचर्चा होती है। सहिता सस्था मे राजानन्द भटनागर की चबूतरा, योगेन्द्र किसलय की कहानी—' कहानियो पर सगोष्ठियाँ हुई हैं।

पुस्तक समीक्षा गोष्ठियाँ

इस प्रकार की सगोष्ठियो म नगर के प्रतिनिधि साहित्यकारो की कृतियो पर समीक्षा की जाती है। ऐसी सगोष्ठियाँ भी सहिता सस्था म अनेक हो चुकी हैं। उदाहरणार्थ अमरा का विद्रोह' तथा श्री शम्भूदयाल सक्सेना रचित रत्न रेख पुस्तक पर समीक्षा प्रस्तुत की गई थी।

इसी प्रकार की साहित्यिक सगोष्ठियाँ वातायन सज्जनालय एव नागरी भण्डार म समय समय पर समायोजित हुई। इनके अतिरिक्त साहित्यकारो के सम्मान मे भी सगोष्ठियो का आयोजन तथा कवि गोष्ठियो का प्रवतन होता रहा है। साराश म सभी स स्थाओ मे साहित्यिक स गोष्ठियो का आयोजन होता रहा है जिनम अनेकविध नवीन साहित्य के निर्माण म महत्वपूर्ण योग मिला है।

भाषण मालाएँ तथा आसनपीठ व्याख्यान

नगर की अधिकाश साहित्यिक स स्थाओ द्वारा उच्चस्तरीय साहित्यिक विषयो पर भाषण मालाएँ समय-समय पर आयोजित की गई हैं जिनके अन्तगत विषय के अधिकारी विद्वानो को आमन्त्रित करके उनके भाषण कराए गए। इन भाषण मालाओं के विषय सामान्यत प्राचीन एव नवीन भारतीय वाड मय स स्कृति कला इतिहास पुरातत्व जन एव राजस्थानी साहित्य से स बन्धित रहे हैं। श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट म डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल श्री रायकृष्ण दास डॉ० आ रामचन्द्रन् डॉ० कलानन्द शास्त्री

डा० सत्य प्रकाश, डा० डब्ल्यू० एलन, डॉ० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या, डा० तिबे रियो तित्सरी आदि अनेक अंतर राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानों के भाषण इस कार्यक्रम के अंतर्गत हो चुके हैं। इसी प्रकार वातायन संस्थान में सब श्री अज्ञेय, रघुवीर सहाय, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, विष्णु प्रभाकर, माचवे, सरल देवड़ा तथा गुण प्रकाशक सज्जनालय में सेठ गोविन्ददास, डा० नामवर सिंह, जस्टिस लक्ष्मी नारायण छंगाणी प्रभृति विद्वानों के भाषण हुए हैं। हिन्दी विश्वभारती अनुसंधान परिषद् में भी भाषण देने हेतु डा० सत्येन्द्र, डा० फतेहसिंह, विश्वनाथ प्रसाद प्रभृति विद्वान् समय समय पर पधारे हैं।

आसनपीठ व्याख्यान से अभिप्राय उन व्याख्यान-कार्यक्रमों से है, जिनका आयोजन संस्थाओं से सम्बन्धित महान् विद्वानों की स्मृति में स्थापित आसनपीठों पर किया जाता है। नगर की केवल दो संस्थाओं में इस प्रकार के आसनपीठ स्थापित किए गए हैं। श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट में तो सन् १६५८ में पृथ्वीराज राठौड़ के विशिष्ट आसनपीठ की स्थापना की गई है जिसमें डा० मनोहर शर्मा, प० श्री लाल मिश्र प्रभृति प्रसिद्ध विद्वानों के भाषण हो चुके हैं। इसी प्रकार हिन्दी विश्व भारती अनुसंधान परिषद् के द्वारा व्यास आसनपीठ की स्थापना गत तीन वर्षों से की गई है जिसके अंतर्गत भारतीय काव्य-शास्त्र एवं हिन्दी समीक्षा की विभिन्न प्रवृत्तियों पर विषय मर्मज्ञ विद्वानों के भाषण हुए हैं।

अन्य गतिविधियाँ

बीकानेर की साहित्यिक संस्थाओं के इस कार्य क्षेत्र में जयन्ती समारोह, साहित्य मनीषियों का स्वागत, साहित्य संवर्द्धन वृत्तियां, पुरस्कार एवं प्रदर्शनियों आदि का विवेचन किया जा सकता है। सभी संस्थाओं में समय-समय पर ख्यात नामा विद्वानों और साहित्यसेवियों के निर्वाण दिवस और जयन्तियाँ मनायी जाती हैं। इस प्रकार के उत्सवों में श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट में डा० तैसितोरी, लोकमान्य तिलक, पृथ्वीराज राठौड़, मुनि समयसुन्दर आदि के स्मृति उत्सव विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। हिन्दी विश्वभारती अनुसंधान-परिषद् में संस्कृत साहित्य के अमर कवि कालिदास, भवभूति, माघ, वाल्मीकि आदि की जयन्तियाँ विशेष रूप से मनाई जाती हैं। इस संस्था का वर्षोत्सव समारोह विशेष

सराहनीय है जिसमे नगर के प्रमुख साहित्य सेवियो तथा सगीतज्ञो का सम्मानित किया जाता है। इसी प्रकार अन्य सस्थाएँ भी जयन्ती तथा के साथ साथ अन्य सभी उपयुक्त गतिविधियो को यथावसर सुचारु रूप मे सम्पन्न करती रहती हैं।

इस प्रकार बीकानेर नगर की साहित्यिक सस्थाओ के कार्यक्षेत्र के अन्तर्गत उनकी विभिन्न गतिविधियो एव कार्यक्रमो के उपयुक्त विवेचन से हम इस निष्कर्ष पर पहुचते हैं कि आलोच्य सस्थाए न केवल साहित्यिक सृजन और समालोचन का ही काम कर रही हैं अपितु नगर मे साहित्यिक जागरूकता का वातावरण भी बनाए हुए हैं।

अध्याय / ४

बीकानेर की साहित्यिक संस्थाओं के प्रमुख साहित्य का मूल्यांकन

पिछले अध्याय में बीकानेर की साहित्यिक संस्थाओं द्वारा अद्यावधि प्रकाशित संपूर्ण साहित्य का परिचय उनके कार्य-क्षेत्र के अंतर्गत प्रस्तुत किया गया है। नगर की विभिन्न संस्थाओं द्वारा प्रकाशित ग्रंथों में साहित्यिक एवं साहित्येतर दोनों प्रकार की कृतियाँ हैं। साहित्यिक कृतियों में साहित्यिक शोध, विभिन्न साहित्य विधाओं पर सृजनात्मक, समालोचनात्मक एवं लोक साहित्य विषयक ग्रंथ सम्मिलित हैं। साहित्येतर ग्रंथों में ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, दर्शन, शिल्प एवं कला सम्बन्धी कृतियाँ हैं। इनके अतिरिक्त संस्थाओं द्वारा प्रकाशित मासिक एवं त्रैमासिक पत्रिकाएँ भी हैं।

इस अध्याय में संस्थाओं द्वारा प्रकाशित संपूर्ण वाङ्मय में से उन रचनाओं का साहित्यिक मूल्यांकन स्वतन्त्र रूप से किया गया है जिनका सृजनात्मक एवं समालोचनात्मक साहित्य की दृष्टि से विशेष महत्त्व है। मूल्यांकन के लिए गृहीत रचनाओं में विभिन्न विधाओं की साहित्यिक कृतियाँ हैं। विधा-वैविध्य के कारण रचनाओं का मूल्यांकन स्वतन्त्र रूप से किया गया है। जहाँ तक मूल्यांकन के मानदंडों का प्रश्न है, काव्य कृतियों की समीक्षा भाव पक्ष एवं कला पक्ष के प्रचलित प्रतिमानों के साथ-साथ मानवतावादी विचार दर्शन के परिप्रेक्ष्य में की गई है। नई कविता, नयी कहानी और नव लेखन से सम्बन्धित कृतियों का मूल्या

कन कथ्य और शिल्प के साथ साथ समसामयिक जीवन बोध के परिप्रेक्ष्य म
किया गया है।

आलोच्य ग्रन्थो की सस्थानुसार सूची इस प्रकार है-

श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीटयूट

१ अचलदास खीची री वचनिका
२ हम्मीरायण
३ हरि रस
४ राजस्थानी नीति दूहा
५ दलपत विलास
६ जिनराजसूरि कुसुमाजलि
७ धर्मवर्द्धन ग्रन्थावली
८ सीताराम चौपाई
९ राजस्थान रा दूहा
१० वरस गाठ
११ महादेव पार्वती री वेलि

भारतीय विद्या मन्दिर शोध-प्रतिष्ठान

१२ नागदमण

जुबली नागरी भण्डार

१३ श्रीमद् गोस्वामी तुलसीदासजी के काव्य का महत्व
१४ कवितोपहार

राजस्थानी भाषा प्रचार प्रकाशन (सस्थान)

१५ राजा भिडगदाल री बात

वातायन सस्थान

१६ मुलगते पिड

१७ एक उजली नजर री सूई
१८ एक टुकड़ा धूप
१९ प्रस्तुति

महिता

२० विजय हमारी है

विशेषांक मूल्यांकन

२१ वातायन— नाटक विशेषांक, मूल्यांकन विशेषांक गीत अंक।

राजस्थान भारती

२२ पृथ्वीराज राठौड़ जयंति विशेषांक, महाराणा कुम्भा विशेषांक लोक साहित्य विशेषांक आदि।

अचलदास खीची री वचनिका

शिवदास गाडण रचित 'अचलदास खीची री वचनिका' १५ वीं सदी का वीर रसात्मक चपू काव्य है। इस काव्य में 'गागरोन गढ़' (कोटा) के खीची राजा अचलदास और माडू के बादशाह हुसंगगोरी के युद्ध का वर्णन है। यह युद्ध वि० स० १४८० में हुसंग गोरी के गागरोन गढ़ पर चढ़ाई करने पर हुआ था। डा० तस्सितोरी ने ग्रन्थकार को अचलदास का समकालीन बतलाते हुए युद्ध के समय ही काव्य का निर्मित होना सूचित किया है।[1] डा० हीरालाल माहेश्वरी के मतानुसार काव्य का निर्माण स० १५०० के लगभग हुआ।[2] इस प्रकार प्रस्तुत रचना ऐतिहासिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण सिद्ध होती है। यह कृति काव्य सौष्ठव उक्ति वैचित्र्य और वीर रस की दृष्टि से उत्तम काव्यों की श्रेणी में

१— डॉ० तस्सितोरि ए डिस्क्रिप्टिव केटलाग आफ बार्डिक एंड हिस्टारिकल मेन्युस्क्रिप्ट्स (प्र० भाग) बीकानेर स्टेट पृष्ठ ४१

२— डा० हीरालाल माहेश्वरी राजस्थानी भाषा और साहित्य पृष्ठ ८४

है।[1] उदाहरण द्रष्टव्य है —

एकणि वनि यमतडा, एवउ अंतर थाइ।
सीह कचडी न सहै, गैवर लग्गि विकाई॥
मयर मन गलथिया जह गय तह जाइ।
सीह गलथ्यण ज सहै तो दह लग्ग विकाई॥

हम्मीरायण

राजस्थान के अनेक वीरों को राष्ट्र वीरों के रूप में सम्मान प्राप्त है। इन्हीं वीरों की परम्परा में रणथम्भौर अधिपति हम्मीर देव चौहान का नाम उल्लेखनीय है। हठ विरुद से विभूषित, सत्य रणवीर इन्हीं हम्मीर देव का चरित्र गान कवि भाण्ड ने १६ वीं सदी में हम्मीरायण लिख कर किया है। हम्मीरायण के रचना काल के सम्बन्ध में कवि ने लिखा है कि 'पनरह सह अत्तीसइ सही काति सुदि सातम सोम दिन कही' अर्थात् कवि ने १५३८, सोमवार कार्तिक शुक्ला सप्तमी को यह कथा कही थी।

हम्मीरायण की कथा सरस एवं आकर्षक है। एक बार महिमाशाह और मीर गाभरू उल्लूखाँ की अधिकांश सेना का वध कर रणथम्भौर आ पहुँचे। हम्मीर ने उनको पुष्कल धन पर्याप्त जागीर और अभयदान देकर सम्मानित किया। इधर अलाउद्दीन खिलजी को जब उल्लूखाँ की पराजय का वृत्तान्त ज्ञात हुआ तो रणथम्भौर दुर्ग को लुंठित करने के लिए चढ़ आया। उसने हम्मीर को कहला भेजा कि वह महिमा शाह मीर गाभरू राजकुमारी धारु कन्या कई गढ़ एवं अनेक गजों को उसकी सेवा में उपस्थित करे। किन्तु हठी हम्मीर इस माँग को कब स्वीकार करने वाले थे। फलतः १२ वर्ष तक युद्ध होता रहा। अन्ततोगत्वा सुलतान अलाउद्दीन को विवश होकर संधि करनी पड़ी। हमीर के विश्वासपात्र रायमल व रणमल दोनों प्रतिनिधि बन कर सुलतान के शिविर में गए। दोनों ही विश्वासघाती और कुलविनाशी निकले। उन्होंने स्वार्थवश सुलतान से कूट संधि कर हमीर की सेना को सुलतान की

१— डा० पुरुषोत्तम मेनारिया राजस्थानी साहित्य का इतिहास पृष्ठ ५७

सेना में सम्मिलित किया तथा युद्धार्थ संचित धन धान्य को इतस्तत छिपवा दिया । एक बार फिर भयंकर युद्ध हुआ जिसमें सर्वस्व सर्वनाश जानकर हमीर ने आत्मघात कर लिया और नारियों ने जौहर व्रत धारण किया । सुलतान किले में प्रविष्ट हुआ । उसे राख की ढेरी के अतिरिक्त कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ । नाल्ह भाट ने अपने स्वामी का सुलतान के सम्मुख यशोगान किया जिसे सुन कर वह प्रसन्न हुआ और नाल्ह भाट के कहने से रायमल और रणमल की खाल खिचवाली । संक्षेप में यही इस रचना का कथानक है । ग्रन्थ का उपजीव्य जैन आचार्य श्री नयचन्द्र का 'हमीर दे महाकाव्य' रहा है किन्तु ग्रन्थ में मौलिक उद्भावनाओं का अभाव नहीं है ।

चरित्र चित्रण की दृष्टि से यह एक सफल काव्य कहा जा सकता है । हमीर देव शरणागत रक्षक, रण अभग और कीर्तिधनी है । अलाउद्दीन की मांगों को ठुकराते हुए वह सुलतान के दूत मोल्हण से कहता है —

कीरति मोल्हा वरिजि मइ, लाछी तु ने जाइ
ढाम अग्रिजे उपडइ, तेन आपउ पतिसाह ।
जइ हारउ तउ हरि सरणि जइ जीतउ तउ डाउ
राउ कहइ वारहट निसुणि, बिहु परि मोनइ लाह ॥
(हम्मीरायण १५३ /४)

हमीर कीर्ति का प्रेमी है लक्ष्मी का नहीं । बादशाह ने उससे जो मांगा था वह तो उसे दमड़ी भी देने के लिए तत्पर नहीं है उसे जय और पराजय दोनों में ही लाभ दिखाई पड़ता है । गीता के सिद्धान्त जित्वा वै भोक्ष्यसे राज्यं हत्वा स्वर्गम् गमिष्यसि' का वह अक्षरश पालन करता हुआ दिखाई पड़ता है । शत्रु के आगे तो उसने झुकना सीखा ही नहीं है—

मान न मरयउ आपणउ, नमी न दीधउ केम
नाव हुवउ अविचल मही चंद सूर दुय जाम ॥ (३०८)

दूसरा मुख्य चरित्र महिमाशाह का है । वह अद्वितीय धनुर्धर, स्वाभिमानी, और दृढप्रतिज्ञ है । हमीर ने उसे अपने भाई के रूप में माना

और इस भ्रातृत्व की भावना का अ त तक पालन करते हैं । किन्तु हम्मीरायण म महिमाशाह (माहम्मद शाह) के चरित्र की उदारता पूर्णतया प्रस्फुटित न हो सकी है ।

रणमल तथा रायमल हमीर के स्वामीद्रोही अमात्य हैं जिन्ह अ त म अपने कम का फल भोगना पडता है । स्वार्थी व्यक्तियो का भी कवि भाडउ ने अच्छा खाका खीचा है । परिजना म नाल्ह भाट का चरित्र अच्छा बना है । हमीर के प्रति उसकी सच्ची स्वामी भक्ति है । वह उसे ईश्वर के रूप म मानता है । एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

जाजउ सिर सिर ऊपरि कीयउ जाणे ईश्वर तिणि पूजीयउ ।
विरमदे रउ माथउ देठि वउ मीर पडया पगहेठि ॥

प्रतिनायक अलाउद्दीन दिग्विजयी, अभिमानी तथा देश की व्यय लूट पाट के विरुद्ध है । वह स्वामी भक्ति का आदर करता है । हमीर की मृत्यु हो जाने पर स्वय पैदल रण क्षेत्र म आता हैं और उसकी आदर पूवक अ त्य क्रिया करता है । हमीर की मृत्यु से उसे खेद है—

सीगणी गुण ताउड सुल्ताण ।
आलम शाह न खाई (न) खाण ॥

हम्मीरायण एक एतिहासिक दुखान्त खण्डकाव्य है । उसके सभी वणन एव घटनाए इतिहासानुमोदित है । काव्य रूप की दृष्टि म यह रचना खण्ड काव्य है क्योकि हमीर के जीवन की घटना विशष न सबधित है ।

कवि भाडउ ने लोक जीवन म पूरी तरह रम कर अपनी रचना प्रस्तुत की है । यह खण्ड-काव्य अत्य त सरल स्वाभाविक गति से आगे बढता है । कवि अनावश्यक अलकरण एव पाडित्य प्रदशन स बचा हुआ है । तत्कालीन लोक जीवन इस कृति म सवत्र मुखर है । कथा क साथ साथ इस सबध मे कवि ने अनेक सूचनाए दी हैं । इसके साथ ही मार्मिक प्रसगो को भी कवि न अच्छी तरह पहिचाना है और कथा को सरस बना कर प्रस्तुत किया है ।

संक्षेप में यह खण्डकाव्य राजपूती संस्कृति का अप्रतिम काव्य ग्रंथ है जिसमें मरणपर्व का अद्भुत आख्यान कलात्मक दृष्टि से उत्तम बन पाया है। श्रेष्ठ खण्डकाव्य की सम्पूर्ण विशेषताएं ग्रंथ में प्राप्त हैं।

हरि रस

यह ईसर दास रचित है। ईसर दास का जन्म चारणों की बारहठ शाखा में हुआ। पिंगलसी भाई पाताभाई के मतानुसार ईसरदास का जन्म वि० सं० १५१५ है। अपने मत के समर्थन में उन्होंने यह दोहा उद्धृत किया है—

संवत् पनर पनहातरे, जनमा ईसर दास।
चारण वरण चकार मा इण दिन हुओ उजास॥[1]

श्री किशोर सिंह बार्हस्पत्य ने ईसर दास का जन्म वि० सं० १५९५ माना है। मोतीलाल जी बारहठ ने भी इसका समर्थन किया है।[2]

ईसर दास जी ने कुल १७ रचनाएं की थीं, जिनमें हरि रस सर्वप्रमुख रचना है।[3] यह काव्य राजस्थानी की ही नहीं भारतीय साहित्य की भी अनुपम उपलब्धि है। भक्त राज ने परम तत्त्व का आत्म साक्षात्कार करके जो अमृत तत्त्व प्राप्त किया उस हरि रस के रस में सब मानवगण को भेंट कर दिया।

१— ईसर बारठ हरि रस ग्रंथ द्वितीय संस्करण वि० सं० १९८०
संपादक– पिंगलसी भाई पाता भाई

२— पनरासो पिच्चानव जनम्या ईसरदास।
चारण वरण चकार मे, उण दिन हुओ उजास॥
(हरि रस – रा० रि० सो० कलकत्ता)

३— सर भुय सर नागो बीज, मूर्ग श्रावण सित मगवार।
समय प्राप्त गुरापरे, ईसर भो अवतार॥
(हरि रस – प्र० स० जामनगर)

४— डॉ० पुरुषोत्तम मेनारिया राजस्थानी साहित्य का इतिहास पृ० ८०

राजस्थान और गुजरात मे हरि रस के नित्य पाठ का प्रचलन है । ईश्वर के सगुणरूप के साथ ही निगुण रूप का भी समर्थन किया है । उदाहरण द्रष्टव्य है—

जनम पीड जगदीश, ईस अवतार म आणे ।
छल बल करि छोडवण जनम आपण कर जोडो ।
भणे नाम हूँ भणित जोति जगती जगदीस ।
हुपा साधना करण तव न काउ तलीसे ।
निकर भमि हुवे त्रिगुण नाथ तारण तरण ।
ईसरा कहे असयण सरण विसुपूरू कारण करण ।

हरि रस' म कवि ने कम उपासना ज्ञान तीनो का लोक जीवन के उदाहरणो को प्रस्तुत करते हुए सूक्ष्म रूप से किन्तु अत्यन्त सरस वर्णन किया है । निम्नोद्धृत दोहे म सृष्टि उत्पत्ति के सबध मे ईश्वरीय सत्ता के अधीन कर्मो की प्रधानता मानते हुए कवि कहता है कि—

आद तणो जोतां अरथ भाज भूरू न भ्रम्म ।
पहला जीव परठिया किया कि पहला क्रम्म ॥ (१००)

कवि का जो भी कहना है उसे उन्होने सरल एव सुबोध भाषा के माध्यम से ही कहा है । वेदान्त जस गूढ एव दुरुह विषय की बातें भी सरलता से प्रतिपादित की गई है । वेदान्त सार [1] मे अध्यारोप व अपवाद के माध्यम म अनुभव तथा महावाक्य के ज्ञान के अनन्तर जिस जीवन मुक्त की स्थिति का जसा वर्णन किया है उसे कवि ने इस प्रकार कहा है—

पदारथ लाधो हि तूझ परत्त ।
सुत्रा जिम ताण वांणा सत्त्व ॥

१— सदानन्द वेदान्त सार—

भिद्यते हृदयग्रंथि, छिद्यते सवसशया ।
क्षीयन्ते चास्यकर्माणि तस्मिन् दृष्टे परा वरे॥

मुणा हिय जाग असी जगमूर ।
नहीं जिऊ मांझ तुहारोय नूर ।। (२६३ ६५)

जो यो हो राम विमासिय जेम ।
तना घटमा हरि दीठउ तेम ।।
गली गयो भ्रम्म छुटिमन गाठ ।
करो हरि वात लगाउय कठ ।। (२७८)

सारांश म प्रस्तुत प्रकाशन आध्यात्मिक दृष्टि से स्तुत्य है । डॉ० मनोहर शर्मा इस ग्रथ के सबध म लिखते हैं -- ईसरदास ने कई ग्रथ लिखे हैं परन्तु हरि रस इनकी असाधारण रचना है । यह ग्रथ राजस्थानी साहित्य का एक अनुपमणि है ।' तीन सौ साठ छन्दों म कम, उपासना और ज्ञान इन तीन कांडो म हरि रस समाप्त हुआ है --

कवि ईसर हरि रस कियो छन्द तीन सौ साठ ।
महा दुग्ट पामै मुकुत, पो उठ कीजे पाठ ।।

राजस्थानी नीति दूहा--

राजस्थानी नीति दूहों की एक सुदीर्घ परम्परा राजस्थानी साहित्य मे मिलती है । नीति के दोहा का लकर राजिया, नाथिया भैरिया, जसवत भाजिया कानिया उदराज, फूलिया किसनीया गमा, चकरिया, मोतिया आदि सवडा कवियो के दोहे आज भी यहाँ के लोक जीवन के कठहार बने हुए है । नीति ही सच्चा धम है, नीति ही सच्चा जीवन है, इसके अभाव मे जीवन का कोई मूल्य नही हो सकता । राजस्थान का लोक जीवन इन आदर्शों का अनुपालन करता रहा है । नीति काव्य श्रेष्ठतर जीवन के आदर्श आदर्शों का हमारे व्यवहार [illegible] इतनी शीघ्रता से अग बना देता है जितनी शीघ्रता से युगों का अभ्यास भी नहीं । यही कारण है कि इनकी रचना म हमारे सभी नीतिकारो ने सार भाषा का सहज एवं माधुर्य गुण समवेत रूप हो अपनाया है । कतिपय उदाहरण द्रष्टव्य है --

जगवत होगी राम की जगी तर की देह।
जतन करता जावसी, हरमज माया दह ॥ (२७१)
करगी पूरा पूर हाथो हाथ हुवावसी।
पतगा बाहर फूक बोदन पतगो बाविया ॥ (२६७)

गरजे मा र गूजरी देख मद्व की धाम।
मयत हाथी घूमता, राजा नल र बाम ॥ (३२९)

अब स्पष्ट है नदवरला का लखर कवि न कुछ ही शब्दों म 'गागर म सागर' क समान जीवन के तत्वों का हमारे समक्ष रखा है। इसी प्रकार का भाव साम्य हम धार्मिक ग्रंथों एव अपभ्रश काव्यों म भी देखने को मिलता है।[1]

उच्चाटनशालिता का नवर नीति-दूहा के रचयिताओं न बड़े ही मार्मिक ढग से समझाने का प्रयास किया है-

सरिता कर न पान बिरछा फल खाय नह।
मतन ताव धान नर हित निपज नेमरा ॥ (१०२९)

भाग्यवान का लखर कवि का यह दोहा बेजोड़ है-
सीता घडे सुनार घ ाई राजा कर।
भोग भागणहार कम प्रमाण किसनिया ॥ (१२९५)

इसी प्रकार राजिया उमल्या आदि कवियो न अनगिनत दोहे अवसर मर्यादा, लक्ष्मी की चचलता आदि को लक्षित करके लिखे हैं।

नीति तत्व आचार शास्त्र स सम्बन्धित है। हर युग का कवि इन तत्वों का समावेश अपने काव्य म अनायास ही कर लेता है। मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य म कवि नीति तत्व विषयक काव्य रचना म अधिक स्वतन्त्र था। अत इस दृष्टि से आलोच्य सग्रह राजस्थानी काव्य परम्परा का प्रशसनीय प्रयास कहा जा सकता है।

१- श्रीमद् भागवत महापुराण तृतीय स्कध, अध्याय २५।

दलपत विलास

विक्रम सवत् १६४५ से १६६८ के मध्य लिखे गये इस इतिहास ग्रथ का ऐतिहासिक और साहित्यिक दोनो दृष्टियो से महत्त्व है। अकबर कालीन रचना होने तथा अनेक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक उल्लेखो के समावेश के कारण इस कृति का विशेष महत्त्व है। दूसरे, यह एक इतिहास ही नही अपितु एक ऐतिहासिक व्यक्ति का जीवन चरित्र भी है, जिससे उसके व्यक्तित्व को निकट से समझने म तो सहायता मिलती ही है पर साथ ही उन अनेक ऐतिहासिक घटनाओ की सूक्ष्म जानकारी भी मिलती हैं जिनका उल्लेख लेखक ने प्रसगानुसार किया है। साथ ही ये उल्लेख मुगल कालीन इतिहासकारो द्वारा भी स्वीकृत हैं।

साहित्यिक दृष्टि से इसका महत्त्व १७ वी शताब्दी के सपुष्ट राजस्थानी गद्य की एक प्रौढ रचना के रूप म माना जाना चाहिए। वसे इससे पहले के अनेक गद्य प्रकरण राजस्थानी ग्रथो विशेषत जैन ग्रथो म प्राप्त हैं पर प्रबन्ध रूप म धारावाहिक ढग से लिखा दूसरा विशुद्ध गद्य ग्रन्थ देखने म नही आया। विषय के स्पष्टीकरण के लिए एक गद्य का उदाहरण आगे द्रष्टव्य है–

' इय प्रस्तावि पातिसाह श्री अकबर दिल्ली राज करे त
वष सोलह हुआ छ। भूमि था सकल दस दिसि रा
आइ मिलिया छ।——सवत १६२७ मगसिर सुदि
६ पातिसाह औरो मेल्हियो मेमूरनान तेउण आयो।"

ग्रन्थ की महत्ता प्रतिपादित करते हुए डा० दशरथ शर्मा ने लिखा है कि राजा रायसिहजी की राज परम्परा म गद्य की दृष्टि से ' दलपत विलास ' से अधिक महत्त्वपूर्ण कोई रचना नही है। इस रचना म बिखराव है अन्यथा इसका महत्त्व " आईने अकबरी ' तथा ' तबाकीते अकबरी ' के समान ही होता।[1]

But of all the prose chronicles in Raisinghji reign perhaps none is so important as the Dalpat Vilas The only pity is that it is fragmentary Otherwise it might have rivalled in utility as well as interest much better known histories like the 'Akbarnama the Muntakhabut tawarikh and the Tabaqot-i Akbari

-Dr, Dashrath Sharma, Dayal Das Ri Khyat Part II Page ‹ 6 (Introduction)

राजस्थानी इतिहास लेखन की परम्परा में दलपत विलास को फारसी ग्रंथों ली में लिखा गया चरित्र ग्रन्थ ही समझना चाहिए क्योंकि इसमें प्रधानतः दल सिंह के जीवन से सम्बन्धित विस्तृत वर्णन तथा प्रसंगवश अन्य घटनाओं का न किया गया है। इसमें एक ओर जहाँ प्रामाणिक रूप में युगकालीन भारत राजनीतिक एवं सामाजिक चित्र उपस्थित किए गये हैं वहाँ दूसरी ओर राज नी गद्य का उत्कृष्ट रूप ग्रन्थ में प्राप्त होता है।

दलपत विलास' की भाषा सब साधारण के लिए पूर्ण रूप से बोधगम्य ी है अपितु प्रौढ़ राजस्थानी गद्य का उत्तम उदाहरण है। इस ग्रन्थ की भाषा प्राचीन पश्चिमीराजस्थानी युग की उत्तरकालीन भाषा कहा जा सकता संज्ञा व क्रिया रूपों में अउ अइ का सरलीकरण ओ औ आदि रूपों में पाया ता है। साथ ही संस्कृत की कारक विभक्तियों के रूप भी इस भाषा में देखे जा कते हैं। कहीं-कहीं शब्दों और वाक्यांशों की पुनरावृत्तियों द्वारा उत्पन्न शिथिलता छोड़ दें तो शेष भाषा सुगठित और व्याकरण सम्मत है। तत्कालीन फारसी द्भव शब्दों का खुलकर प्रयोग किया गया है।

जिनराज कृति कुसुमांजलि

१७ वीं शती उत्तरार्द्ध के जैन कवियों में जिनराज सूरि का महत्वपूर्ण ान है। ये खरतरगच्छीय आचार्य जिनसिंह सूरि के शिष्य थे। प्रारम्भ से ही होंने दर्शन, साहित्य एवं व्याकरण का अध्ययन किया तथा काव्य सर्जन में विशेष तिभा का परिचय दिया। प्रस्तुत कृति इनके काव्यों का संकलन है।

जिनराज की कविता रीतिकालीन धाराओं के बीच की कड़ी कही जा कती है। स्थूल रूप से इनकी रचनाओं को दो भागों में बाँटा जा सकता है-

अ-गुणगाथात्मक या स्तुतिपरक
आ-आध्यात्मिक या उपदेशपरक

अ- गुणगाथात्मक या स्तुतिपरक

अपने से महान् और श्रद्धेय पुरुषों का गुणगान करना, उनके लोकोपकारक र्यों का स्मरण स्तवन करना भारतीय धर्म और काव्य का मुख्य आधार रहा है।

इससे मन पवित्र होता है मानसिक शांति मिलती है और नयी संजीवनी शक्ति का अनुभव होने लगता है। कविवर ने महान् आत्माओं के अतिरिक्त महान् आत्माओं से सम्बन्ध रखने वाले तीर्थ आदि स्थानों का महात्म्य भी इस कृति में प्रतिपादित किया है।

महाकवि की शैली सराहनीय है। ऋषभदेव जी की बाल-लीला का जो वर्णन किया है उसे पढ़ते समय महा कवि सूर के बालकृष्ण का हठात् स्मरण हो आता है।

रोम राम तनु हुलसइ रे, सूरति पर बलि जाउं रे।
कबही मोपइ आइयउ रे हूं भी मात कहाऊं रे।
पगि घूघरडी घमघमइ रे, ठमकि ठमकि धरइ पाउ रे।
बांह पकरि माता कहइ रे, गोरी खेलण आउ रे॥
तिलक वणावइ अपछरा रे नयणां अंजन जोइ रे।
काजल की बिन्दी दियइ रे, दुजन चाखन होइ रे॥ (पृष्ठ ३१)

प्रभु भक्त अपने आराध्य को सदैव नेत्र में बसाने की चाह रखते हैं। आलोच्य कवि भी भक्त ही हैं। अतः वर्तमान जिन २४ तीर्थंकरों का गुणानुवाद करते हुये उन्हें अपने नेत्रों में बसाना चाहते हैं अपने हाथों से उनकी पूजा करना चाहते हैं। कवि की यह कामना इस प्रकार अभिव्यक्त हुई है–

इण परि भाव भगति मन ऊमणी सुधसमकित सहिनाणी जी।
वर्तमान चउवीसी जाणी श्री जिन राज वखाणी जी।
जइ मूरति नयणे निरखीजइ जउ हाथे पूजी जइ जी।
जइ रसनाइ गुण गाइजइ नर भव लाहउ लीजइ जी। (पृष्ठ–१७)

कवि ने भावानुकूल भाषा का प्रयोग किया है। ' श्री गिरनार तीर्थ यात्रा स्तवन ' चित्रमयी भाषा का उत्कृष्ट उदाहरण है। बहिनों द्वारा बहिन को निमंत्रण कितना मधुर, सरस और भावभीना है–

इतना होने पर भी कवि निराशावादी नहीं है। वह निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता हुआ कहता है—

> विणजारा रे बालम सुणि इक मोरी वात,
>
> तू परदेशी पाहुणउ ॥ वि० ॥
>
> विणजारा रे मतकरि तू ग्रहवास,
>
> आजकल भइ चालणउ ॥ (पृष्ठ ९३)

कला-पक्ष

जैन कवियों के लिए सामान्यतः कहा जाता है कि वे धर्मोपदेशक प्रथम और कवि बाद में हैं। किन्तु विवेच्य कवि की कविता में आध्यात्मिकता के साथ साहित्यिकता तथा भावुकता के साथ अलंकार प्रियता भी है।

जिनराज की रचनाओं की भाषा सरल राजस्थानी है। यत्र-तत्र गुजराती का पुट भी है। माधुर्य का मधुर निवेश तथा नाद सौंदर्य कविता में सर्वत्र है। शब्दालंकारों में अनुप्रास का प्रयोग अधिकता से हुआ है—

मरइ नेमिजी इक समण।

अवर ठउर न दउर करिहुं कबहुं मोमन भयाण ॥ (पृष्ठ ४७)

अर्थालंकारों में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा का विशेष प्रयोग हुआ है। उदाहरण द्रष्टव्य है—

क— मेरइ मनि तू ही वसइ रे, ज्यूं रमणायर मीन रे। (पृष्ठ ३१)

ख— मन मधुकर मोही रह्यउ रिषभ चरण अरविन्द रे। (पृष्ठ १)

ग— तिण रंग लागउ मा॰रइ जाणे चोल मजीठ। (पृष्ठ ४४)

कवि की छन्द योजना वैविध्यपूर्ण है। संगीतात्मकता प्रत्येक पद में पाई जाती है।

पद्मवर्द्धन-ग्रंथावली

उपाध्याय पद्मवर्द्धन मध्यम प्रकारा समर्थ विद्वान् एवं सरस कवि के

रूप में राजस्थानी जैन साहित्य में प्रख्यात हैं। इनका जन्म सं० १७०० में हुआ था। आप बहुश्रुत तथा बहुभाषाविद् थे। आपने संस्कृत, प्राकृत अपभ्रंश आदि प्राचीन सभी भाषाओं में रचनाएं की, जो इस ग्रंथावली में संग्रहित हैं। संस्कृत की रचनाओं में सरस्वत्याष्टक विशेष प्रसिद्ध है। डिंगल भाषा में भी आपने अनेक गीत लिखे हैं, जो भाषाशास्त्रीय की दृष्टि से विशेष महत्त्व के हैं। आपके डिंगल गीत केवल युद्ध वर्णन अथवा विरदगान तक ही सीमित नहीं हैं। प्रसादगुण विशिष्ट देवस्तुति प्रकृति-वर्णन, निर्वेद एवं राष्ट्रीयता आदि तत्त्वों का भी सम्यक् सन्निवेश आपकी रचनाओं में दृष्टिगोचर होता है जो इनकी निजी विशेषता है। ऐसे गीतों में सूर्य-स्तुति वर्षा-वर्णन, श्री महावीर-जन्म शत्रुञ्जय-महिमा, राष्ट्र-वीर शिवाजी से संबंधित गीत विशेष उल्लेखनीय हैं।

डिंगल-भाषा के अतिरिक्त महामहोपाध्याय धर्मवर्द्धन ने पिंगल-भाषा के माध्यम से भी अनेक गेय पदों की रचना की है जो अधिकतर औपदेशिक अथवा स्तवन रूप में हैं। एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

१— राग तोडी

तू करे गर्व सो सब वृथारी।
थिर न रहे सुर नर विद्याधर
ता पर तेरी कौन बधारी ॥१॥

२— राग सामेरी

मन मृग तु तन वन में मातो।
केलि करे चरे इच्छा चारी जाणे नहीं दिन जातो ॥१॥
माया रूप महा मृग त्रिसना तिण में धावे तातो।
आखर पूरी होत न इच्छा, तो भी नहीं पछतातो ॥२॥

इसके अतिरिक्त संग्रह में अनेक नीति व आध्यात्मपरक गीतों का संग्रह भी है जो एक ओर तो कवि की आध्यात्मरुचि को प्रकट करते हैं तथा दूसरी ओर तत्कालीन प्रचलित काव्य शैलियों पर भी प्रकाश डालते हैं। कवि श्री घमंडन ने चित्रकाव्यमयी रचना शैली एवं समस्यापूर्ति के रूप में भी रचनाएं की हैं। दोनों शैलियों का एक एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

१— चित्रकाव्य रचना शैली —

भरत परम मग हरित दुरित रग,
भरत सुहृत मति हरन भरम सी।
गहत अमल गुन दहन मदन बन
रहत नगन तन सहत गरम सी॥

उपर्युक्त पद्य में चित्रमयता द्रष्टव्य है जिसमें सभी लघु अक्षरों का प्रयोग किया गया है।

२— समस्या —

नीली हरी विचि लाल ममोला

समस्या पूर्ति —

एक समै वृषभान कुमारी सिंगार सजे अति आनिद सोता।
रंग हरे सब बेग मंगाइ कै, अंग सुहाइ ... सिंदि सोता।
भाल अभाल तहां घनस्याम लगाइ भरी करें कवि कलाया।
घूंघट में दुरयो अधरामृ नील हरी विचि लाल ममोला॥

घमंडन संस्कृत के भी प्रकाण्ड पंडित थे। संस्कृत के सुभाषित श्लोकों को भी अनूदित रूप में अपने ग्रन्थ में स्थान दिया है। यथा—

कवि की कृति मे सभी रस प्राप्त होते हैं । अलकारो का प्रयोग श्रम साध्य न होकर स्वत प्रसूत है । कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं —

अनुप्रास – सोतानी परि सुग सहुउ सासउ लील विलास ।
उपमा – जेहवी कमलनी हिमवल्ली तेहवी तनु विछाय ।
उत्प्रेक्षा – जाणे प्रबल पवनवरि भागो गयण ताल ज्यु दीसिवा लागा ।
दृष्टान्त तथा उदाहरण —

नजरि नजरि विहुँनी मिली, जिमी साकर सू दूध ।
मन मन सु विहुनउ मिलयउ दूध पानी जिम सूध ।

सदेह – के देवी के किन्नरी के विद्याधर काइ ।

छ दा की वविध्यता है । अनुष्टुप राजस्थानी लोक गीता की विभिन्न ढाल चौपाई तथा दशिया हैं ।

ग्रथ म अति प्राकृत तत्वा का भी समावेश है । किन्तु ये अति प्राकृत तत्व भी बाधक नही कहे जा सकते क्योकि इनके माध्यम से कवि घटनाओ में कौतूहल की वृद्धि करने मे सफल हुआ है ।

साराश म आलोच्य कृति शिल्प की दृष्टि से एक सफल काव्य रचना कही जा सकती है ।

राजस्थान रा दूहा

इस पुस्तक मे जिन दूहो को सग्रहित किया गया है, वे राजस्थानी जीवन की विशेषताओ से सबधित दूहे हैं । ग्रथ म विनय, नीति, वीर, ऐतिहासिक और भौगोलिक हास्य, और व्यग्य, प्रेम, शृगाररस शातरस तथा प्रकीर्णक शीर्षक नौ मुख्य भागो म विभक्त हैं । प्रत्येक भाग मे अनेक रोचक विषय छाट कर उनसे सबधित चमत्कार पूर्ण दोहा का सुरुचिपूर्ण सकलन किया गया है ।[1]

राजस्थानी जीवन की विशेषताओ म प्रमुखतम है, वीरत्व तथा स्वातन्त्र्य प्रेम । यही कारण है कि बीकानेर की आराध्या देवी माँ करणी की

१— गौरीशकर हीराचद ओझा राजस्थानी रा दूहा (प्रवचन) पृष्ठ ■

भी प्रार्थना इस रूप में की गई है—

बडकै डाढ वराह कडकै पीठ कमठ्ठरी ।
धडकै नाग धराह, बाघ चढै जद वीसहथ ॥[1]

राजस्थान की वीर माता जन्म लेते ही अपने नवजात शिशुओं को मृत्यु का महत्त्व बतला देती है—

इला न दणी आपणी, रण खेता भिड जाय ।
पूत सिखावै पालणै, मरण बडाई माय ॥

राजस्थानी जीवन व्यक्ति के बाह्य-सौंदर्य को इतना महत्त्व नहीं देता जितना कि पुरुषत्व और पुरुषार्थ को। इसीलिए सकलित दोहों मे कहा गया है

मूंछण तो मूंछा जण, हिरणी जणे सुगट्ठ ।
पान खडक्कै उठ चलै, पागड चालै थट्ठ ॥

इन दूहो की द्वितीय उपलब्धि है राजस्थान की भौगोलिक स्थिति का ज्ञान। एक उदाहरण देखिए जिसमे कवि ने यहाँ की प्रकृति का सुदर चित्र अकित किया है—

जल ऊंडा, थल ऊजला नारी नवलै वेस ।
पुरख पटाधर नीपजै अइहो मुरधर देस ॥

आबू पर्वत के सौंदर्य-वर्णन को देखिए—

टूके टूके केतकी, झिरणैं झिरणै जाय ।
अरबुद की छबि देखतां औरन आनदाय ॥

यही नही कवि आत्मविभोर होकर कह उठता है—

जमी और असमान बिच आबू तीजो लोक ।

सकलित दोहे प्रेम पर भी प्रकाश डालते हैं—

पोथा सो पोथा भया, पडित भया न कोय ।
ढाई आखर प्रेम का पढै सो पडित होय ॥

१— नरोत्तम दास स्वामी सपादित राजस्थान रा दूहा पृष्ठ ६

इस प्रकार सारांश में इन दूहों में राजस्थान के जीवन, समाज एवं लोक-संस्कृति का अत्यन्त प्रभावपूर्ण एवं सजीव अंकन हुआ है।

वरमगांठ

प्रस्तुत कहानी संग्रह विषयवस्तु एवं भिन्न-भिन्न दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। इसमें श्री मुरलीधर व्यास की लिखी हुई पच्चीस कहानियाँ हैं। यह इस ग्रंथ की पहली विशेषता है कि 'शुद्ध ठेठ कथोपकथन की राजस्थानी का उस" इस की भाषा को हम कह सकते हैं। इसकी कहानियाँ कुछ आधुनिक काल की समष्टिगत सामाजिक एवं व्यक्तिगत चारित्रिक अभिव्यक्तियों को लेकर हैं और कुछ ऐतिहासिक घटनाओं के प्रति लेखक का दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैं।

प्रस्तुत संकलन की कहानियाँ छोटी छोटी हैं इसलिए इनमें उपन्यास जैसा पूरा चरित्र चित्रण सम्भव नहीं था। पर दो एक झलक में लेखक ने अपने पात्रों के चरित्र की मार्मिक विशेषताओं को सार्थक रूप में दिखाया है।

संग्रह में संग्रहित कहानियों में आधिक्य सामाजिक कहानियों का है। कुछ ऐतिहासिक कहानियाँ भी हैं जिनमें राजस्थान के अतीत गौरव का चित्रण किया गया है। सामाजिक कहानियों में वर्तमान राजस्थानी समाज की विकृतियाँ के दृश्य हैं।

वरगांठ' एक निम्न की करुण कहानी है। मोती की वरगांठ है, घीसू पच्चीस रुपये उधार लाता है, जिसमें पांच रुपये काटे के एक रुपया कायली की सुनाई का, आठ आने कबूतर की ज्वार का तथा सिलाई आदि के पैसे कटकर अठारह रुपये उसके हाथ में आते हैं। वरगांठ मनाई जाती है, सब सभा सच हो जाते हैं घीसू भोजन करने बैठता है कि उसी समय दूसरा महाजन रुपया न रुपया के लिए आ धमकता है। रुपये न मिलने पर वह मोती के हाथ में से चांदी के कड़े खोलकर ले जाता है मोती चिल्लाता रहता है और उसकी ठोली सिर पकड़ कर गिर जाती है। एक ओर निर्धनों में उधार लेने की प्रथा और व्यर्थ आडम्बर में व्यय करने का अंधविश्वास है तो दूसरी ओर महाजनों की साम्राज्य वृत्ति एवं क्रूरता है। दोनों का वास्तविक चित्र इस कहानी में अंकित है।

गरीबों पर धनी वर्ग द्वारा किये जाने वाले अत्याचार का पर्दाफाश करना ही कहानी का अभीष्ट है। इस तरह से रुपये उधार देकर गरीबों का खून जोंक की तरह धनी ब्याज व सूदी के रूप में चूसते हैं उनसे भिड़कते हैं, इसका जीता-जागता चित्र कहानीकार ने हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है।

'मेहमामा' कहानी में मरुदेश में वर्षा के महत्त्व पर शब्द चित्र बनाए गए हैं। वर्षा न होने से मारवाड़ी गरीबों की कैसी दशा हो जाती है, उनको अपने जीवन के प्रति कितनी आशा शेष रहती है आदि के अच्छे चित्रण इस कहानी में उपस्थित हुए हैं। साथ ही वर्षा होने पर बालक 'मेहमामा आयो' कह कर नाच उठते हैं। उनके इस प्रकार के आह्लादित होने का अच्छा चित्र कहानी में उपस्थित किया गया है।

नरमेध कहानी आज के युग में भी लकीर के फकीर बने हुए उन मध्यमवर्गीय बुद्धिजीवियों पर जो समाज में थोथी शान रखने के लिए मृतक भोज आदि को महत्ता प्रदान कर अपना सर्वस्व लुटा देते हैं, व्यंग्य करती है। कहानी का शीर्षक व्यंग्यात्मक ही है—वस्तुतः मृतक भोज (ओसर) अन्नमेध नहीं अपितु नरमेध ही है क्योंकि गरीबों को इसके लिए अपने आप को बेच देना पड़ता है।

'भाठो' कहानी में नारी समाज पर किये जाने वाले अत्याचारों को दर्शाया गया है तो 'गाय' कहानी में उन व्यक्तियों पर करारा व्यंग्य है जिनका सिद्धान्त 'दूझी गाय गुरां न दीजै' अर्थात् जब गाय दूध देती है तब तक उसका चारा पानी करते हैं परन्तु बूढ़ी हो जाने पर पुण्य के रूप में दान कर देते हैं। 'कलम रा मान' का तो शीर्षक ही इस विषय पर प्रकाश डाल रहा है जिसमें थोथी प्रतिष्ठा के लिए मध्यमवर्गीय गृहस्थ निकृष्ट उपाय आदि का विवेचन है। अहानदूबी कहानी का विशेष महत्त्व है। बीकानेरी

पवि मुखि हरिनाम प्रणंता,
सुरताय मानव तण सुहाय । (८३)

वहिलउ दयसण हुवइ विगु मर,
असउ छ वही पछी उपव ॥ (६२)

चिरन्तन मूल्या की प्रतिष्ठा की ओर भी कवि की दृष्टि रही है । सज्जन शंसन व खल निन्दा के माध्यम से कवि ने यह स्पष्ट किया है कि अन्त में सत्य की ही विजय होती है । दक्ष मदमर्दन तथा तारकासुर विनाश अकारण ही नहीं हुए है अपितु व्यंजित करते है कि अहं अधिक दिन टिकने वाला नहीं होता ।

चरित्र चित्रण की दृष्टि से पात्रों को सुर, असुर एवं मानवीय कोटियों में बाँटा जा सकता है । शिव काव्य के नायक हैं । कवि ने उनको परब्रह्म और मानव दोनों रूपों में देखा है । परब्रह्म रूप में वे सगुण भी हैं और निर्गुण भी । उनका सगुण रूप विराट एवं व्यापक है —

एकी मई रोम ऊपरइ ईसर,
माडिया कोट उन्नत ब्रहमड ।
सायर सात दीसइ परदन्सिह,
ईश्वर जा म बइ धजमध ॥

मानव रूप मे वे उदार दानी, हितैषी और प्रेमी हैं । प्रसंगवाल में सर्व रंजक हैं तो लोकाचार में सबको मुग्ध करने वाले किन्तु यह स्मरणीय है कि जहाँ जहाँ शिव के मानवत्व का निदर्शन कवि ने किया है वहाँ भी वह ईश्वरत्व से परिवेष्ठित है । यही कारण है कि मानव लीला प्रसंग में भी कवि बार-बार ईश्वरीय संकेत देता रहता है—

(क) प्रभु थ गणावती पधारउ आठे पहर लगन अछइ । (११२)
(ख) करकन्या विहे घातिया मांनद, वेइगारौं बरसारा थाल । (२८१)
(ग) कहइ सती प्रभु प्रगट करि सिगलउ हि देखइ ससार । (१५८)

वेलि का प्रमुख रस संयोग शृंगार है । वीर रस एवं अन्य रसों की भी विरल व्यंजना प्रसगानुकूल हुई है । सती और पार्वती के विवाह वर्णना में

संयोग पक्ष की सुंदर व्यंजना देखने को मिलती है । यथा—

> प्रीतम रइ कारण पारवती, राखियउ जाणै आभरस
> भींडियउ उर ऊपर कांचूभर, क्सण रेसम तणा क्स ॥
>
> अणीयाला नयण आंजिया अंजण काजल रेख सुरेख करि
> इद्र तणइ ग्नि मूंठ अपूठी, भलका नांखइ वाम भर ॥ (३३७)

भाव-पक्ष के समान प्रस्तुत रचना का कला-पक्ष भी परिपुष्ट है । इसमें रचनाकार के काव्य कौशल एवं सृजनात्मक प्रतिभा के दर्शन होते हैं । वर्णन क्षमता चित्रोपमता और साजसज्जा को देखते हुए कवि के अद्भुत कौशल की प्रशंसा करनी पडती है ।

काव्य की भाषा विशुद्ध डिंगल है । आद्यंत भाषा भावानुकूल ही रही है । भक्ति प्रसंग में शिव की सुषमा, शृंगार में पार्वती का लास्य और युद्ध वर्णन में शिव ताण्डवनतन प्रकेप उद्धरणीय है ।

वेलि में अलंकारों का प्रचुर प्रयोग हुआ है । शब्दालंकारों में वयण सगाई के साधारण व असाधारण प्रयोगों के साथ ही साथ अनुप्रास, यमक, श्लेष आदि का प्रयोग हुआ है । एक दो उदाहरण देखिए —

(क) वयण सगाई साधारण — करा प्रणाम सजोडिकर । (१)
(ख) वयण सगाई असाधारण — पग कमल विचइ पदम विराजइ । (११)
(ग) अनुप्रास — दीनदयाल ज्या दाखिजइ । (१)
(घ) यमक — विकता कु भनि कु म वाकारद (१६५)
(ङ) श्लेष — हाक ममाली उडीयइ हम (१८७)

अर्थालंकारों में सर्वाधिक प्रयोग उत्प्रेक्षा का हुआ है फिर उपमा का तदनंतर रूपक का । अतिशयोक्ति, उल्लेख भ्रांतिमान, संदेह, अपह्नुति आदि अलंकार भी यथा स्थान प्रयुक्त हुए हैं ।

छंदों में छोटा साणोर के भेद वेलियो और सुद्ध साणोर का प्रयोग हुआ है—

धवँ माता भ्राता विन्हे धेन धारा,
वहे आज ते नागणी मुझ वारा।
मुरभी तणी नागणी ऊव सवा,
गलं अघ ओघां सुरी सेह गेवा ॥

यद्यपि वण्य विषय-वस्तु के आधार पर 'नागदमण' एक वीर रसान्वित खड काव्य ही निर्णीत होता है परन्तु कवि के मूल मतव्यानुसार यह कृति भक्ति रसान्वित ही मानी जायगी। वष्णव भक्त होने के कारण वष्णव सम्प्रदाय की अष्ट प्रहरी सेवा को भी नागदमणकार ने अपनी कृति म व्याख्यायित किया है। विप्रलम्भ भाव की व्यजना काव्य म अत्यधिक प्रभावोत्पादक बन पडी है। यथा

सुण्यो वात आधात माता सनेही,
जसोदा हुवी कदली गब्भ जेही।
सथा है सखी लार हालो सयाणी
रहावी विचाल थवी नन्द राणी ॥

बिहू लोचन नीर धारा बहती,
कनयो कनयो यशोदा बहती।
कालिंदी तणी आई लाट ॥ कोठ
गयो जाणि चितामणि रक गाठ ॥

कवि कृत युद्ध-वर्णन भी बडा सजीव बन पडा है। युद्ध वर्णन करते हुए जिन शस्त्रास्त्रों की परिगणना कवि ने की है वे १७ वी शताब्दी म प्रचलित युद्ध के शस्त्रास्त्रों की ओर इगित करते हैं—

फिरें ढवरो सग नाही फरस्सी कड चौत कट्टार कस्सी न कस्सी।
टकारी न भारी न खढार टोकी पायण न वाण न कमाणखानी ॥
न फेरी न भेरी न निसाण नद्दा, रिपू तर वाज न गाज सद्दा।

'नागदमण' म सवाद सौष्ठव एव शब्द चित्रा की योजना बडी सफल बन पडी है। नागदमण म विषय वर्णन की जो शैली कवि ने अपनाई है उसम इसकी विशेषता अधिक बढ गई है। कवि न कृष्ण की बाल-लीला का वर्णन,

गेगरा के साथ सवाद तथा वानीय मदन का सजीव चित्रण उपस्थित किया है।[१] मनोहर गजी की सवाद योजना के सफल निर्वाह का एक उदाहरण द्रष्टव्य है–

बठा दूत आयो अठै काज केहा,
यहा भूलियो आपरो मारग गेहा।

ईश्वर उत्तर देत है–

भलो नागणी नाविवो राह भूलो,
दवा आपरी लाज लीधो दकूलो ॥

इस प्रकार एक ही पद्य में प्रश्न, उत्तर, प्रत्युत्तर कवि की सफल सवाद योजना के परिचायक हैं। डॉ० दीक्षित लिखते है नागदमण का विशेष महत्व उसके वर्णना और सवादों के कारण है। ये बहुत ही पुष्ट और सजीव बन पडे हैं वर्णन एस हैं कि जिनसे सारा का सारा दृश्य अपने आस पास के वातावरण के साथ साकार हो जाता है।[२]

चित्रोपमता भी इस काव्य की अपनी विशेषता है। इस काव्य का प्रारम्भ भी मगलाचरण के पश्चात् शब्द–चित्र से ही होता है। नीचे की पंक्तियों म माता यशोदा द्वारा कृष्ण को जगाने, दधिमथन करने तथा मक्खन मागने आदि अनेक क्रियाओं के सजीव शब्द–चित्र हैं—

विहाणू नयो नाथ जागौ वहेला,
हुया दोहिवा धेनु, गोवाल हेला।
जगावै जसोदा यदुनाथ जागै,
मही माट घूमै मखैनीत मांगै ॥

---

१ श्री सीता राम जी लालस राजस्थानी सबदकोस भाग १ (भूमिका) पृ० १६४

२ स० डॉ० आनन्द प्रकाश दीक्षित बेलि क्रिसन रुकमणी री (भूमिका) पृ० ३५

'नागदमण' की भाषा सत्रहवीं शताब्दी की प्रचलित साहित्यिक भाषा डिंगल है। श्री मेनारिया जी ने 'नागदमण' की चर्चा करते हुए इसकी भाषा पर गुजराती का प्रभाव स्वीकार किया है तथा कवि का काठियावाड़ी होना इसका कारण माना है।[1] किन्तु ग्रन्थ के सम्पादक इसकी भाषा शुद्ध डिंगल मानते हैं।[2] अपने मत के समर्थन में उनका कथन है कि यह तो निर्विवाद सिद्ध हो चुका है कि गुजरात तथा मारवाड़ अथवा पश्चिमी राजस्थान की भाषा सोलहवीं शताब्दी ईस्वी तक थी।[3] तब इसी अवधि के आसपास की रचना पर गुजराती के प्रभाव का प्रश्न ही नहीं उठता। पुनः सम्पादक महोदय लिखते हैं– हाँ प्रकाशित ग्रन्थ में भाषा के गुजरातीकरण की प्रवृत्ति लक्षित होती है यह दूसरी बात है।[4] ग्रन्थ की भूमिका में लेखक ने भी इसकी भाषा डिंगल स्वीकार करते हुए लिखा है। 'वस्तुतः डिंगल भाषा का यह स्वरूप बहुत ही प्रौढ़ नियमित, शिष्ट एवं व्याकरण शास्त्र सम्मत है।'[5]

काव्य की भाषा में अलंकार स्वतः प्रसूत हैं। शब्दालंकारों में वयण सगाई के साथ ही साथ अनुप्रास पुनरुक्ति वक्रोक्ति आदि शब्दालंकारों तथा उपमा रूपक, अतिशयोक्ति व्याजस्तुति आदि अर्थालंकारों का प्रयोग हुआ है।

'नागदमण' काव्य में प्रारम्भ के चार दोहा तथा अन्त के एक कलश के अतिरिक्त सर्वत्र भुजंगप्रयात छन्द का व्यवहार हुआ है। भुजंगप्रयात प्रसिद्ध समवर्णिक छन्द है जिसमें चार यगण होते हैं।[6]

१— श्री मोतीलाल मेनारिया — राजस्थानी भाषा और साहित्य पृष्ठ १८६
२— सं० मूलचन्द प्राणेश — नागदमण (प्रथम खण्ड) पृष्ठ २२
३— डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी — राजस्थानी भाषा पृष्ठ ३६
४— डॉ० हीरालाल माहेश्वरी — राजस्थानी भाषा और साहित्य पृष्ठ १५८
५— श्री रामेश्वरप्रसाद पाडिया — नागदमण (सं मूलचन्द प्राणेश) भूमिका पृ ११
६— (अ) कालिदास — श्रुतबोध
(आ) च्यार यगण पद प्रत चवाँ छन्द भुजंगप्रयात।
— आढ़ा किसना जी रघुवरजस प्रकास पृष्ठ १३६

सारांशतः 'नागदमण' कलात्मक गरिमा एवं संदेश की महत्ता दोनों ही दृष्टियों से राजस्थानी काव्य परम्परा की गौरवपूर्ण कृति कही जा सकती है ।

श्रीमद् गोस्वामी तुलसीदासजी के काव्य का महत्त्व

इस पुस्तक का प्रकाशन तुलसी की 'त्रिशतवार्षिकी' (३००) पर सं० १९८० (१९२३ सन्) में हुआ है। ग्रंथ में अति संक्षेप में महाकवि तुलसी के इतिवृत्त एवं व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला गया है। तुलसी के व्यक्तित्व को प्रस्तुत करने में अंतःसाक्ष्य का आधार माना गया है। उदाहरण के लिए बचपन में ही माता पिता की मृत्यु का बतलाने के लिए कवितावली, विनय-पत्रिका व मानस आदि के उद्धरण प्रस्तुत किए गये हैं।[1]

पुस्तक का मुख्य उद्देश्य मानस का धार्मिक एवं साहित्यिक महत्त्व प्रतिपादन है। प्रकाशक ने तुलसी एवं 'मानस' की महत्ता प्रतिपादित करते हुए लिखा है—

'सूरदास की कविता में मधुरता की कमी नहीं, केशवदास में पांडित्य की कमी नहीं और बिहारी का अर्थ गौरव और कहीं मिलता ही नहीं। फिर क्या कारण है कि तुलसी दास के सामने इन कवियों की उपेक्षा की जाती है। विद्वानों के मत से तुलसीदास की सब प्रियता और श्रेष्ठता का कारण उनकी चरित्र चित्रण पटुता और मानवीय मनोविकारों को एक साथ समझने और उन्हें व्यक्त करने की कुशलता है। उनके पात्र अवतारी जीव होने पर भी स्वर्ग के निवासी नहीं उनके भाव, उनके चरित्र उनकी भावना सब मानवीय है। यही कारण है कि वह लोगों के मन में चुभ जाते हैं उन्हें प्रिय लगते हैं और उन पर अपना प्रभाव डालते हैं।——कविता की दृष्टि से देखा जाय तो तुलसी की रामायण उपमाओं और रूपकों का भण्डार है। बहुधा कवि सब प्रियता प्राप्त करने के लालच में पड़कर अपने पाठकों में कुरुचि उत्पन्न करते हैं परन्तु गोस्वामी जी ने सदैव सुरुचि उत्पन्न करते सदुपदेश देते और भूले हुए लोगों को सन्मार्ग पर

१ श्रीमद् गोस्वामी तुलसीदास जी के काव्य का महत्त्व पृ० ४

दान मे ही अपनी कविता का सदुपयोग किया है। [1]

पुस्तक के अन्त में 'मानस' के सदुपदेश परक दोहे व चौपाइयां एकत्र की गई हैं।

कवितोपहार

'कवितोपहार' में तत्कालीन बीकानेर के लब्धप्रतिष्ठित कवियों की कविताओं का संग्रह है। कविता-संग्रह में बादशाह हुसन 'राना', श्री बाला प्रसाद जी श्री जय प्रकाशचन्द्र जी, श्री मोउलालजी गोस्वामी, श्री सूर्य नारायणजी ओझा, श्री विद्याधर जी शास्त्री, श्री नन्दलाल जी, श्री फाल्गुन जी गोस्वामी आदि की रचनाएं संकलित हैं।

बादशाह हुसैन की १६ पृष्ठों की लम्बी कविता में तुलसी को विश्व कवियों में मूर्धन्य बताया है। यह कविता उर्दू की रचन-शैली में लिखी गई है। यथा–

आप जो चाहे उठाकर देखें असलावी किताब।
हर मुसन्निफ ने किया है, एक मजमू इन्तखाब ॥
लेकिन इस शातिरका हर घर में है फरजी कामयाब।
बज्म इसकी बेनजीर और रज्म इसकी लाजवाब ॥
इसके मजमू फूल के से और चन्दन का कलम।
ऐसा होमर' का कलम ऐसा न मिल्टन' का कलम ॥
कोई फाजिल सिर्फ निख देता हैं सारी दास्ता।
कोई करता है फकत हुस्नो मोहब्बत की अया ॥
कोई रखता है तसव्वुफ या तसव्वुफरी जबा।
आप रामायण को देखें इसमें है हर यक बया ॥[2]

१— श्रीमद् गोस्वामी तुलसीदासजी के काव्य का महत्व — पृष्ठ ६.१०

२— कवितोपहार — पृष्ठ १४

संग्रह में संग्रहित बाला प्रसाद जी की कविता को पढ़कर निराला जी के 'तुलसीदास' का स्मरण हो आता है। बाला प्रसाद जी ने लिखा है—

> अंधकार से पूर्ण नील नभ मेघाडम्बर छाया है,
> चमक दमक घनघोर गरज कर घटाटोप गहराया है।
> इधर अपूर्व प्रकाश पूर्व ने कैसा यह प्रकटाया है।
> जलद पटल को फाड़ अभी यह निकल दिवाकर आया है।[1]

एकल गिड दाढाले री वात

राजस्थान के गद्य साहित्य में कथा विधा प्रभूत मात्रा में पाई जाती है जिसके अन्तर्गत धर्म, नीति, वीरता, प्रेम, राजा-प्रजा, पशु-पक्षी देवता, भूत-प्रेत, चोर-डाकू आदि सदर्भों पर आधारित, सहस्रों वार्ताएं मिलती हैं। आलोच्य कृति 'एकल गिड दाढ़ाले री वात' एक प्रतीकात्मक वीर कथा है। इस प्रदेश का शौर्य पूर्ण इतिहास बतलाता है कि वीरता ओज और तेजस्विता इस धरती के नरवीरों में ही नहीं अपितु पशु वीरो मे भी है। इस कथा के प्रमुख पात्र दाढाला सूअर' पर मध्य युगीन राजपूतों के शौर्य एवं शील का प्रतिरोपण किया गया है और स्त्री पात्र 'भूडण' पर भी एक वीरांगना का वीरत्वपूर्ण जीवन और सतीत्व के पालन का दायित्व प्रतिरोपित किया गया है। प्रस्तुत कथा में पूरा परिवार का परिवार वीर भावनाओं का पोषक और वाहक है।

डॉ० मनोहर शर्मा ने भूमिका में इस कथा को भी एक पुराण कथा का राजस्थानी रूप माना है। पद्म पुराण के भूमि खंड मे इक्ष्वाकु और शूकर-शूकरी की जो कथा है उसी को किसी अज्ञातनामा रचनाकार ने मध्यकालीन राजस्थान के जीवन एवं परिवेश पर आधृत करके कल्पना शक्ति का प्रयोग करते हुए वीरत्वपूर्ण जीवन का यथार्थ रूप उद्घाटित किया है।

१— कवितोपहार पृष्ठ १८

तुलनीय —

> भारत के नभ का प्रभापूर्य अस्तमित आज रे
> शीतलच्छाय दिग्मंडल। (निराला कृत तुलसीदास)

वस्तु और अभिव्यक्ति दोनों की दृष्टि से यह कथा प्रेरणाप्रद एवं रोचक है। कथा ११ उपखंडों में विभक्त है। कथा का प्रारम्भ मध्य और अंत औपन्यासिक कथा संगठन और महाकाव्योचित प्रवाह से पूर्ण है। जहाँ तक चित्रण का संबंध है राजस्थान की भौगोलिक और सांस्कृतिक विशेषताओं का उद्घाटन हुआ है, इस लिए कथा का आरम्भ आबू के माहात्म्य के साथ होता है। वातावरण को प्रस्तुत करने के लिए गद्य और पद्य दोनों को माध्यम बनाया गया है। इस वर्णन प्रधान कथा में सिरोही का वर्णन युद्ध वर्णन राजा का रोज मोठ सभ्य-वर्णन तथा अपने पुरुषार्थ के बल पर लड़ने वाले वीर सेनानी के शौर्य एवं पराक्रम से संबंधित इतने सजीव और चित्रोपम हैं कि उनसे कथा-प्रसंगों की मार्मिकता बढ़ गई है और लोक जीवन मुखरित हो गया है। कथा की सरसता की वृद्धि में सुभाषित शैली के दोहे महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुए हैं। जैसे–

(क) सूरां नरां ना दिन घटै काले केहरि वाह।
जल पूरया पर्वाण ज्यू, गल्ला अबरियाह ॥

(ख) सतियां बहू का ससतियां जल पीव की लार।
सत जिणाही का जाणिज, जम समालि सभालि ॥

राजस्थान के वीर युद्ध क्षेत्र में मृत्यु का वरण प्रसन्नतापूर्वक करते रहे हैं और यहाँ की वीरांगनाएं आग की लपटों को गंगा की लहरों के समान आलिंगन करती रही हैं।

प्रस्तुत कथा की भाषा परिमार्जित राजस्थानी है। भाषा में प्रसंगानुसार चक्रात्मता सूक्तियों और मुहावरों का भी समुचित प्रयोग हुआ है। विशिष्ट व स्थानीय शब्दावली को पुस्तक के अन्त में कोष के रूप में संकलित कर लिया गया है। कथा के हिन्दी रूपान्तर में मूल भाव की सफल व्यंजना हुई है। यथा स्थान प्रयुक्त ठेठ राजस्थानी के शब्दों से राजस्थानी लोक जीवन और संस्कृति का अंकन अत्यन्त भव्य बन पड़ा है।

सुलगते पिंड

'सुलगते पिण्ड' में श्री हरीश भादानी की कविताएँ संगृहीत हैं। सभी कविताएँ नई कविता शैली की हैं। कविताओं में आज के समाज की मान्यताओं, नीतियों का भंडाफोड़ करते हुए कवि ने यथार्थ रूप में समाज की विषम परिस्थितियों का चित्र उपस्थित किया है। एक ओर कवि ने भूख और अभावों से संघर्ष के साथ अर्थ-हीन परम्पराओं का चित्र उपस्थित किया है, छूटे जा रहे अतीत के प्रति विद्रोह और आक्रोश प्रकट किया है तो दूसरी ओर नया जीवन जीने की तीव्र एषणा भी कवि ने प्रकट की है, जो असमर्थता का पाठ न पढ़ाकर जीवन की नयी राह भी बतलाती है।

'सुलगते पिण्ड' की कविताएँ यथार्थ को नग्न रूप में हमारे समक्ष प्रस्तुत करती हैं। उदाहरणार्थ —

दोस्त,
ऐसी जिन्दगी
जीने गए होते तो क्या होता ?
धौंकनी से साँस लेते
साँझ की अंगीठी से सुलगते
और फूटी थालियों से चिपके
रोटी राम जपते
धिसटते-चौंधे मदारी देख
धरती के बिछौने पर
आकाश ओढ़ सोगए होते तो क्या होता ? (पृष्ठ ७४)

कवि हमें सन्देश देता है, क्या हो गया यदि सर्वस्व लुट गया धन वैभव चिरन्तन काल से नश्वर हो रहे हैं स्वर्ग भी। इमान और सत्यता ही जीवन का सच्चा सम्बल है और प्राणों का आधार। कवि के अनुसार —

पास जो भी था
सभी कुछ दे दिया
अपनों परायों को—
केवल एक ही रखा ईमान
और वह भी जीने के लिए । (पृष्ठ ८४)

आज का समाज मानवता का अभिशाप है । पूंजीपति अत्याचार में बाज नहीं आते और गरीब भूख से सड़ जाते [redacted] । समाज की विषमता उसके लिए रोग है रोग भी ऐसा वैसा नहीं भयंकर नासूर सा । कवि का हृदय विकल हो इसी रोगी समाज को देख गर्भस्थ भ्रूणों को भी चेतावनी दे रहा है —

ओ
हम से ही गर्भस्थ पिण्डो ! भ्रूणो !
जन्म लिया चाहने वाले हम रूपो !
ठहरो !
अभी न जन्मो
सारी धरती दुखी हुई है नासूरों से
कुनहे नासूरों से
आज हमारा
पाँव-पाँव भीग उठता है
रिस रिस बहती हुई पीप से
दागी हैं दिवार, छतें कंगूर आंगन
इसलिए सुनो
तुम अभी न जन्मो । (पृष्ठ १०२)

आज के प्राणी का जन्म कवि की दृष्टि में समाज की विषमता के कारण अस्तित्व हीन ही है । कवि 'हमारे जन्म से अधिक अच्छा' कविता में आक्रोश भरे शब्दों में कहता है —

जमे हम
कि इस सगी की भोग्यामा,
भोगी पिता के
सस्कारो को हम बन खादें
अतीत की दूबड, पठारो को तराशें
साँवली भूरी माटी बिछाए
ताजा हसरतों को बाजने
पमाना सीखने को जमे हम। (पृष्ठ १०८)

समष्टि रूप म सुलगते पिंड कविता सग्रह कवि की पीडा और परिवेश के घात प्रतिघातो से बनी मनस्थिति की सच्ची अभिव्यक्ति है। कवि का यह मन्तव्य वस्तुत सत्य है कि 'सुलगते पिण्ड की कविताओ मे निकट–दूर के कई चेहरे हैं अतर बाहर की कई स्थितिया हैं जिनमे मुझे जीना पडा है और अनुभूतियो ने सहज शिल्प की अभिव्यक्ति ली है।

एक उजली नजर की सूई

राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर द्वारा एक हजार रुपयो स पुरस्कृत इस कृति मे श्री हरीश भादानी के ३१ गीतो का सग्रह किया गया है। इस कृति के माध्यम से कवि ने गीत व कविता को लेकर चलाए जा रहे विवाद स अलग दोनो के मध्य पनी हुई दूरी को पाटना चाहा है। कवि की निजी मान्यता है कि परिवेश के साथ रागात्मक स्थिति ही गीत को जन्म देती है। आत्माभ्य सजन का कवि अपने परिवेश से किस स्तर पर जुडता है और सवेदना को कितनी रागात्मकता प्रदान करता है इसके लिए निम्नांकित उदाहरण द्रष्टव्य है–

सीटियां से सास भर कर भागते
बाजार मीलों
दफ्तरो को रात के मुर्दे,
देखती ठंडी पुतलियां

आदमी अजनबी आदमी के लिए
तुम्ह मन खोलकर मिलने बुलाया है । (पष्ठ ११)

इसी सदभ म एक और उदाहरण द्रष्टव्य है–

फेंक गया है
बरफ छनो स
कोई मूरख मौसम
पहले अपने हो आगन से
आग उठाओ तो जानू ! (पष्ठ १२)

उपयु क्त पत्तिया म आज के महानगरीय जीवन की प्रतिस्पर्धात्मक स्थिति को रागात्मिकता के साथ जीने के लिए प्रोत्साहित कवि न किया है । परिणामा से ऊब और निराशा की भावना के साथ यह सब कुछ बदलकर अनुकूल बनान की भावना भी अभिव्यक्त हुई है । इस रूप म गीत का नया सवेदनास्तर भी मिला है । गीत और कविता के बीच कोई कठोर विभाजक रेखा न खीचने हुए भी कवि की ये रचनाए नव गीत अथवा नयी कविता के गीता की श्रेणी मे आ जाती है । यहा यह उल्लेख करना अनुचित नही हागा कि गीत और कविता क नाम पर उठाए जा रहे विवाद से इन दोनो विधाआ म कुछ ऐसा विरोध नही जुड सका है कि जिससे गीत और कविता एक दूसर स भिन्न देखी जा सके । कवि की धारणा है कि सभव है भविष्य म विशेष भगिमाआ का रचनाआ का प्राचुय हो और तब काव्य सजन के किसी एक पक्ष पर अतिरिक्त विशषण लगाना पडे । यह दूर की बात होगी अभी ता हम इतना ही देखना है कि परिवर्तित सवेदनस्तर, भाषा और शिल्प के नवीन रूपा म कितना और क्या कुछ आ पाया है ।

एक टुकडा धूप

डॉ० गापाल कृष्ण सराफ रचित ५१ कविताए एक टुकडा धूप कविता सग्रह म सगृहीत हैं । सभी कविताए महानगरीय जीवन की व्यवस्था विषमता और आज के हताश व्यक्ति का सही चित्र प्रस्तुत करती है । नेत्र

विशेषज्ञ डा० सराफ ने अपने ही उपकरणो को कविता की भाषा म ढालने का प्रयत्न किया है । शल्य चिकित्सा के जो उपकरण केवल वजन और धातु की वस्तुमात्र का अर्थ देते हैं वे ही 'एक टुकडा धूप' की कविताओ मे सवेदन स्तर के निकट आते हुए लगते हैं । उदाहरण द्रष्टव्य है —

जब मैं अपने मुह पर
कपडे का मास्क बाधकर
और हाथो मे चाकू लेकर
तुम्हारी आखें देखता हूँ,
तब मुझे
तुम्हारी आखें
एक यत्र जैसी दीखती हैं,
जिसके कुछ पुर्जे खराब हो गए हैं
और मैं काट कर ठीक कर रहा हूँ । (पृष्ठ १०)

डॉ० कवि आँख को चीर फाड सकता ह उसकी नस-नस से परिचित है फिर भी वह हताश है क्योंकि आँखा के ही माध्यम से प्रकट होने वाली भावनाएँ स्वरूपाबद्ध होकर उसे नही दिखाई देती । इसीलिए कवि हतप्रभ होकर कहता है —

पेंटास्कोप की सहायता से
एक एक नस
और
छोटी छोटी रक्त शिराओ को देखता हू
कण-कण म प्रवेश करता हूँ
फिर भी
आँखो के भीतर भरी भावनाएँ
नही दिखती-
व्यर्थ हो जाती है
मेरे पेंटास्कोप की तीखी रोशनी ।

कवि आज की व्यवस्था पर असंतोष प्रकट करते हुए कहता है कि आज की व्यवस्था भय की व्यवस्था है। भय से आक्रान्त होकर ही प्राणी उसे पूजता है अथवा नहीं। कवि कहता है—

हमारी बनाई हुई भूखी व्यवस्था
उसकी आड़ में छिपा ईश्वर का भय
ईश्वर का भय
देता मृत्यु!
मृत्यु व्यवस्था की देन!
किसी ईश्वर का नाम नहीं!! (पृ० ४५)

कवि की दृष्टि में आज के युग में आत्मीयता का तो लोप ही चुका है। इसीलिए वे जीवन के प्रति आक्रोश प्रकट करते हुए कहते हैं—

जीता हूँ जीने के लिए
आत्मीयता हीन लोगों के साथ
जो भीतर से खोखले
और भावना हीन हैं। (पृ० २७)

कवि की कविता कहीं कहीं तो इतनी यथार्थ बन पड़ी है कि सराहना किए बिना नहीं रहा जा सकता। एक उदाहरण देखिए जिसमें आज के व्यक्तियों के भय को स्पष्ट करते हुए कहा है कि उनका भय भी सकारण एवं स्वार्थ के कारण ही है—

सब्जी भूनते हैं
रोटियाँ बनते हैं
अमीर मिजाज के साहब भयभीत हैं—
कहीं खानसामा गड़बड़ न करदे।

एक उदाहरण देखिए जिसमें झूठी सहानुभूति करने वालों पर व्यंग्य कसा गया है—

सहानुभूति का ढकोसला
वही तो करते हैं
जो स्वस्थ हैं समर्थ हैं सुखी हैं।

समष्टि रूप में यही कहा जा सकता है कि 'एक टुकड़ा धूप' का कवि जीवन के सम और विषम दोनों ही पक्षों के चित्र उतारने में सफल हुआ है।

प्रस्तुति

प्रस्तुत कविता संग्रह सन् १९६७ ई० के शिक्षा दिवस पर माध्यमिक शिक्षा विभाग, राजस्थान के लिए वातायन संस्थान द्वारा प्रकाशित किया गया। श्री ज्ञान भारिल्ल व श्री प्रेम सक्सेना द्वारा संपादित इस कविता संग्रह में नये पुराने शिक्षक कवियों की रचनाएं संकलित हैं। इसमें इतिवृत्तात्मक शैली की कविता से लेकर नयी कविता शैली तक की कविताएं संकलित हैं। पुरानी पीढ़ी के श्री चन्द्रमौलि भी इसमें हैं तो नयी कविता के श्री भगवतीलाल व्यास, राजानंद भटनागर विपिनजारोली आदि भी। इस प्रकार एक ही स्थान पर अनेक नये पुराने हस्ताक्षरों को एकत्र करने में संपादकों ने अच्छी सूझ-बूझ का परिचय दिया है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं—

श्री चन्द्रमौलि की कविता भारतीयों का निद्रात्याग कर देश के निर्माण की भावना का पाठ पढ़ाती है—

सफल हो जन-जन का अभियान।
देश का करना है निर्माण॥ (पृ० ९५)

गीत धारा के कवि श्री रामनरेश सोनी की ये पंक्तियाँ भी उद्धरणीय

किसने मानव को बना दिया हिंसक बर्बर
जो मानव की छाती का लहू पीता है
विश्वास प्रेम के भव्य भवन में आग लगा
क्यों अविश्वास का मूर्त रूप बन जीता है। (पृ० ८८)

१६– जिनराज सूरि कृति कुसुमांजलि	अगरचन्द नाहटा
२०– जिनहर्ष-ग्रंथावली	अगरचन्द नाहटा
२१– जीव दया प्रकरण	अगरचन्द नाहटा
२२– जैन साहित्य संशोधक	
२३– डिंगल गीत	रावत सारस्वत
२४– तुलसीदास	महाकवि निराला
२५– तुलसी के काव्य गौरव का महत्त्व	नागरी भंडार, बीकानेर में प्र
२६– दम्पति-विनोद	मथेन जोशी राय
२७– दयाल दास री ख्यात	डॉ० दशरथ शर्मा
२८– दलपत-विलास	रावत सारस्वत
२९– दस दोष	नाथूराम सक्सेना
३०– धर्मवर्द्धन ग्रंथावली	अगरचन्द नाहटा
३१– नागदमण	म० मूलचन्द 'प्राणेश'
३२– नागदमण	म० हमीरदान
३३– परमार वंश दर्पण	डॉ० दशरथ शर्मा
३४– पद्मिनी चरित्र चौपाई	भंवरलाल नाहटा
३५– परदेसी रै गोरडी	मूलचन्द प्राणेश
३६– पीरदान ग्रंथावली	अगरचन्द नाहटा
३७– प्रस्तुति	स प्रेम सक्सेना व ज्ञान भारिल्ल
३८– प्राचीन काव्यों की रूप परम्परा	अगरचन्द नाहटा
३९– बरसगांठ	मुरलीधर व्यास
४० बेलि क्रिसन रुकमणी री	स डा आनन्द प्रकाश दीक्षित
४१– बीकानेर जैन लेख-संग्रह	अगरचन्द भंवरलाल नाहटा
४२– बीकानेर परिचय	गौरी शंकर आचार्य
४३– बीकानेर राज्य का इतिहास	गौरीशंकर हीराचन्द ओझा

१९- जिनराज सूरि कृति कुसुमांजलि	अगरचन्द नाहटा
२०- जिनहर्ष-ग्रंथावली	अगरचन्द नाहटा
२१- जीव दया प्रकरण	अगरचन्द नाहटा
२२- जैन साहित्य संशोधक	
२३- ढ़ोला गीत	रावत सारस्वत
२४- तुलसीदास	महाकवि निराला
२५- तुलना व काव्य वस्तु का महत्व	नागरी भंडार, बीकानेर से प्र
२६- दम्पति-विनोद	मथेन जोगी राय
२७- दयाल दास री ख्यात	डॉ० दशरथ शर्मा
२८- दलपत-विलास	रावत सारस्वत
२९- दस दोख	नानूराम संस्कर्ता
३०- धर्मवर्द्धन ग्रंथावली	अगरचन्द नाहटा
३१- नागदमण	स० मूलचन्द 'प्राणेश'
३२- नागदमण	स० रूपीरमान
३३- परमार वंश दर्पण	डॉ० दशरथ शर्मा
३४- पद्मिनी चरित्र चौपाई	भंवरलाल नाहटा
३५- पदमणी रो गाणो	मूलचन्द प्राणेश
३६- पीरदान ग्रंथावली	अगरचन्द

४४– बीकानेर का राजनतिक विकास व प सधाराम यच	स सत्यकेतु विद्यालंकार
४५– बीकानेर के राज घराने का केन्द्रीय सत्ता से सम्बंध	डॉ. करणीसिंह
४६– भारतीय संस्कृति की रूपरेखा	स० ठाकुर राम सिंह आदि
४७– महादेव पार्वती री वेलि	रावत सारस्वत
४८– वात्याएं	स० प्रेम सक्सेना
४९– राजस्थानी भाषा	सुनीति कुमार चटर्जी
५०– राजस्थानी भाषा और साहित्य	डॉ० हीरालाल माहेश्वरी
५१– राजस्थानी व्याकरण	नरोत्तमदास स्वामी
५२– राजस्थानी साहित्य का इतिहास	पुरुषोत्तम मेनारिया
५३– राजस्थानी भाषा और साहित्य	मोतीलाल मेनारिया
५४– राजस्थानी रा दूहा	नरोत्तमदास स्वामी
५५– राजस्थानी रा प्रतिनिधि कथाकार	मूलचन्द प्राणेश
५६ राजस्थानी रा प्रतिनिधि कवि	मूलचन्द प्राणेश'
५७– राजस्थानी गद्य साहित्य उद्भव और विकास	डॉ० शिव स्वरूप शर्मा 'अचल
५८ राजस्थानी वेलि साहित्य	डॉ० नरेन्द्र भानावत
५९– राजस्थानी साहित्य एक परिचय	नरोत्तमदास स्वामी
६०– राजस्थान रा नीति दूहा	स० मोहनलाल पुरोहित
६१– राजस्थानी प्रेम कथाएं	स० मोहनलाल पुरोहित
६२– राजस्थानी व्रत कथाएं	स० मोहनलाल पुरोहित
६३– राजस्थानी सबद कोस	सीताराम लालस

६४– राजस्थानी साहित्य की गौरवपूर्ण परम्परा — अगरचन्द नाहटा
६५– राजा श्रीपाल और मना सुन्दरी — अगरचन्द भवरलाल नाहटा
६६– रासो साहित्य और पृथ्वीराज रासो — नरोत्तमदास स्वामी
६७– रुक्मणी हरण — पुरुषोत्तम लाल मनारिया
६८– लोक-साहित्य विज्ञान — डॉ० सत्येन्द्र
६९– लोक साहित्य की भूमिका — डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय
७०– वंश भास्कर — सूर्यमल्ल मिश्रण
७१– विनयचन्द्र कृति कुसुमांजलि — अगरचन्द भवरलाल नाहटा
७२– वीर रस रा दूहा — नरोत्तम दास स्वामी
७३– सदयवत्स वीर प्रबंध — डॉ० मजूलाल मजूमदार
७४– समय सुन्दर कृति कुसुमांजलि — सं अगरचन्द भवरलाल नाहटा
७५– समय सुन्दर रास पंचक — सं अगरचन्द भवरलाल नाहटा
७६– सीताराम चौपाई — सं अगरचन्द भवरलाल नाहटा
७७– सुलगते पिण्ड — हरीश भादानी
७८– सूरज कुं डालो — सूर्य शंकर पारीक
७९– सोढी नाथी रा गूढार्थ — हिन्दी विश्वभारती अनुसंधान परिषद्, बीकानेर से प्रकाशित
८०– सती मृगावती — सं० भवरलाल नाहटा
८१– संस्कृत साहित्य का इतिहास — बलदेव उपाध्याय
८२– संस्कृत साहित्य के विकास में बीकानेर क्षेत्र का योगदान (अप्रकाशित शो० प्र०) — डॉ० दिवाकर शर्मा

८३– हरिरस — सं० पिंगलशी भाई पाताभाई

८४– हरिरस — सं० बद्री प्रसाद साकरिया

८५– हमीरायण — सं० भंवरलाल नाहटा

८६– हिन्दी साहित्य का विद्या दान — सं० विश्वनाथ

८७– हिन्द तथा उपाय — मूलचन्द 'प्राणेश'

८८– ज्ञानसार-ग्रंथावली — सं० अगरचन्द भंवरलाल नाहटा

(ग) अंग्रेजी के ग्रंथ

८९ - डिस्क्रिप्टिव कैटलाग ऑफ बार्डिक एण्ड हिस्टोरीकल मैनुस्क्रिप्ट्स (प्रथम भाग) बीकानेर स्टेट — डॉ० एल० पी० तस्सीतोरी

९०- गजेटियर ऑव बीकानेर स्टेट — पी० डब्लू० पॉवलेट

(घ) पत्र-पत्रिकाएँ

१— राजस्थान-भारती
२— वातायन
— जलमभोम
४— विश्वम्भरा
५— शोध-पत्रिका
६— मरु भारती
७— मधुमती